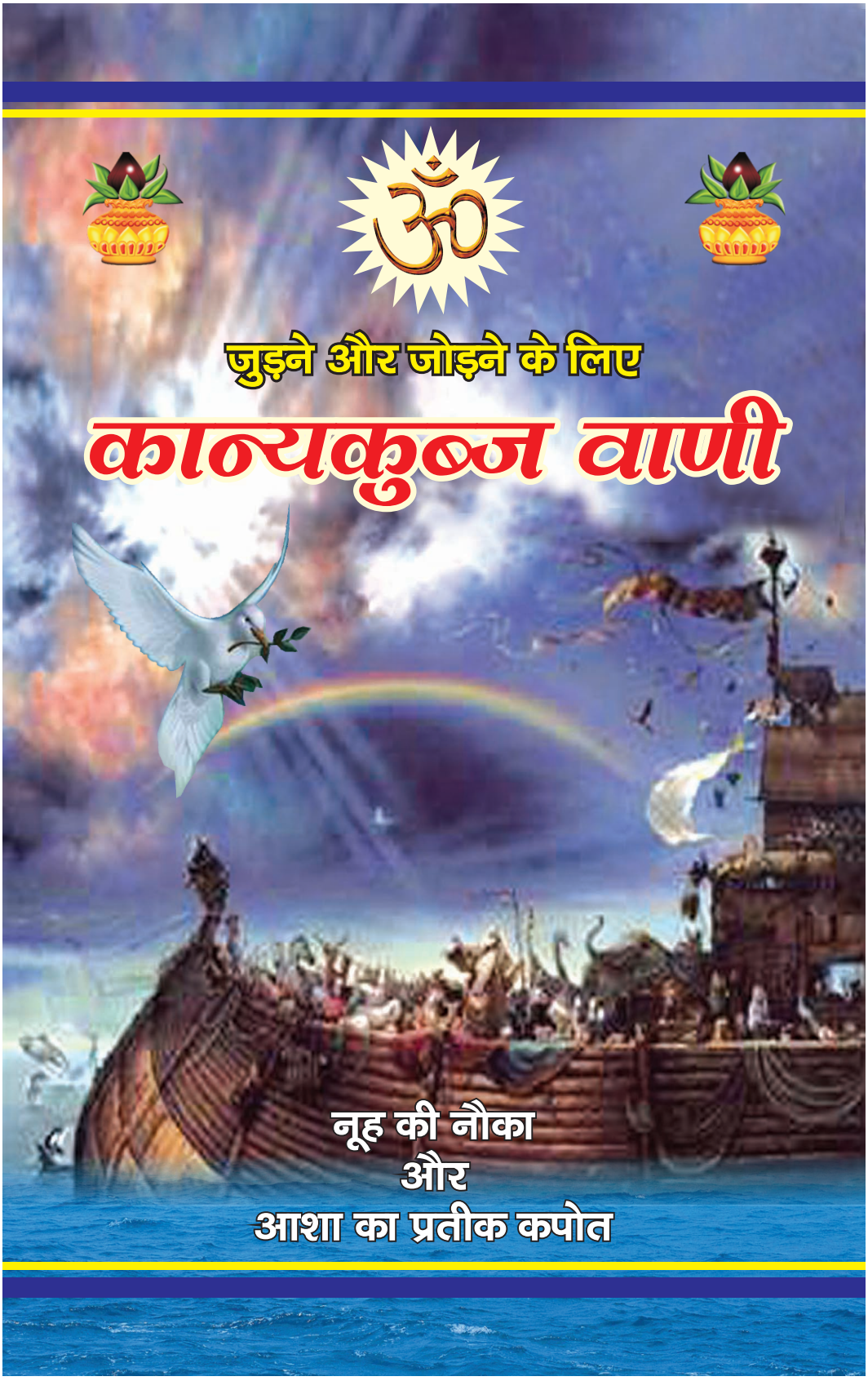

ॐ
जुड़ने और जोड़ने के लिए
कान्यकुब्ज वाणी
नूह की नौका
और
आशा का प्रतीक कपोत

स्वास्थ्य चेकअप कैम्प 18 दिसम्बर 2011

चेस्ट वि ोषज्ञ

आयुर्वेदिक विंग

महिला चिकित्सक

हड्डी विभाग

मेडिकल कैम्प नैमिषारण्य 20 नवम्बर 2011

सर्जन

फिजीि ियन

दय रोग वि ोषज्ञ

अंजनी नंदन

होली मिलन समारोह 2011

मुख्य अतिथि का सम्बोधन

छात्राओं को दी जाने वाली साइकिलें

सारस्वत समाज के अध्यक्ष

सम्मानित लोग

मंचासीन लोगों के साथ पुरस्कत छात्राएँ

पत्रिका के प्रति उत्साह

पत्रिका विमोचन

फुल हाउस

अन्ना के समर्थन में कैंडिल मार्च

नेत्रदान करके दृष्टिहीनों को दुनिया दिखाइये

1. नेत्रदान मरणोपरान्त ही होता है, इसमें केवल पुतली निकाली जाती है। चेहरा खराब नहीं होता।
2. उम्र बाधक नहीं होती है। डायबिटीज, उच्च रक्त चाप, कैटरेक्ट, ग्लोकोमा या रेटीना का रोगी अथवा चश्मा पहनने वाला व्यक्ति भी नेत्रदान कर सकता है।
3. मरणोपरान्त नेत्रदान के लिये आई बैंक से तुरन्त 6 घण्टे के अन्दर सम्पर्क करें।
   - मृत्यु प्रमाण पत्र तैयार रखें। पंखे बन्द कर दें।
   - सम्भव हो तो ए0सी0 चला दें। नेत्रदाता के सिर के नीचे दो तकिये रखें।

सम्पर्क करें:

- **आई बैंक के.जी. मेडिकल कालेज** फोन : 0522–2258827
- **लखनऊ आई बैंक** फोनः 0522–2335122, 2332525 टोल फ्री 1919

Printed by : Printco Printers, 22, Jagat Narain Road, Lucknow. Ph.: 0522-2612978

शक्ति-स्तवन

(१)

तड़ित-विनिन्दक प्रभा है जाकी, तीन नेत्र,
शोभित मयंक-कला जाके शुभ्र भाल है।
चारि भुज राजत, दुकूल दिव्य धारे,
गरे भ्राजत विचित्र मणि-रत्नन की माल है।।
सेवत सदा ही देव-वधू अभय-दायिनीको,
ऐसी मातु सोई हरै विपति उताल है।
आय ताकी शरन अभय हौं सब भाँति अब,
जायो जग नाँहि जो देखावै दृग लाल है।।

(२)

मङ्गलमय सकले कलानि पूर्ण शोभा जामें,
परम अपार प्रभा जगमग जगी रहै।
करिकै सहारो ऐसी पूर्ण को कहो तो कौन,
ऐसो जग जाकी नहि पूर्णता सगी रहै।।
दिव्यहूतें दिव्यतर गुनन प्रभाववारी,
देवीकी दयाकी दृष्टि नित ही पगी रहै।
करुणा की खानि अपनाओ दया आनि जैसे,
धेनुकी वृत्ति वत्स ही पर लगी है।।

रचयिता-
पं० श्रीद्वारकाप्रसाद शुक्ल 'शंकर'
अडिशनल सबजज, गोंडा

''शक्ति अंक कल्याण''
१९३२ में प्रकाशित

विषय सूची

शक्ति स्तवन 1

बड़ों के आशीर्वाद 6–7

कुलगान 80

स्थायी स्तम्भ

आवरण कथा 27

धर्म

चतुःश्लोकी भागवत् 13

सिय सोभा बरनि न जाय 43

गरब तरू भारी 61

स्वास्थ्य

फ्रैक्चर नेक फीमर 34

सर्वाइकल कैंसर 74

साहित्य

महावीर प्रसाद द्विवेदी 28

आ गये फिर 59

रूपसि रूप निहारा होगा 38

संस्मरण

26 जनवरी बयासी वर्ष पहले 9

ड्राइंग रूम वार्ता 47

विज्ञान

अन्तरिक्ष कार्यक्रम के दैनिक उपयोग 39

जीवाष्म (Fossils) 51

विविध

भारत महोत्सव 15

मौलिक चिकित्सा 65

रावणो उवाच 53

Yoga and Uniformed Services 55

बातें करें मगर किससे 68

आभा मंड़ल 72

कान्यकुब्ज कार्यकारिणी 73

श्रद्धांजलि 81

प्रमिला मिश्रा

मान भाई

जी0पी0 मिश्रा

सम्पादकीय

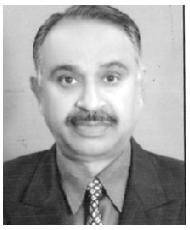

किस्से सभी के पास होते हैं पर ''किस्सागोई'' की कला चुनिन्दा लोगों में ही होती है। यदि आप में है तो हमे लिखे हम उन्हें लोगों तक पहुँचायेगे।

वर्ष २०११ में सभा के उपाध्यक्ष पं० जितेन्द्र कुमार मिश्र का देहावसान हो गया। इसके अलावा हिन्दी साहित्य के दो प्रख्यात साहित्कार पद्म विभूषण पं० श्रीलाल शुक्ल एवं पं० बालकृष्ण जी मिश्र इस दुनियां में नही रहे। इससे समाज की अभूतपूर्व क्षति हुई है। परन्तु ''नास्ति येषाम् यशः काये जरामरणज भयम्''। यह तीनों कीर्ति शरीर से हमारे बीच सदैव रहेंगे।

हमारे अध्यक्ष न्याय मूर्ति पं० डी के त्रिवेदी को बिहार प्रान्त के ''सवर्ण आयोग'' के अध्यक्ष बनाये जाने से हम सभी गौरवान्वि हुए हैं।

पत्रिका का मुख पृष्ठ एक सद्विचार ज्ञापित करता है। आवरण कथा में उसका सन्देश बताया गया है।

इस सृजन की ऋतु में ''कान्यकुब्ज वाणी'' का तृतीय अंक सुधी पाठकों को समर्पित है।

18/378, इन्दिरा नगर
लखनऊ-226 016
मो० : 9415469561

डॉ० डी.एस. शुक्ल
सम्पादक

अखिल भारतीय श्री कान्यकुब्ज प्रतिनिधि सभा की पत्रिका 'कान्यकुब्ज वाणी' के नवीन अंक के प्रकाशन का आप सभी को मैं धन्यवाद देता हूँ। यह हिमालयीय पुनीत कार्य बिना आप सबके सहयोग के सम्भव न था।

असतो मा सदगमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योंमा अमृतं गमय।

कुछ इसी प्रकार से हमारी यह 'कान्यकुब्ज वाणी' एवं सभा अविद्या रूपी अंधकार को दूर करने वाली और एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण रूपी उजाले को समाज में फैलाये, ऐसा उस परम पिता परमेश्वर के दिशा निर्देशों पर चलते हुये पूर्ण करने का प्रयास करूँगा।

आयुर्वेदिक कन्सलटेन्ट,
सहारा अस्पताल, लखनऊ

डा. अनुराग दीक्षित
सह-सम्पादक II

सम्पादकीय

फागुनी बयार पर सवार हो देहरी-देहरी दस्तक देती अलमस्त सुगन्ध, अगर शब्दों का रूप धरती तो कैसी होती, बस इस कल्पना को साकार करने के प्रयास में नव श्रृंगार के साथ 'कान्य कुब्ज वाणी' आपके सम्मुख प्रस्तुत कर रहा हूँ।

फाग के उड़ते रंगों में आपने मेरी तरह ही एक तड़प अवश्य अनुभव की होगी, भ्रष्टाचार के स्याह काले धब्बों को मिटा देने की तड़प। रालेगण सिद्धि से उठी तिरंगी आँधी और वज्रनाद करती दधीचि की हड्डियाँ वही चाहती हैं जिसकी आशा में हम दशाब्दियों से बेचैन हैं।

भ्रष्टाचार की अमर बेल को समूल, तिनके-तिनके सहित नष्ट कर देना ही अब सबका लक्ष्य बनता जा रहा है। अहिंसा-अवज्ञा-उपवास, हमारे लिए पवित्र लक्ष्य प्राप्त करने की दिशा में प्रथम सोपान हैं। आमजनों के इन प्रयासों को उनकी कमजोरी समझकर गोलबन्द हो रहे भ्रष्टाचारियों को सचेत करने के लिए तो बस यही संकेत काफी है कि सागर तट पर विनयावनत मर्यादा पुरुषोत्तम की सहनशीलता जब चुक गयी या मात्र पाँच गाँवों की याचना करते-करते पाण्डु पुत्रों के धैर्य की सीमा आ गयी तब किस तरह धनुष की टंकार गूँजते ही हठधर्मी भ्रष्टतन्त्र ने घुटने टेक दिये।

समय जब-जब पुकारेगा हमारा कान्य कुब्ज ब्राह्मण समाज भी मकड़जाल की तरह फैले भ्रष्टतन्त्र का प्रतिकार करने सबसे आगे खड़ा मिलेगा।

इसी आशा व विश्वास के साथ अगले अंक में मिलने की प्रतीक्षा में -

आपका
सत्यानन्द दीक्षित
सह-सम्पादक

न्यायमूर्ति दिनेश कुमार त्रिवेदी
(अ.प्र.)

हरिकृपा, ६/१६६,
विनीत खण्ड, गोमती नगर,
लखनऊ - २२६०१०

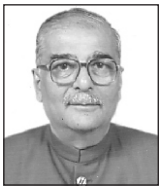

संदेश

कान्यकुब्ज सभा वर्ग विशेष का एक समूह है। इस समूह के सभी सदस्यों को यह ध्यान में रखना चाहिये कि कान्यकुब्ज सभा का उद्देश्य यह है कि जाति धर्म से ऊपर उठकर एक आदर्श समाज की स्थापना करने का निरन्तर प्रयास करते रहें तथा अन्य समूहों को भी यह संदेश देने का प्रयास करें क्यों कि यही हमारे देश के विकास, एकता एवं अखण्डता के लिये आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। सभी सदस्यों से हमारी यह अपेक्षा है कि समूह के सदस्यों की संख्या बढ़ाने की कोशिश करें ताकि यह संस्था अधिक से अधिक प्रभावी रूप से समाज के हितों की रक्षा कर सके और देश के विकास में अपना सक्रिय योगदान अर्पित कर सके।

(न्यायमूर्ति दिनेश कुमार त्रिवेदी)

।। ॐ श्री राम।।

श्रीश चंद्र दीक्षित
पूर्व पुलिस महानिदेशक एवं पूर्व सांसद

पंचवटी, प्रभु टाऊन,
रायबरेली (उ०प्र०)
फोन नं० : 0522-22052236

श्रीयुत् डा० शुक्ल जी,

अखिल भारतीय श्री कान्यकुब्ज प्रतिनिधि की पत्रिका ''कान्यकुब्ज वाणी'' के पुनः प्रकाशन के लिये आपको विशेष साधुवाद एवं बधाई। कान्यकुब्जों का इतिहास समृद्धशाली है, लेकिन जीवन में आये निरन्तर बदलावों से कान्यकुब्जों की नई पीढ़ी इस इतिहास से लगभग पूरी तरह अपरिचित ही है।

पत्रिका का सम्पूर्ण विवरण अपने समाज और धर्म दोनों के लिये बहुत ही उपयोगी है। छोटी-बड़ी जानकारियाँ किसी भी व्यक्ति के जीवन को संवारती है। कान्यकुब्ज वाणी इस दृष्टि से भी काफी महत्वपूर्ण प्रतीत होती है। पत्रिका के माध्यम से समृद्ध इतिहास की जानकारी पाठकों खासकर कान्यकुब्जों को मिलती ही रहेगी, साथ ही महत्त्वपूर्ण विषयों के माध्यम से वर्तमान भी एक अच्छे इतिहास की तरफ अग्रसारित हो सकेगा।

मुझे विश्वास है कि डा० डी०एस० शुक्ल जी का यह अभिनव प्रयास निश्चित ही नई पीढ़ी को कान्यकुब्जों के इतिहास से इसी तरह परिचित कराता रहेगा। एक बार पुनः पत्रिका के प्रकाशन के लिये अखिल भारतीय श्री कान्यकुब्ज प्रतिनिधि संस्था एवं सम्पादक मंडल को स्तुत्य कार्य के लिये कोटिशः बधाई।

(श्रीश चन्द्र दीक्षित)
पूर्व डी०जी०पी० एवं पूर्व सांसद

भवानी शंकर शुक्ल

ए-१/२, सेक्टर 'सी'
अलीगंज आवास योजना,
लखनऊ-२२६०२४
मो० : ९४१५०१०३६१
दिनांक : २९.०४.२०११

प्रिय डॉ० शुक्ल,

अखिल भारतीय श्री कान्यकुब्ज प्रतिनिधि सभा की पत्रिका 'कान्यकुब्ज वाणी' का अद्यतन अंक प्राप्त हुआ। धन्यवाद। पत्रिका के नाम से तो ऐसा जान पड़ा जैसे उसमें प्रकाशित सामग्री एक वर्ग विशेष से ही संबंधित है, परन्तु उसे पढ़कर उसके विषय वैविध्य से मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। पत्रिका में धर्म, स्वास्थ्य, साहित्य, संस्मरण तथा अन्य अनेक विषयों से संबंधित सुन्दर निबन्ध हैं। इतनी रोचक पत्रिका के प्रकाशन के लिये मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करें।

ज्ञानवर्धक निबन्धों के अतिरिक्त पत्रिका में कान्यकुब्ज समाज से संबंधित सूचनाप्रद सामग्री भी उपलब्ध है। मेरा विश्वास है कि इस पत्रिका का युवा पाठक समाज के वरिष्ठ और आदर्श विभूतियों से प्रेरणा लेगा। भारतीय समाज विगत १००-१५० वर्ष से बड़ी तेजी से बदल रहा है। स्वतंत्रता के बाद बदलाव की गति और भी तेज हुई है। वर्ण और जाति को लेकर अनेक विवाद भी हुए हैं तथा स्मृति और पुराणों में निहित विधि व्यवस्था में भी परिवर्तन हुए है और हो रहे हैं। ऐसी स्थिति में पत्रिका का दायित्व नये परिवेश में समाज को इस प्रकार सुसंगठित करने में और बढ़ जाता है जिससे राष्ट्र और भारतीय समाज की उत्तरोत्तर उन्नति में उल्लेखनीय योगदान हो सके।

पत्रिका हर प्रकार से समाजोपयोगी बने और आपका यह सद्प्रयास सफल हो, इसके लिये मैं हार्दिक कामना करता हूँ।

सद्भावना सहित

आपका

भवानी शंकर शुक्ल

डॉ० डी० एस० शुक्ल
१८/३७८, इन्दिरानगर
लखनऊ-२२६०१६

नवसंवत्सर एवं होली पर्व की हार्दिक ुभकामनाएँ

उचित मूल्य पर वि वसनीय
दवाओं हेतु पधारें

भारत
मेडिसिन कम्पनी

ाहर का एक प्रतिष्ठित प्रतिष्ठान

निकट बलरामपुर अस्पताल,
गोलागंज, लखन

वि ोषता :

जो दवाएँ ाहर की अन्य दुकानों पर
उपलब्ध न हों उनके लिए भी पधारें।

दूरभाष : **9336666322, 0522-6568011**

पंडित जी तिवारी जी का अंग्रेजी दवाखाना

८२ वर्ष पहले की बात, जब पहली बार २६ जनवरी मनायी गयी

–उमा बाजपेयी

आजसे अर्ध शताब्दी पहले इलाहाबाद के कुछ इने-गिने छात्रो ने म्योर कॉलेज के टावर पर २६ जनवरी सन् १९३० को तिरंगा झंडा लहराया था।

इस घटना को सुनाया रायबरेली शहर के वयोवृद्ध एडवोकेट श्री भगवती प्रसाद तिवारी ने, जिन्होंने स्वयं इस शुभ कार्य का नेतृत्व कर पूर्ण योगदान किया था।

घटना की जानकारी मुझे अबसे २ वर्ष पूर्व मिली थी। वह नवम्बर माह के जाड़े की एक रात थी। समय रहा होगा ९ बजे के आसपास का। श्री तिवारी जी (मेरे मौसाजी) अपनी बैठक में सपरिवार आग की भट्ठी के पास बैठे थे। मैं बम्बई से उन दिनों उत्तर प्रदेश आयी हुई थी और बनारस से लखनऊ जाते हुए रायबरेली अपनी मौसीजी एवं मौसाजी से मिलने एक दिनके लिए रूक गयी थी। बातों का न टूटनेवाला सिलसिला बम्बईसे शुरू होकर यहां के गांव-गांव तक जा चुका था। महंगाई, शादी-विवाह, बीमारी जलवायु आदि विषयों को बदलता हुआ चुनाव और राजनीति तक आ पहुंचा था। युवा वर्ग में से किसी ने कहा ३३ वर्षों में भी हम आजादी के सही मायने क्या है, नहीं जान सके हैं। हर वर्ष २६ जनवरी आती है और तभी बीच में ही एक बच्चा बोल पड़ा बाबा जी इस वर्ष २६ जनवरी की परेड़ देखने हमें दिल्ली भेज दोगे? बस तिवारी जी (मौसाजी), जो शायद राजनीति की नरम-गरम बहसों के बीच अतीत की यादों में खो गये थे, सहसा कहने लगे 'अरे भाई २६ जनवरी तो हमने अबसे ५३ साल पहले अंग्रेजों के समय में ही मनायी थी। वे यह कहते कहते आवेश में कुछ रोमांचित हो उठे। हम उनकी बात सुनकर क्षणभर को स्तब्ध ही रह गये। फिर उनसे सबने आग्रह किया कि बताइये कैसे क्या हुआ था? अंग्रेजों के शासनकाल में यह दुरूह कार्य कैसे किया गया?

वे कुछ क्षण तो चुप रहे, फिर हमारे सबके बार-बार आग्रह करने पर बोले अच्छा तुम लोग जानना ही चाहते हो तो सुनो-

दिसम्बर, १९२१ में पण्डित जवाहरलाल जी के सभापतित्व में जो लहौर

कांग्रेस अधिवेशन हुआ था उसमें यह तय हुआ कि २६ जनवरी १९३० को सदैव 'स्वराज्य दिवस' मनाया जायेगा और यह भी तय हुआ कि २६ जनवरी सन् १९३० को देश के विभिन्न भागों में तिरंगा झंडा भी फहराया जायेगा।

इस सम्बन्ध में श्री आर० आर० बनर्जी ने, जो उस समय एम. काम. के विद्यार्थी थे, पण्डित नेहरू से विचार-विमर्श कर कहा कि इलाहाबाद विश्वविद्यालय के म्योर कॉलेज के टावरपर तिरंगा झण्डा २६ जनवरी १९३० को लगाया जायगा। यह टावर उस समय इलाहाबाद की सबसे ऊंची इमारत थी और वहां 'यूनियन जैक' लहराया करता था।

इस सम्बन्ध में श्री आर० आर० बनर्जी ने मुझसे बात की। मैं उस समय बी.एस.सी. फाइनल का छात्र था। २५ जनवरी १९३० को भी बनर्जी मेरे पास आये और पूर्व निश्चित कार्यक्रमों को उसी दिन कार्यान्वित करने का आग्रह करने लगे। उस समय लगभग ७ बजे का समय था और रात के बारह घण्टे ही शेष थे। अतः इस कठिन कार्य के सामने आने के लिए पहले तो मैं थोड़ा हिचकिचाया परन्तु श्री बनर्जी, जो स्वभाव से बड़े भावुक थे, रोने से लगे बोले ''मैंने पण्डित नेहरू से वायदा किया है, यह कार्य तो आज करना ही है।'' अतः मैंने और श्री बनर्जी ने दो छात्रो को और इकट्ठा किया। एक थे श्री बैकुण्ठनाथ कर, एम.एस.सी. के विद्यार्थी दूसरे श्री रघुनाथ प्रसाद अस्थाना। एक और व्यक्ति को भी, जो घड़ी साज था और कटरे में दुकान रखता था, साथ लिया गया। उसका नाम था महावीर प्रसाद विश्वकर्मा। विश्वकर्मा जी ने पेचकश, लोहा काटने की आरी, हथौड़ी और एक टार्च साथ में रख लिया।

श्री बनर्जी पार्टी ऑफिस जाकर वहां से एक तिरंगा झंडा ले आये। अब योजना यह थी कि म्योर कॉलेज के टावर पर चढ़कर यूनियन जैक उतार कर अपना तिरंगा झंडा लगाना। अब हम पांचो २५ जनवरी सन् ३० की रात ११ बजे के लगभग रात्रि के सन्नाटे में म्योर कॉलेज की ओर बढ़े। श्री बनर्जी चूंकि अतिभावुक, उत्साही और जल्दबाज थे, देश-प्रेम की भावुकता में कहीं कुछ गड़बड़ न कर जायें, इसलिये उन्हें वहां एक हाकी फील्ड में बैठा दिया गया और मेरे नेतृत्व में चार लोगों का दल आगे टावर की और बढ़ा। हम लोग विजयानगरम् हाल की ओर से जाती हुई पत्थर की सीढ़ियों से ऊपर छतपर पहुंचे तो एक फाटक दिखाई दिया जिसके सींखचे काफी दूर पर थे। मैं चूंकि आरम्भ से ही दुबला-पतला था अतः सींखचों के बीच में से निकल गया किन्तु और तीनों का निकलना आसान न था। फाटक से लगी कंगूरेदार दीवार थी जो अधिक ऊंची न थी अतः इस पार मेरी

सहायता से वे तीनों भी कंगूरे पकड़कर अन्दर कूद आये।

टार्च की रोशनीमें अब आगे बढ़े तो फिर चक्करदार सीढ़ियां जो लोहे की थी, टावर की ओर जाती दिखाई दी। सीढ़ियों के अंत में एक मजबूत लोहे का गेट भी दिखायी दिया। अब उस गेट का कुण्डा महावीर विश्वकर्मा ने काटना शुरू किया। आधा कुण्डा कटने पर ऐसा लगा कि शायद कुण्डा उमेठने से टूट जाये, किन्तु ऐसा करने से गेट के चरमराने की आवाज हुई जिसे सुनकर नीचे बैठे दो चौकीदारों में से एक ने कहा 'ए भाई ऊपर का गेट कोई खोल रहा है।' दूसरे ने उसकी बात फौरन काट दी-क्यों नाहक परेशान कर रहे हो, ऊपर कौन-सा खजाना रखा है जो कोई गेट खोलेगा। किन्तु पहले को कुछ शक हो गया था अतः दोनों ने ऊपर जाकर देख आनेका निश्चय किया। हम लोगों को काटो तो खून नहीं। रात के शांत वातावरण में हमें उनकी सब बातें सुनायी पड़ रही थी। हम सब जहां थे वहीं सांस रोककर दुबककर बैठ गये। वे दोनों चौकीदार आये और वह पहला गेट जिसे हमने दीवार कूदकर पार किया था सही सलामत बंद देखकर वही से वापस लौट गये। नीचे जाकर एक चौकीदार भजन गाने लगा। दूसरा सम्भवतः सो गया होगा। जब उनके गाने की आवाज बन्द हो गयी तो फिर हम लोगों ने अपना काम शुरू करा दिया। सलाई ओर टार्च की रोशनी में फिर कुण्डा काटने का कार्य शुरू हुआ, किन्तु न कुण्डा कट ही रहा था, न उमेठा जा सकता था। इसी प्रयास में मेरी एक उंगली में चोट भी आ गयी।

अरे यह क्या! कुण्डे के नीचे एक ११/२ फुटका लकड़ी का टुकड़ा लगा दिखाई दिया जो स्क्रू में कसा था। मेरी निगाह उसपर पड़ गयी। अब क्या था झटसे यह मजबूत लकड़ी का टुकड़ा जो स्क्रू से कसा था, पेचकश से खोल दिया गया और गेट का कुण्डा ताला सब लटक गये। गेट पूरी तरह खुल गया था। हम सब अब अपनी मंजिल तक पहुंचने के लिए आजाद थे। हम सबकी प्रसन्नता का ठिकाना न था, क्योंकि हम लोग झण्डा लगाने के लिए पूरी तरह स्वतंत्र थे।

शीघ्र ही एक छात्र श्री बनर्जी को हाकी फील्डसे बुला लाने के लिए भेजा गया। वहां वे बेसब्री से हम सबकी प्रतीक्षा ही कर रहे थे। वे फौरन उस छात्र के साथ ऊपर आ पहुंचे। झंडा श्री बनर्जी के हाथों ही हम सब लगवाना चाहते थे। श्री बनर्जी ने यूनियन जैक उतार कर अपना तिरंगा झंडा लगा दिया। उनकी सबसे बड़ी महत्वाकांक्षा पूरी हो गयी थी। उसी समय रात्रि के ३ बज गये थे। अब श्री बनर्जी भावविह्वल होकर वंदे मातरम् गान करने का हठ किया। हम पांचो ने धीमें-धीमें स्वर में वंदे मातरम् गान किया और भारतमाता की जय करते हुए अति शीघ्र जैसे आये

थे वैसे ही उतरकर चलते बने। हां जाते समय गेट में वह लकड़ी का टुकड़ा जिस पर कुण्डा जड़ा था और ताला लटका था वह फिर से पेचकश में कसते गये।

अब हम सब आनन्द भवनकी ओर आये श्री बनर्जी को पण्डित नेहरू के निवासस्थानपर छोड़कर हम बाकी लोग अपने-अपने स्थान पर लौट गये। सुबह होते ही तहलका मच गया कि कैसे, किसने बिना गेट खोले यूनियन जैक उतारकर तिरंगा झंडा लगा दिया। जनता में से कोई कहता 'यह कलकत्ते के क्रांतिकारियों का काम होगा। वे हवाई जहाज से ऊपर से ही ऊपर आकर झंडा बदल गये होंगे। कोई कुछ कहता, कोई कुछ, किसी के समझमें नही आ रहा था कि यह सब हुआ कैसे? किन्तु इस घटनाको अधिक प्रकाश में लाने से कोई लाभ तो है नहीं, ब्रिटिश सरकार की बर्बरता से तो सभी डरते थे, अतः दूसरे दिन १२ बजे फिर से यूनियन जैक लगा दिया गया।'

२७ जनवरी सन् १९३० के 'लीडर' में भी म्योर कॉलेज के टावर पर तिरंगा लगाने का समाचार छापा गया था। इतना कहकर श्री तिवारी जी ने अपना रोमांचक संस्मरण समाप्त किया।

मैंने उनसे पूछा कि क्या मैं २६ जनवरी के सुअवसर पर यह घटना लेखनीबद्ध करके प्रकाशित करवाने का प्रयास कर सकती हूं तो उन्होंने सहर्ष स्वीकृति दे दी। श्री तिवारी जी आरम्भ से ही कांग्रेस के समर्थको में से रहे हैं और नेहरू परिवार के शुभचिन्तको में से भी एक है।

विनम्रता कायरता नहीं

एक भुजंग संत के कहने से क्रोध त्याग कर बिल्कुल शांत हो गया। लोग उसे पत्थर मार कर उकसाते थे पर वह शांत रहता। पत्थरो के प्रहार से वह अधमरा हो गया। ऋषि ने सर्प को फिर समझाया कि शांति के लिये कभी–कभी फुफकारना भी आवश्यक है। भुजंग फिर से शालीनता से जीने लगा। वैदिक स्तुति है :–

मन्युरसि मन्यु महि धेहि, सहाऽसि सहो मयि धेहि।

(हे ईश्वर) आप कल्याण क्रोध रूप हैं मुझे कल्याणकारी क्रोध (जैसे पुत्र के कल्याण हेतु पिता का क्रोध) प्रदान करें।

आप सहनशील हैं मुझे सहनशीलता प्रदान करें।।

किसी शायर ने भी कहा है : तेरे कहने पे रेंग सकता हूँ केचुआ समझने कि भूल न करना।

कुरबाँ होने का जज़्बा रखता हूँ चूज़ा समझने कि भूल न करना।

चतुः श्लोकी भागवत्

अहमेवासमेवाग्रे नान्यद् यत् सदसत् परम।
अहम् एव आसम् एव अग्रे न अन्यद् सत् असत् परम।
पश्चादहं यदेतच्च योऽवशिष्येत सोऽस्म्यहम।।१।।
पश्चात् अहम् यद् एतत् च यो अविश्येत् सो अस्मि अहम्।।१।।

ऋतेऽर्थं यत् प्रतीयेत चात्मनि।
ऋनृते अर्थम् यत् प्रतीयते न प्रतीयते च आत्मीन।
तद्विद्यादात्मनो मायां हयथाऽऽभासो यथा तमः।।२।।
तत विद्यात् अत्मनो मायां यथा आभासो तथा तमः।।२।।

यथा महान्ति भूतानि भूतेषूच्चावचेष्वनु।
यथा महन्ति भूतानि भूतेषु च वचनेषु अनु।
प्रविष्टान्य प्रविष्टानि तथा तेषु न तेष्वहम्।।३।।
प्रविष्टानि अप्रविष्टानि तथा तेषु न तेषु अहम्।।३।।

एतावदेव जिज्ञास्यं तत्त्वजिज्ञासुनाऽऽत्मनः।
एतावत एव जिज्ञास्यं तत्व जिज्ञासुना आत्मनः।
अन्वयव्यतिरेकाभ्यां यत् स्यात् सर्वत्र सर्वदा।।४।।
अन्वय व्यतिरेकाभ्यां यत स्यात् सर्वत्र सर्वदा।।४।।

भावार्थ

सृष्टि के पूर्व केवल मैं ही मैं था। मेरे अतिरिक्त न स्थूल था न सूक्ष्म और न तो दोनों का कारण अज्ञान। जहाँ यह सृष्टि नहीं है, वहाँ मैं ही मैं हूँ और इस सृष्टि के रूप में जो कुछ प्रतीत हो रहा है, वह भी मैं हूँ; और जो कुछ बचा रहेगा, वह भी मैं ही हूँ।।१।।

वास्तव में न होने पर भी जो कुछ अनिवर्चनीय वस्तु मेरे अतिरिक्त मुझ परमात्मा में दो चन्द्रमाओं की तरह मिथ्या ही प्रतीत हो रही है, अथवा विद्यमान होने पर भी आकाश-मण्डल के नक्षत्रों में राहु की भाँति जो मेरी प्रतीत नहीं होती, इसे मेरी माया समझना चाहिये।।२।।

जैसे प्राणियों के पंचभूतरचित छोटे-बड़े शरीरों मे आकाशादि पंचमहाभूत

उन शरीरों के कार्यरूप से निर्मित होने के कारण प्रवेश करते भी हैं और पहले से ही उन स्थानों और रूपों मे कारणरूप से विद्यमान रहने के कारण प्रवेश नहीं भी करते, वैसे ही उन प्राणियों के शरीर की दृष्टि से मैं उनमें आत्मा के रूप से प्रवेश किये हुए हूँ और आत्मदृष्टि से अपने अतिरिक्त और कोई वस्तु न होने के कारण उनमें प्रविष्ट नहीं भी हूँ।।३।।

यह ब्रह्म नहीं, यह ब्रह्म नहीं- इस प्रकार निषेद्ध की पद्धति से और यह ब्रह्म है, यह ब्रह्म है- इस अन्वय की पद्धति से यही सिद्ध होता है कि सर्वातीत एवं सर्वस्वरूप भगवान ही सर्वदा और सर्वत्र स्थित हैं, वे ही वास्तविक तत्व हैं। जो आत्मा तथा परमात्मा का तत्व जानना चाहते हैं, उन्हें केवल इतना ही जानने की आवश्यकता है।।४।।

डा० ए० के० पाण्डे
पूर्व निदेशक
परिवार कल्याण

गृहणी के टिप्स

श्रीमती नीरज शुक्ला ''रानी''

1. कपड़ो का रंग एक दूसरे पर न चढ़े इसके लिये एक बड़ा चम्मच नमक या बड़ा चम्मच सिरका धोने वाले पानी में मिला कर कपड़े धोने से एक कपड़े का रंग दूसरे पर नहीं चढ़ेगा।
2. शर्ट के कालर और कफ की गन्दगी हटाने के लिये उस पर रात को ढ़ेर सारा टेल्कम पाउडर छिड़क कर रात भर रख दे। सुबह झाड़ कर धो डालें।
3. कपड़ो से चाय और काफी का दाग छुड़ाने लिये दाग के हिस्से को ग्लिसरीन से भिगो दे और सुबह साबुन से धो दें।
4. पैंट की क्रीज बैठाने के लिये पैंट के उल्टे हिस्से पर मोम रगड़े तथा पलट कर प्रेस कर दें। क्रीज बढ़िया आयेगी।
5. काले और ब्राऊन जूते केले के छिलके से साफ करने से चमक जाते हैं।
6. सफेद जूतों के दाग हटाने के लिये नेल पालिश रिमूवर कपड़े में लगा कर पोंछने से एकदम साफ हो जायेगें।
7. प्लास्टिक के फूलों को साफ करने के लिये उन्हें एक पेपर बैग में रख कर एक मुठ्ठी नमक डाल कर हिलायें।

भारत महोत्सव

सुरभि दीक्षित त्रिवेदी
हैदराबाद

आस्था बेचैनी से स्वामी के फोन का इंतजार कर रही थी। शाम के सात बज रहे है। भारत महोत्सव के लिए प्रतिभाओं का चयन हो चुका होगा। परिणाम आज शाम तक आने थे। अगर बच्चों के दल का चयन हुआ होगा तो स्वामी उसे जरूर बताएगा। वह पहली बार स्वामी से स्टेट इंटर कालेज समारोह में मिली थी। वह दक्षिण भारतीय कला निकेतन का नेतृत्व कर रहा था। वह दक्षिण भारतीय संगीत विशेषज्ञ था और भरतनाट्यम का प्रेमी। समारोह की नृत्य प्रतियोगिता में जब आस्था ने अपने कत्थक नृत्य से प्रतियोगिता को जीतते हुए अपनी निकटतम प्रतिद्वंदी श्रीलता नायडू को भरतनाट्यम के नृत्य में हराया तो स्वामी करीबन बौखला गया था। उसने निर्णायकों पर पक्षपात का आरोप लगाया और समारोह बीच में ही छोड़ कर चला गया था।

समारोह के तीसरे दिन आस्था एक चाय के स्टाल पर चाय पी रही थी तभी स्वामी उसके पास आया। ''निर्णायकों को खरीदने के लिए कितने पैसे देने पड़े? आपके पिता जरूर कोई रईस आदमी होंगे।'' स्वामी ने आते ही कटाक्ष किया।

आस्था ने सिर उठा कर स्वामी का कठोर चेहरा देखा और शांति से जवाब दिया - ''मेरे पिता रेलवे में क्लर्क हैं। वो हम चार भाई-बहनों को सिर्फ पढ़ाने की हैसियत रखते हैं।''

''तो फिर तुमने नृत्य प्रतियोगिता कैसे जीती? श्रीलता तुमसे ज्यादा अच्छी डांसर है। भरतनाट्यम में उसे कोई हरा नही सकता।'' - स्वामी बोला। '' किन्तु मैं कत्थक करती हूँ। निसंदेह श्रीलता एक अच्छी डांसर है पर निर्णायकों को मेरा नृत्य पसंद आया। यह उनका निर्णय था। मैं बीच में कहाँ हूँ?'' - आस्था को क्रोध आया।

''कत्थक और भरतनाट्यम में बहुत अंतर है। भरतनाट्यम की भाव-भंगिमाएँ कत्थक में कहाँ? भरतनाट्यम सीखना हर किसी के बस की बात नहीं। दक्षिण भारतीयों को इस नृत्य से खास लगाव है।'' - स्वामी ने बात को आगे बढ़ाया था। ''तुम्हारा मतलब है कि कत्थक में कोई दम नहीं? या हम उत्तर भारतीयों को अपनी संस्कृति से कोई लगाव नहीं?'' - आस्था ने उकता कर कहा और वहाँ से उठ कर जाने लगी।

आस्था ने पलट कर अचरज से इस पागल दक्षिण भारतीय को देखा और

फिर अपनी राह चल दी। दो दिन बाद समारोह खत्म हो गया और वह मुंबई से वापस लखनऊ अपने घर आ गई और अपनी रोजाना की दिनचर्या में व्यस्त हो गई।

बीस-पच्चीस दिन बाद अचानक आस्था को एक पत्र मिला। पत्र खोलते ही वो अचम्भित हो गई। ये पत्र स्वामी का था। उसमें उसने फिर दिल्ली आने का चैलेंज किया था और साथ में दिल्ली की ट्रेन का फर्स्ट क्लास टिकट था। आस्था अचरज में थी कि कोई उत्तर-दक्षिण के फर्क में इतना गहराई तक उतर सकता है। आस्था ने दिल्ली जा कर इस पागल को सबक सिखाने का निर्णय किया और दिल्ली जाने की तैयारी मे जुट गई।

वह दिल्ली जाने वाली ट्रेन में बैठी हुई थी। उसने दृढ़ निश्चय किया था कि वह उस स्वामी की इस ट्रेन के टिकट को जाया नही जाने देगी। वह यह प्रतियोगिता फिर से जीत कर दिखाएगी और स्वामी की बोलती बंद कर देगी। ट्रेन स्टेशन छोड़कर आगे बढ़ चुकी थी। आस्था ने पढ़ने के लिए एक किताब निकाली और अपनी बर्थ पर लेट गई। रात के तकरीबन एक बज रहे थे। आसपास की बर्थ पर सब लोग लगभग सो चुके थे। आस्था भी किताब बंद करके सोने की सोच ही रही थी कि तभी उसने बहुत जोर का धमाका सुना और फिर उसने अपने-आप को बोगी में बुरी तरह फँसा पाया। चारों तरफ चीख-पुकार मची हुई थी। आस्था के हाथ में अभी भी फटी हुई किताब के कुछ पन्ने बचे हुए थे। वह मदद के लिए चिल्लाना चाहती थी पर हलक मे आवाज दब कर रह गई। उसने सिर घुमा कर आस-पास देखा। उसे सिर्फ तुड़े-मुड़े शरीर और खून बिखरा दिखाई दिया। उसने घबरा कर आँखे बंद कर ली।

जब आस्था की आँख खुली तो उसने अपने-आप को अस्पताल में पाया। उसके मम्मी-पापा और तीनों भाई-बहन उसे घेरे खेड़े थे। उसके पूरे शरीर में पट्टियाँ बँधी हुई थी। पूरा शरीर सुन्न था। पापा डाक्टर से कुछ बात कर रहे थे और काफी चिंतित थे। भाई-बहनों से पता चला कि ट्रेन पटरी से उतर गई थी। भयावह दुर्घटना घटी थी। वह ट्रेन से पूरे बारह घंटे के बाद निकाली गई थी। उसके डिब्बे में शायद वही किस्मत वाली जो बची थी। किन्तु मम्मी-पापा की चिंता की वजह अब एक्सीडेंट नहीं बल्कि डाक्टर का भय था कि शायद वह अब ठीक से चल भी नहीं पाएगी। उसके दाँए पैर की हड्डियाँ ट्रेन के भारी-भरकम पहिए के नीचे आकर बुरी तरह टूट चुकी थी। दो महीने अस्पताल में रहने के बाद उसे घर लाया गया। वह अब भी अपने पैर हिलाने की स्थिति में नहीं थी। धीरे-धीरे घर के बाकी सदस्य अपनी रोजमर्रा की जिंदगी में व्यस्त हो गए। पापा ऑफिस जाने लगे और

भाई-बहन स्कूल-कालेज। मम्मी भी अपने घरेलू कार्यों में व्यस्त हो गईं। वे बीच-बीच में आकर आस्था की जरूरत के बारे में पूछ जाती थी।

एक्सीडेंट को चार महीने हो चुके थे। आस्था अब सोने से डरने लगी थी। आँख बंद करती तो खुद को ट्रेन में फँसा हुआ महसूस करती और घबरा कर आँख खोल देती। अब उसे एक नया डर और घेरने लगा था, जगती आँखो में, कि कभी वो दुबारा अपने पैरों पर चल भी पाएगी कि नहीं। एक्सीडेंट के बाद उसे काफी लोग देखने आये। नाते-रिश्तेदारों और दोस्तों का ताँता लगा ही रहता था। दोस्तों से ही पता चला कि श्रीलता नायडू दिल्ली सांस्कृतिक कार्यक्रम की नृत्य प्रतियोगिता जीत चुकी थी। आस्था मन ही मन मुस्कराई थी, स्वामी जरूर दक्षिण भारत की जीत पर खुश होगा। या वह सोच रहा होगा कि आस्था डर कर स्वयं नहीं आई। खैर अब वह सब कुछ काफी पीछे छूट चुका है। शायद अब वह वो जिंदगी जी ही नहीं पाएगी।

वह मई की दोपहर थी। बाहर चिलचिलाती धूप थी। मम्मी और बाकी भाई-बहन कूलर की हवा में सो रहे थे। किसी ने दरवाजे पर घंटी बजाई। मम्मी हड़बड़ा कर उठ गई। - ''इतनी दोपहर में भला कौन आ सकता है?'' उन्होंने दरवाजा खोला। सामने एक काला, लंबा युवक खड़ा था। मम्मी ने उसका परिचय पूछा। ''सुब्रमण्यम स्वामी।'' - युवक ने जवाब दिया - '' मैं आस्था से मिलना चाहता हूँ। मैं चेन्नई से आया हूँ।''

मम्मी ने उसे ड्राइंग-रूम में बिठाया और अंदर आकर आस्था से पूछा - ''क्या तुम किसी सुब्रमण्यम स्वामी को जानती हो? चेन्नई से आया है।'' ''स्वामी'' - आस्था चौंकी। वह यहाँ? जरूर उसकी इस स्थिति पर दया दिखाने आया होगा।

''माँ ! उसे अंदर भेज दो।'' आस्था उसे खुश होने का एक और मौका देना चाहती थी। स्वामी दरवाजे पर खड़ा था। उसकी नजरें शर्म से झुकी हुई थीं। आस्था ने उसे अंदर आकर बैठने का इशारा किया। स्वामी बेड के बगल वाली कुर्सी पर बैठ गया। वह अभी भी आस्था से नजर नहीं मिला पा रहा था। मम्मी उसे एक गिलास ठंडा पानी दे गई वह बिना नजर उठाए जल्दी से पानी घुटक गया। थोड़ी देर की खामोशी के बाद आस्था ने उससे आने की वजह पूछी।

स्वामी ने खंखार कर गला साफ करते हुए धीमी आवाज में कहा आ.....स्. ....था....। मुझे माँफ कर दो। वैसे बात माफी के काबिल नहीं है, किंतु....। तुम्हारे इस एक्सीडेंट की वजह मैं ही हूँ। मैं पिछले चार महीने से ठीक से सो नहीं पा रहा। तुम्हारे एक्सीडेंट की खबर अगले दिन मुझे मिली थी। पर मैं तुमसे मिलने

की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा था। आस्था ने मुस्करा कर उसे सांत्वना दी। वह बोली- '' इस एक्सीडेंट की वजह तुम अकेले कैसे हो सकते हो? तकरीबन दो सौ लोग मरे थे। इतने लोगों की मौत अकेले तुम्हारी वजह से तो नहीं हो सकती। मैं तो फिर भी किस्मत से जिंदा हूँ। तुम अपने-आपको इस सब की वजह मत समझो। यह तो अनहोनी थी।''

स्वामी ने कृतज्ञता से उसकी तरफ देखा। उसकी आँखों में आँसू थे। वह बोला- '' इतने बड़े हादसे के बाद भी तुमने इतनी आसानी से मुझे माफ कर दिया। मैं दिल से प्रार्थना करता हूँ कि तुम जल्दी से ठीक हो जाओ। मैं तुम्हे अगले साल होने वाले जयपुर महोत्सव में नृत्य प्रतिस्पर्धा जीतते हुए देखना चाहता हूँ।

आस्था खोखली हँसी हँसी - ''अरे ! तुम दक्षिण भारतीय से उत्तर भारतीय पक्ष में कैसे आ गए? खैर ! तुम्हारी यह इच्छा तो अब शायद ही पूरी हो। मैं शायद ही अपने पैरों पर खड़ी हो पाँऊ। नृत्य तो अब सपना ही है।'' आस्था की आँखे भीग गई थीं।

स्वामी उठकर खड़ा हो गया। वह बोला - ''नहीं आस्था ! तुम अपने पैरों पर खड़ी भी होगी और नृत्य भी करोगी। मैं तुम्हारे लिए कुछ करना चाहता हूँ। तुम कोशिश करो आस्था। जयपुर महोत्सव में तुम्हें चलना ही पड़ेगा। जिंदगी अभी खत्म नहीं हुई है। मैं चलता हूँ। फिर आऊँगा।''

स्वामी चला गया पर आस्था को जयपुर महोत्सव का सपना दे गया और कुछ उम्मीद भी। समय के साथ धीरे-धीरे आस्था अपने पैरों पर खड़ी होने लगी और धीरे-धीरे चलने भी लगी। साल भर के बाद आस्था नाचने की भी कोशिश करती थी पर अब पैरों में वो ताकत नहीं बची थी। आस्था मान चुकी थी कि अब वह कभी नाच नहीं पाएगी और उसने समझौता कर लिया था।

एक दिन अचानक दरवाजें की घंटी बजी। आस्था ने दरवाजा खोला। सामने स्वामी खड़ा था। उसने बताया अगले हफ्ते जयपुर महोत्सव शुरू हो रहा है। आस्था ने अपनी स्थिति बताते हुए वहां जाने में अपनी असमर्थता जताई। वह बोली कि अब वह कभी नृत्य नहीं कर पाएगी इसीलिए जयपुर महोत्सव में जाने का कोई औचित्य नहीं है। किन्तु स्वामी बोला - '' आस्था ! मैं तुम्हे नृत्य प्रतियोगिता के लिए नहीं बल्कि तुम्हारी मदद मांगने आया हूँ। अमेरिका से भारतीय संस्कृति पर शोध करने के लिए मेरे दो मित्र कार्ल और एलिस आए हैं। वे अमेरिकी यूनिवर्सिटी में भारत महोत्सव आयोजित करना चाहते हैं।

इसके लिए वो कलाकारों को खोज रहे हैं। उन्हें कुछ भारतीयों की जरूरत है

जो इस कार्य में उनकी मदद कर सकें। मुझे तुम पर पूरा भरोसा है। तुम महोत्सव में चल कर हमारी मदद कर सकती हो।''

आस्था ने मुड़ कर पीछे खड़ी मम्मी की तरफ देखा। मम्मी के चेहरे की भंगिमाएं देखकर आस्था समझ गई कि वह खुश नहीं है। मम्मी स्वामी से बोली - ''हमने आस्था को लगभग खो ही दिया था। यह उसका दूसरा जन्म है। वह मनहूस एक्सीडेंट भी दिल्ली महोत्सव में जाते वक्त हुआ था। अब यह जयपुर महोत्सव ! नहीं वो कहीं नहीं जाएगी। अब इस घर में मैं इस तरह की बातें बिल्कुल नहीं सुनना चाहती।'' मम्मी ने निर्णय दिया। स्वामी ने उन्हें समझाने की बहुत कोशिश की पर मम्मी टस से मस ना थी।

शाम को पापा आफिस से वापिस आए। हाथ-मुंह धोकर वह स्वामी के पास सोफे पर बैठ गए। स्वामी ने पापा से आस्था को जयपुर महोत्सव में ले जाने का निवेदन किया। पापा ने कुछ देर सोचते हुए आस्था से उसकी इच्छा पूछी। आस्था डेढ़ साल से घर में थी ओर अपनी तकलीफ से बाहर निकल रही थी। उसके लिए जयपुर महोत्सव में जाना एक ताजगी भरा ख्याल था। पर वह पापा-मम्मी की सहमति चाहती थी।

आखिर पापा ने निर्णय दिया कि वह जयपुर महोत्सव में जाएगी। मम्मी ने विरोध किया। पर पापा ने उन्हें समझाया कि यह आस्था के लिए अच्छा ही होगा। उसे बदलाव की जरूरत हैं। उसे उस एक्सीडेंट की काली याद से निकल कर कुछ अच्छा सोचना होगा। जयपुर महोत्सव में जाकर वह जिंदगी को नए सिरे से जी पाएँगी।

जब वह जयपुर जाने वाली ट्रेन पर बैठी तो डर के मारे उसके हाथ-पाँव काँप रहे थे। रह-रह कर हादसे की काली परछाईयां उसकी आँखों के आगे तैर जाती थी। पर स्वामी पूरे रास्ते उससे इधर-उधर की बातें करके उसका ध्यान भटकाता रहा। अगले दिन जब ट्रेन जयपुर स्टेशन पर रुकी तो आस्था को पता ही नहीं चला कि जयपुर कब आ गया। उसने स्वामी को उसका ध्यान भटकाने के लिए और बात-चीत करके रास्ता पार करवाने के लिए धन्यवाद दिया।

स्वामी उसे होटल के कमरे में आराम के लिए छोड़ गया। उसने बताया कि कार्ल और एलिस भी भारत आ गए हैं और शाम तक जयपुर पहुँच जाएँगे।

अगले दिन स्वामी उसे कार्ल और एलिस से मिलाने के लिए होटल के रेस्तराँ में ले गया। कार्ल भूरे बालों व नीली आँखों वाला तकरीबन बीस-बाईस साल का युवक था जो बोस्टन यूनिवर्सिटी में भारतीय सभ्यता पर शोध कर रहा था। एलिस

भूरे बालों व भूरी आंखो वाली तकरीबन तीस बरस की अमरीकी युवती थी। वह बोस्टन यूनिवर्सिटी में लेक्चरर थी और भारतीय संस्कृति के काफी करीब थी। वह हरे-रामा-हरे-कृष्णा संघ की सक्रिय सदस्य थी। वह जयपुर महोत्सव में कलाकारों का चयन कर अमेरिका में आयोजित होने वाले भारत महोत्सव में ले जाना चाहती थी। कार्ल और एलिस दोनों ही काफी मिलनसार थे। वे आस्था के एक्सीडेंट से लेकर उसके पैरों पर खड़ी होने के संघर्ष की कहानी से काफी प्रभावित थे।

अगले दिन से जयपुर महोत्सव का प्रारम्भ हुआ। स्वामी, आस्था, कार्ल व एलिस चारों ही जयपुर मेले में सुबह से घूमने लगे। चारों तरफ रंग-बिरंगी छटा बिखरी हुई थी। आस्था मंत्रमुग्ध सी मेले की छटा निहार रही थी। चारों तरफ बंधेज की रंग-बिरंगी चूनरों में सजी हुई दुकाने थी। आस्था को शुरू से राजस्थानी संस्कृति से काफी लगाव था। रंग-बिरंगी लहँगे पहने हुए, जेवरों से सजी स्त्रियां ओर बंधेज की ऊँची पगड़ी बांधे राजस्थानी पुरुष उसे खासे लुभा रहे थे। आस्था ने पलटकर एलिस को देखा। वह चूड़ी-कंगन की दुकान पर खड़ी होकर अपने नाप की चूड़ियां ले रही थी। कृष्ण मंदिर से लगाया हुआ माथे पर लाल तिलक और नीली जींस व टाइट पीली टी-शर्ट के ऊपर करीने से ओढ़े हुए जयपुरी दुपट्टे में एलिस बहुत प्यारी लग रही थी। कार्ल भी एक बूढ़े दुकानदार की पगड़ी अपने सिर पर रख कर अपनी फोटो खिंचवा रहा था। आस्था अब अमेरिकिओं के बारे में सोचती थी कि वे बड़े रूखे और अपनी पर्सनल स्पेस में जीने वाले लोग होते हैं। कार्ल व एलिस के मित्रवत व्यवहार व अपनी सभ्यता के प्रति उनका लगाव देखकर आस्था का दिल भर आया। स्वामी ने आकर उसे उसके ख्यालों से जगाया। वह बोला - ''आस्था ! कुछ समझ में आया? तुम्हें अपना काम तो याद है ना !'' आस्था ने हाँ में सिर हिलाया और इधर-उधर देखने लगी। उन्हें कुछ असाधारण प्रतिभाएँ जो खोजनी थीं। एक तरफ कठपुतली का नृत्य चल रहा था। आस्था ने कार्ल और एलिस को साथ आने का इशारा किया। कठपुतली कलाकार आल्हा-ऊदल की शौर्य गाथा सुना रहे थे और कठपुतलियों को उसी के अनुसार नचा रहे थे। कार्ल और एलिस को कठपुतली का तमाशा काफी पसंद आया और उन्होंने उन्हें चयन कर लिया। वे कुछ आगें बढ़े तो उन्होंने राजस्थानी लोक-गीत की धुन सुनी। सारंगी और ढोलक की थाप पर चार-पाँच गाँव वालों के द्वारा गाया गया लोकगान काफी कर्णप्रिय था। एलिस ने उन्हें भी चयनित किया। वे मेले में पूरा दिन इधर-उधर घूमते रहे। शाम तक वे थक कर एक मंदिर के चबूतरे पर बैठ कर सुस्ताने लगे। तभी उनके कानों में काफी तीखा शोर गूँजा कोई ड्रम जैसा कुछ बजा रहा था और कुछ बच्चे कुछ चिल्ला रहे थे। उन्होंने पलट कर मंदिर के पीछे मैदान की तरफ देखा तो सभी की हँसी छूट

गई। दस-बारह बच्चे अपने हाथों में अजीब से साज लेकर बजा रहे थे और साथ गाना गा-गा कर पूरी मस्ती में नाच रहे थे। उनकी उम्र लगभग आठ से बारह वर्ष के बीच की होगी। तन पर कपड़े के नाम पर मात्र एक कच्छा था। नंगे पांव, धूल में सने बच्चे जिस जोश से नाच-गा रहे थे उसे देख कर वे चारों अपने को रोक ना सके और उनकी तरफ चल दिए। नजदीक पहुँचकर उन्होंने देखा तो वे अचंभित हो गए। वे बच्चे घरेलू टूटे-फूटे व मिट्टी के बर्तनों को साज की तरह इस्तेमाल कर रहे थे। टूटा रबर का पानी का पाईप उनका बाजा था। मिट्टी के दो अलग-अलग घड़े उनका तबला था। टूटे-टिन व प्लेटों से उन्होंने अपना ड्रम बनाया हुआ था। हाथ में गिलास व चम्मच लेकर वे पूरी तन्मयता से पूरे सुर के साथ रामायण का पाठ कर रहे थे। आस्था मंत्र-मुग्ध थी। पुराने बर्तनों का इतना सुरीला उपयोग उसने पहले कभी नहीं देखा था। न ही इससे पहले रामायण का गान कभी इतना कर्णप्रिय लगा था। उसने पलट कर कार्ल, एलिस और स्वामी को देखा। वे भी आश्चर्यचकित थे।

आस्था ने स्वामी से पूछा - '' क्या सोचा?''

स्वामी ने एलिस की तरफ देखा। एलिस बोली - '' अच्छा है ! पर ये बच्चे हैं। इन्हें न्यूयार्क ले जाना क्या ठीक रहेगा? मेरी संस्था के संचालक टॉम पीटरसन हैं। उन्हें बच्चे पसंद नहीं। शायद वे इन्हे पसंद न करें। मुझे उनसे बात करनी पड़ेगी।''

आस्था ने एलिस से टॉम पीटरसन से बात करने का अनुरोध किया। एलिस अपना सेलफोन निकाल कर टॉम से बात करेन के लिए एकांत स्थान पर चली गई। आस्था ओर कार्ल भी पीछे-पीछे आ गए।

आस्था को एक छोटा सा सात साल का बच्चा बहुत भाया था। उसकी आवाज आस्था को बहुत अच्छी लगी थी। उसने उस बच्चे से उसका नाम पूछा- ''छोटू'' - जवाब मिला।

''तुम लोग कहाँ रहते हो?'' - आस्था ने पूछा।

''हम उस मंदिर की सीढ़ियों पर रहते हैं।'' छोटू ने दूर एक बड़े से मंदिर की तरफ इशारा किया।

''और तुम्हारे माता-पिता।'' - स्वामी ने पूछा

छोटू थोड़ा अचकचा गया। अचानक हुए सवालों से वह घबरा गया। उसने अपने दल के सबसे बड़े बच्चे को नजदीक आने का इशारा किया। वह तकरीबन

बारह-तेरह बरस का था। उसने अपना नाम बजरंगी बताया। आस्था ने फिर से उनसे उनके माता-पिता का पता पूछा। '' हम अनाथ है। हमारा कोई नहीं है। दिन में सड़को पर घूमते हैं और रात में उस मंदिर की सीढ़ियों पर सो जाते हैं।''- बजरंगी ने बताया।

''फिर तुम लोगों को रामायण किसने सिखाई?'' - आस्था उलझन में थी।

'' हम मंदिर में रहते हैं ना। वहाँ रोज रामायण का पाठ होता है। हमने सुनते-सुनते सीख ली। -छोटू बोला।

'' और ये बर्तन.....। - कार्ल ने उनके साज की तरफ इशारा किया।

'' ये थाली-गिलास-चम्मच है जिसमें हम खाना खाते हैं। ये पुराने टिन और घड़े हमें मंदिर से मिले। उन्होंने ये फेंक दिए थे। हमने उठा लिए। हमारे पास अपने सामान के नाम पर यही है। इसीलिए जहाँ जाते हैं, इन्हें साथ रखते हैं।'' - बजरंगी बोला।

सुन कर सबका दिल भर आया। ''और तुम लोग खाना कहाँ खाते हो।'' आस्था ने पूछा।

''हम भीख माँग कर या छोटे-मोटे काम करके दिन में कुछ कमा लेते हैं। इस महोत्सव में भी हमारा गाना सुन कर कुछ-कुछ लोग दे देते हैं।'' बजरंगी बोला।

इतने प्रतिभाशाली बच्चों की जिंदगी की इस कड़वी सच्चाई से अवगत होने के बाद सबका मन दुखी था। उन्होंने एलिस को आते देखा। कार्ल ने एलिस से पूछा - ''क्या बात हुई?''।

एलिस ने ना में सिर हिलाया और बाली - ''टाम राजी नहीं है। हम इन बच्चों को नहीं ले सकते।''

आस्था खामोश थी। पर उसके मन में उथल-पुथल थी। अमरीका में होने वाले भारत महोत्सव के असली प्रतिनिधि तो शायद ये मासूम बच्चे ही हैं। भारतीय संस्कृति का एक अनूठा उदाहरण ये बच्चे ही पेश कर सकते है। वे मेले में शाम तक घूमते रहे। कार्ल और एलिस ने दो-तीन लोगों को और चुना। पहला एक नटों का दल, दूसरा राजस्थानी नृत्य करने वाली छात्राओं का दल और तीसरा एक हास्य कलाकार। यूँ तो ये सब अच्छा प्रदर्शन कर रहे थे, पर अब आस्था का मन नहीं लग रहा था। वो तो कहीं पीछे उन अनाथ बच्चों के पास छूट गया था। एलिस ने उससे जब भी उसकी राय पूछो तो वह 'हाँ-हाँ' के अलावा कुछ बोल ही नहीं पाई। रात में होटल के कमरे में आस्था को ठीक से नींद ही नहीं आई। वह पूरी रात उन बच्चों के

बारे में ही सोचती रही। उसने निर्णय किया कि वह एलिस से इस बारे में बात करेगी।

अगली सुबह रेस्तराँ में जब आस्था ने एलिस से दुबारा बात करने की कोशिश की तो एलिस ने बात टालते हुए कहा कि वह दिल्ली जा कर चयनित कलाकारों की लिस्ट फाइनल करेगी और उन्हें न्यूयार्क ले जाने का बंदोबस्त करेगी। उसके बाद वह कार्ल के साथ कुछ जरूरी बातें करने लगी। आस्था उठ कर दूसरी टेबल पर चली गई। उसे बहुत क्रोध आ रहा था। जब बिना देखे चयन न्यूयार्क में बैठे पीटरसन को ही करना है तो फिर उसे यहाँ बुलाने की जरूरत ही क्या थी। वह खाँमखाँ ही यहाँ आकर अपना वक्त बरबाद कर रही है।

अचानक आस्था ने निर्णय लिया। वह उठी, स्वामी के पास गई और बोली - '' मैं आज ही लखनऊ वापस जा रही हूँ।''

''पर क्यों?''- स्वामी ने अचरज से पूछा। ''सब तो ठीक-ठाक चल रहा है। जानती हो? एलिस तुम्हे भी अपने साथ न्यूयार्क ले जाना चाहती है। वह कह रही थी कि तुम्हे काफी तजुर्बा है और तुम वहाँ भारत महोत्सव आयोजित करने में उसकी काफी मदद कर सकती हो।''

''नहीं ! मैं कहीं नही जाऊँगी। मेरे तजुर्बे पर भरोसा मैं देख चुकी हूँ।''

''क्या तुम उन बच्चों के बारे में कह रही हो?''

''हाँ'' - आस्था का संक्षिप्त जवाब था।

स्वामी ने कुछ सोचते हुए कहा - ''तुम होटल जाकर आराम करो। मैं एलिस से फिर से बात करूँगा। मुश्किल है। टॉम पीटरसन थोड़ा रूखा आदमी है और जिद्दी भी। वह नहीं मानेगा।'' ''पर तुम शायद टॉम पीटरसन से ज्यादा जिद्दी हो। देखते हैं कौन जीतता है।'' - स्वामी हँस कर बोला।

होटल आकर आस्था ने अपना सामान पैक किया और लखनऊ की ट्रेन में अपना टिकट कनर्फम किया। पर मन में अभी भी वह भगवान से यही मना रही थी कि उन बच्चों को चुन लियाा जाए। वह बेचैनी से स्वामी के फोन का इसीलिए इंतजार कर रही थी।

रात के आठ बज गए थे। स्वामी ने अभी तक उसे संपर्क नहीं किया था। ट्रेन का टाइम हो रहा था। आस्था सामान लेकर कमरे के बाहर जाने ही वाली थी कि उसे दरवाजे पर दस्तक सुनाई दी। उसने दरवाजा खोला और सामने एलिस को खड़ा पाया। एलिस ने उसके सामान की तरफ देखा और प्रश्नवाचक निगाह से पूछा

– '' तुम कहीं जा रही हो? प्लीज ऐसा मत करना। इतने छोटे-छोटे बच्चों को मैं अकेले नहीं संभाल सकती। उनका ध्यान रखने के लिए तुम्हें और स्वामी को भी मेरे साथ चलना पड़ेगा। और एक बात का ध्यान रखना। टॉम पीटरसन राजी नहीं हैं। हम बच्चों को बस ले चल रहे हैं। आगे देखा जाएगा।

आखिर वे सब न्यूयार्क जाने वाली उड़ान पर थे। सभी कलाकारों को मिला कर वे सब कुल पचास थे। आस्था को सचमुच कुछ मुश्किलों का सामना करना पड़ा। सड़को पर नाचने वाले अनाथ गरीब बच्चों के लिए अब सबकुछ नया था। वे हर चीज को जानने-समझने के लिए उत्सुक थे। फिर चाहे वह हाथ के बजाए काँटे-चम्मच से खाना हो या हवाई-जहाज की पेटी बाँधना। सब कुछ अनोखा था उनके लिए। उड़ान के वक्त भी उनका झगड़ा सिर्फ इसीलिए हो गया कि हर कोई खिड़की की सीट पर बैठकर खिड़की खोल कर ताजी हवा खाना चाहता था। आस्था उन्हें सब कुछ धैर्य के साथ समझाने की कोशिश कर रही थी। आखिर वे न्यूयार्क ऐयरपोर्ट पर लैंडकर रहे थे।

टॉम पीटरसन को चयनित कलाकारों का प्रदर्शन देखना था। उसी को निर्णय लेना था कि भारत महोत्सव में आखिर कौन रहेगा। एलिस के घर पर एक बड़े हॉल में आयोजन रक्खा गया। आयोजन के दिन जैसे ही टॉम पीटरसन एलिस के घर आया तो वहाँ छोटे बच्चों को देख कर उसका मूड बिगड़ गया। उसने एलिस से कहा कि अगर ये बच्चें यहाँ रहेंगे तो वह अभी आयोजन छोड़ कर चला जाएगा। वह एलिस से नाराज था कि वह उसके मना करने के बावजूद बच्चों को लाई ही क्यों? इन बच्चों के टिकट पर एलिस ने उसकी संस्था के पैसे बरबाद किए थे। एलिस ने दुखी मन से आस्था और स्वामी से उन बच्चों को वहाँ से हटाने को कहा। आखिर में उन्होंने यह निर्णय लिया कि कार्ल और स्वामी बच्चों को शहर घुमाने ले जाएंगे और तब तक आस्था यहाँ एलिस के आयोजन में मदद कर देगी।

बच्चें अपना सामान लेकर खुशी-खुशी घूमने चले गए। आस्था उदास मन से बाकी कलाकारों को तैयार करने में जुट गई। देखते-देखते एलिस के घर पर उसके दोस्तों की भीड़ जमा हो गई थी। आयोजन शुरू हुआ। एक-एक कर कलाकार मंच पर आते व अपनी कला का प्रदर्शन करते जाते। कमरे में खुशी का माहौल था। हर प्रदर्शन के बाद सब तालियों से उन कलाकारों का स्वागत करते। उन कलाकारों में श्रीलता नायडू भी थी। उसने भी भरतनाट्यम का प्रदर्शन किया। सब मंत्र-मुग्ध रह गए। आस्था भी मुग्ध थी। सचमुच श्रीलता एक अच्छी अदाकारा थी। स्वामी ठीक कहता था। अचानक आस्था ने एलिस को घबराई अवस्था में

अपनी तरफ आते देखा। एलिस ने आस्था का हाथ पकड़ कर अपने साथ चलने को कहा। एलिस की घबराहट देख कर आस्था भी किसी विपदा से संशकित हो गई। कार में बैठते हुए उसने एलिस से उसकी घबराहट का कारण पूछा। एलिस बोली - '' पता नहीं। कार्ल ने फोन करके तुरंत सेंट्रल पार्क आने को कहा है। पता नहीं क्या बात है। मुझे डर लग रहा है।

सेंट्रल पार्क पहुँच कर वे जैसे ही कार से उतरे तो उन्होंने कुछ दूर पर काफी भीड़ देखी। वे लगभग भागते हुए भीड़ के पास पहुँचे। पर उन्होंने महसूस किया कि यहाँ का समा तो कुछ और है। धड़कते दिलों से जब वे भीड़ को चीर कर अंदर पहुँचे तो उनकी हर्ष मिश्रित चीख निकल गई। सामने चबूतरे पर उनके नन्हें-मुन्हें शैतान रंग-बिरंगी धोती-कुर्ता व पगड़ी पहने, पूरी तन्मयता के साथ अपने अनोखे साजों पर थाप देकर गीत-संगीत व नृत्य में मशगूल थे। विदेशी जमीन पर रामायण का पाठ करते नाचते हुए बच्चे इतने लुभावने लग रहे थे कि आस-पास से गुजरने वाले हर शख्स के पाँव वहीं ठिठक गए थे। उन विदेशियों को गाने का सार तो समझ में नहीं आ रहा था पर गीत इतना कर्णप्रिय था कि हर चौपाई के साथ लोग तालियों की थाप के साथ, साथ दे रहे थे। कार्ल और स्वामी भी बच्चों के साथ उनका साज बजा रहे थे। माहौल में इतना उत्साह था कि अनायास ही आस्था के पाँव भी धीरे-धीरे थिरकने लगे। उसे पता ही नहीं चला कि वह कब चबूतरे पर चढ़कर बच्चों के साथ कदम से कदम मिलाकर नाचने लगी थी। आस्था को नाचते देखकर एलिस,कार्ल व स्वामी भी खुशी से झूम उठे। एलिस ने ऊपर चढ़ कर जब आस्था को एहसास कराया कि वह नाच रही है तो आस्था की आँखों में आँसू आ गए। एलिस ने उसके आँसू पोछ कर उसे गले लगाया और फिर आस्था का हाथ पकड़ कर वह भी धुन पर नाचने लगी। स्वामी के चेहरे पर एक नई संतुष्टि थी। उसने आस्था से जो वादा किया था आखिर वह पूरा जो हुआ।

अगले दिन न्यूयार्क टाइम के कवरपेज पर उन सबकी नाचते हुए तस्वीर थी और साथ में बच्चों की काफी तारीफ भी। सेंट्रल पार्क में इकट्ठा लोगों ने बच्चों की प्रतिभा को काफी पसंद किया था। न्यूज पेपर देख कर टॉम पीटरसन खामोश था। उसने एलिस से उसे बच्चों से मिलवाने की ख्वाईश जताई।

आखिरकार '' भारत-महोत्सव'' का दिन आया। सारे टिकट हाथो हाथ बिक चुके थे। एलिस को एक और कलाकार मिल गयी थी - 'आस्था'। पूरे कार्यक्रम में दर्शकों ने बच्चों के प्रदर्शन का बेसब्री से इंतजार किया। जब बच्चे नाचे तो दर्शक भी झूम-झूम कर नाचे। उनकी तारीफ विदेशी जमीन से होते हुए भारतीय जमीन तक आई । आखिर 'भारत-महोत्सव' सफल था।

C.V. NETRALAYA

Viram Khand-2, Gomti Nagar,
Lucknow.

Centre of Comprehensive Eye Care

आवरण कथा

आशा

जलप्रलय की काल रात्रि। जब सारी सृष्टि नष्ट हो चुकी थी तब एक विशाल नौका पर एक मानव परिवार, सभी जीव जन्तुओं का एक युगल, सारी वनस्पति और जड़ी-बूटियाँ अपने पौध या बीज रूप में सुरक्षित थी। परन्तु क्या वह वास्तव में सुरक्षित थी? चारों ओर घोर अन्धकार... दूर-दूर तक केवल अनन्त राशि... पृथ्वी का चिह्न भी नही।

एकाएक प्रकाश फैलने लगा। आकाश में इन्द्र धनुष दृष्टिगोचर हुआ। एक कपोत जो दुबका बैठा था फड़फडा कर बाहर की ओर उड़ गया। मानव कपोत की सुरक्षा के लिए चिन्तित हो उठा। यदि कपोत नौका पर पुनः न लौट पाया तो..तो? परन्तु कुछ ही देर बाद कपोत नौका के मस्तूल पर आ कर बैठ गया। सभी ने देखा उसके चोंच में हरी घास थी। हरी घास... हरी घास का मतलब कहीं जमीन थी जहाँ से कपोत घास लाया। सभी के दिल में आशा जगी। पाल की दिशा ठीक कर नौका को उसी दिशा में प्रेरित किया और लो... धरती के दर्शन हुए। सभी प्राणी धरा पर उतरे। धरती को प्रणाम किया। सृष्टि का चक्र एक बार फिर चल पड़ा।

कपोत की चोंच में हरी दूर्वा से आशा का संचार हुआ। निश्चित मृत्यु से बचने की सम्भावना दिखी। उसी दिशा में कर्म किया गया जिसके फल स्वरूप आज हम यहाँ है। यह आशा '' सकारात्मक सोच'' की पहली सीढ़ी थी जिस पर चल कर मानव स्वयं और समस्त प्राणि और वनस्पति जगत को बचा सका।

यह घटना शायद कल्पित नहीं है। इसका ज़िक्र श्रीमद्भागवत में राजा सत्यवृत और ओल्ड टेस्टामेंट में हज़रत नूह के नाम से वर्णित है। इस प्रकार यह गाथा आर्यो के अलावा यहूदी क्रिश्चियन और मुस्लिम जगत में भी प्रचलित है। जलप्लावन केवल आर्यावर्त में सीमित न होकर पूर जम्बू द्वीप (एशिया) की ऐतिहासिक या पौराणिक घटना थी।

इसी आशा की धरा पर संकल्प, सत्कर्म, विश्वास - (अपने पर और ईश्वर पर भी) से ही सफलता मिलती है। इसके उलट यदि मस्तिष्क में निराशा का कुहासा है तो जितना भी प्रकाश हो या कितने ही इन्द्रधनुष क्यों न निकलें-सफलता के दर्शन होना असम्भव है। यदि डूबते मनुष्य ने जीने की आशा छोड़ दी तो वह बचाने वाले को भी अपने साथ डुबो सकता है।

ओल्ड टेस्टामेन्ट में कथा है कि जब पृथ्वी पर पाप बढ़ गया तो ईश्वर ने पुण्यात्मा हज़रत नूह को सन्देश दिया कि वह एक विशाल नौका निर्मित करायें और अपने परिवारों के साथ सभी जीवों का एक युगल अपने साथ ले लें। इसके बाद ईश्वर ने जल प्रलय द्वारा सभी पापियों समेत सारी सृष्टि का विनाश कर दिया। हज़रत नूह अपने परिवार (एक पुत्र को छोड़ कर) और साथ के सभी जीवों समेत सुरक्षित रहे। ईश्वर ने नूह को वचन दिया '' जब पाप का विनाश सम्पूर्ण होगा क्षितिज पर इन्द्र धनुष उदय होगा। मैं प्रलय रोक कर सृष्टि का चक्र चलाऊँगा।'' तब ही से हर धर्म में इन्द्र धनुष बड़े उत्साह से देखा जाता है।

युगाचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी

-सूर्य प्रसाद दीक्षित

हिन्दी सेवियों की दो कोटियाँ हैं। एक कोटि तो वह, जिसको अपने चिन्तन लेखन से निजी उत्कर्ष प्राप्त होता है। दूसरी कोटि वह, जिसके नेतृत्व में पूरे युग का योग क्षेम होता है। ऐसे युगाचार्यों में आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी का समग्र व्यक्तित्व-कृत्तित्व चिरस्मरणीय है। वस्तुतः उन्होंने अपने कवि-लेखक-व्यक्तित्व के निर्माण की अपेक्षा अपने युग के निर्माण में ही आत्मोत्सर्ग कर दिया था।

आचार्य द्विवेदी का सर्वोपरि वैशिष्ट्य है- उनकी दूरदर्शिता। उन्होंने बीसवीं सदी के उषाकाल में कई शताब्दी पूर्व के हिन्दी जगत् का स्वप्न देखा था। उन्हें भारतेन्दु की जो विरासत प्राप्त हुई थी, उसमें रीति युग के अनेक अवशेष भी विद्यमान थे। भारतेन्दु जी ने नवजागरण की अलख तो जगायी थी, किन्तु वे वैष्णव भक्ति भावना, नायक-नायिका भेद, षड्ऋतु वर्णन, बारहमासा, प्रगल्भ श्रृंगारिकता, बनारसी मस्ती और ब्रजभाषा के माधुर्य मोह से पूर्ण मुक्त नहीं हो पाए थे। फलतः आधुनिकबोध अर्थात् विज्ञान-तकनीकी, औद्योगीकरण, विश्वमानवतावाद, यांत्रिक सभ्यता, सर्वधर्म समन्वय, प्रजातांत्रिक व्यवस्था आदि का दर्शन हिन्दी में पूर्णतः प्रतिफलित नहीं हो पाया था। प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के बाद से उन्नीसवीं शती के अंत तक के इस विकास को हम मात्र 'संक्रान्तिकाल' ही कह सकते हैं, जिसमें एक ओर पौराणिकता का गहरा प्रभाव विद्यमान था और दूसरी ओर पाश्चात्य नवोन्मेष का संकेत भी। ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज और आर्य समाज ने उस युग को काफी कुछ दिशा-दृष्टि दी थी, किन्तु भारतेन्दु जी के अल्पकालिक नेतृत्व के कारण नवजागरण का पूर्ण कार्यान्वयन नहीं हो पाया था। द्विवेदी जी ने उसे दृढ़ता (कट्टरता) पूर्वक लागू किया। यद्यपि इस अति के कारण ब्रजभाषा की काव्य माधुरी को आघात लगा और कविता में इतिवृत्त, उपदेश, वर्णन, वक्तव्य आदि तत्त्वों की भरमार हो गयी, फिर भी आधुनिक युगबोध के अनुकूल हिन्दी साहित्य की एक नयी भूमिका निस्संदेह निर्धारित हो गयी।

द्विवेदी जी कालक्रम में लोकजागरण के पुरोधा सिद्ध हुए। उन्होंने स्त्री-चरित्रों को वरीयता दी। 'कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता' नामक लेख इसका प्रमाण है। उन्होंने सर्वप्रथम दलित चेतना की आहट सुनी। ' हीराडोम' की

प्रकाशित चिट्टी (१९१४) इस कथन का साक्ष्य है। उन्होंने ग्रामोदय को वरीयता दी। 'सम्पतिशास्त्र' जैसा ग्रन्थ गरीबी के अर्थशास्त्र का प्रथम प्रस्थान है। इसी के साथ-साथ द्विवेदी जी ने भारत की न्याय प्रक्रिया का प्रादर्श प्रस्तुत किया, विशेषतः स्वयं मुंसिफ सरपंच बन करके।

वस्तुतः द्विवेदी जी के समूचे व्यक्तित्व की चार विशेषताएँ दिखायी देती हैं- १. विजन २. लगन ३. त्याग ४. बहुज्ञता।

उन्होंने ३ दशकों तक अपना अभियान चलाया, एक 'मण्डल' गठित किया और एक नए हिन्दी जगत की नींव डाली, जिसको ''द्विवेदी युग'' कहा गया है।

युग प्रवर्तक के रूप में द्विवेदी जी ने पहला बीड़ा उठाया - ब्रज भाषा के स्थान पर खड़ी बोली के राष्ट्रव्यापी प्रयोग का और मानकीकरण का। दूसरा अभियान चलाया-मध्ययुगीन, मुख्यतः रीतिकालीन प्रवृत्तियों के परित्याग का। उन्होंने प्रथम बार एक बृहत्तर भारतीय राष्ट्रीय दृष्टि अपनायी, हिन्दी की 'जातीय संस्कृति' को पहचाना और आदर्श साहित्यिक पत्रकारिता का स्वरूप-संधान किया। द्विवेदी जी बहुभाषाविद् थे। वे कई विभिन्न क्षेत्रों में रह चुके थे और सांस्कृतिक परम्परा तथा वैज्ञानिक बोध, दोनों से सम्पन्न थे। वे साम्प्रदायिक, पौराणिक और आंचलिक, तीनों सीमाओं से मुक्त थे। तभी उन्हें एक बड़ी अर्न्तदृष्टि प्राप्त हो सकी और तभी वे एक नये युग की स्थापना तथा राष्ट्रभाषा की रूप रचना में सफल हुए।

द्विवेदी जी के इस युग प्रवर्तन की संवाहिका थी 'सरस्वती', जो हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता की सुमेरु है। इसने निरन्तर पच्चीस वर्षो तक दस करोड़ हिन्दी भाषी जनता का नेतृत्व किया। इस पत्रिका ने पाँच महत्वपूर्ण कार्य किये :-

(१) नवजागरण की चेतना का संचार

(२) नयी-नयी प्रतिभाओं की खोज

(३) अनेक नयी युग प्रवृत्तियों का शुभारम्भ

(४) हिन्दी भाषा का परिष्करण एवं मानकीकरण

(५) नयी-नयी विधाओं की शुरुआत

वस्तुतः हिन्दी साहित्य के इतिहास में 'द्विवेदी युग' का जो नामकरण हुआ है, उसका श्रेय इसी पत्रिका को है, अथवा यह कहें कि युगाचार्य द्विवेदी ने जो वैचारिक

एवं भाषिक आन्दोलन चलाया, उसका मूलाधार यही पत्रिका रही है।

'सरस्वती' का सम्पादन करते हुए द्विवेदी जी ने अपनी ध्येयनिष्ठता का असाधारण परिचय दिया। उन्होंने आरम्भिक दो वर्षों में पचपन लेख एवं छः कविताएँ स्वयं लिखी। १९१० के सम्पादकीय में उन्होंने घोषित किया है कि इस पत्रिका के बाद के अंको में लगभग चालीस पृष्ठ उन्होंने जुही (कानपुर) के मैदान में बैठकर लिखे थे। एक ही लेखक का नाम बार-बार न छपे, इसलिए द्विवेदी जी ने अपने कई छदम् नाम रख लिये थे; जैसे- गजानन गणेश गर्वखण्डे, भुजंगभूषण भट्टाचार्य, पर्यालोचक, कमल किशोर आदि। 'कल्लू अल्हैत' के नाम से वे अवधी-आल्हा लिखा करते थे। 'सुकवि किंकर' के नाम से वे व्यंग्यात्मक टिप्पणियाँ किया करते थे। इसमें उन्होंने अनेक स्तम्भ निर्धारित कर दिये थे; जैसे-विचार प्रवाह, सामयिक प्रसंग, मातृ मण्डल, विज्ञान की करामात, चारु चयन, आलोक चित्रण, कामिनी कौतूहल, पुस्तक परीक्षा, हास्य-विनोद, जाग्रत महिलाएँ, नावक के तीर, चिट्टी-पत्री आदि।

द्विवेदी जी के सम्पादकत्व का यह प्रताप था कि देश भर के हिन्दी सेवी और कलमकार उनके साथ जुड़ गये। उन दिनों 'सरस्वती' की यह साख थी कि जिसकी रचनाएँ इसमें छप जाती थीं, वह अपने नाम के आगे 'सरस्वती लेखक' जैसी मानद उपाधि लगा लेता था। इस प्रकार द्विवेदी जी ने लगभग पचास कवि-लेखकों का दल (सरस्वती मण्डल) तैयार कर लिया।

द्विवेदी जी का लेखन सर्वथा सोद्देश्य था। प्रायः वे आवश्यकतानुसार प्रायोजित रूप से लिखवाते थे। वे खड़ी बोली के सर्वांगीण विकास के कायल थे। ब्रजभाषा की काव्यरूढ़ियों, जैसे- समस्यापूर्ति और भौंड़ी रसिकता से उन्हें परहेज था। उनकी दृष्टि केवल साहित्य तक ही सीमित नहीं रही। वे अपने पाठकों को ज्ञान-विज्ञान की नवीनतम जानकारी देने के लिए सदैव तत्पर रहते थे। सचित्र सामग्री का प्रकाशन उनकी वरीयता थी। जनजागरण उनका संकल्प था। उन्हें संस्कृत, मराठी, बंगला, अंग्रेजी, फारसी आदि कई भाषाओं का ज्ञान था। हिन्दी भाषा को जनपदीय प्रयोगों से मुक्त करके उसे मानक राष्ट्रभाषा का रूप देना उनका लक्ष्य था। उन्होंने व्याकरण पर बहुत जोर दिया। अपने लेखकों-पाठकों को शब्द-शुद्धि और वाक्य-शुद्धि का अभ्यास कराया। एक-एक लेख में भाव-भाषागत इतने संशोधन द्विवेदी जी लगाते थे कि वह लेख अधिकांशतः उनका ही मौलिक

लेखन हो जाया करता था। संशोधनोपरांत वे उस रचना को सुधारार्थ मूल लेखक के पास भेजते थे। बड़े '' हार्डटास्क मास्टर'' थे द्विवेदी जी। उनकी इस प्रवृत्ति से कुछ लेखक उनसे असंतुष्ट भी हो गये थे। उन्होंने कई आक्षेपपूर्ण विवाद चलाये। 'अनस्थिरता' शब्द को लेकर एक विवाद वर्षो तक चलता रहा, किन्तु द्विवेदी जी परास्त नहीं हुए। वे एक आदर्श डिक्टेटर की तरह युग-संचालन करते रहे और हिंदी भाषा-संस्कार में जुटे रहे। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का प्रसिद्ध निबन्ध ''कविता क्या है?'' 'सरस्वती' में छपा। द्विवेदी जी ने 'आलोचक सम्राट' तक की व्याकरण एवं वर्तनीगत लगभग १ दर्जन त्रुटियों को सुधारा। उन्होंने मिश्रबंधु, बदरीनाथ भट्ट, श्याम सुन्दर दास, कामता प्रसाद गुरु आदि कई लेखकों को टोका। 'सरस्वती' के कई महत्त्वपूर्ण विशेषांक प्रकाशित किये; तथा कई विधाओं को जन्म दिया। कहानी विधा को मान्यता देने का श्रेय द्विवेदी जी की 'सरस्वती' को है। उन्होंने निरन्तर आधा-दर्जन प्रारम्भिक हिन्दी कहानियाँ प्रकाशित की। इनमें महत्त्वपूर्ण हैं :-

(१) बंगमहिला की कहानी 'इन्दुमती'

(२) प्रसाद की कहानी 'ग्राम'

(३) राजा राधिका रमण प्रसाद सिंह लिखित 'कानों में कँगना'

(४) गुलेरी जी की कहानी 'उसने कहा था'

(५) आचार्य शुक्ल कृत 'ग्यारह वर्ष का समय'

(६) प्रेमचंद की कहानी 'गुल्ली डंडा' आदि।

अस्तु, धीरे-धीरे आख्यायिका की जगह अंग्रेजी 'शार्ट-स्टोरी' से प्रभावित स्वतंत्र हिन्दी कहानी विधा स्थापित हो गयी। काव्य के क्षेत्र में भी द्विवेदी जी ने दूरदृष्टि का परिचय दिया। उन्होंने छायावाद के प्रति असहमति के बावजूद प्रसाद, निराला, पंत आदि को विशेष स्थान दिया। 'सरस्वती' में 'कामायनी' के कई सर्ग छपे हैं। निराला तो उनके ही परखे हीरे थे। अन्य अनेक गैर-छायावादी कवि जैसे- सनेही, शंकर, अनूप शर्मा अर्थात् समानांतर 'सनेही मण्डल' के रचनाकार तथा बच्चन, दिनकर आदि को भी उन्होंने बखूबी पहचाना। 'सरस्वती' में कलात्मक चित्रों की जो श्रृंखला उन्होंने प्रकाशित की, वह असाधारण है।

समग्रतः यह स्वीकार्य है कि द्विवेदी जी ने संपादकी शुचिता का आदर्श स्थापित किया। वे निरन्तर छः आगामी अंको की पेशगी व्यवस्था करके चलते थे। उनका तर्क था कि यदि सम्पादक बीमार हो जाये, तो भी पत्रिका समय पर पाठक के पास पहुँचनी चाहिए। उनके उन्नीस वर्षो के सम्पादन-काल में एक भी अपवाद नहीं मिलता कि ग्राहक के पास प्रत्येक माह के प्रथम सप्ताह में 'सरस्वती' न पहुँची हो। जब अपनी दीर्घकालिक अस्वस्थता के बाद 'सरस्वती' के सम्पादन से उन्होंने अवकाश ग्रहण किया, तो अपने उत्तराधिकारी सम्पादक को 'चार्ज' के रूप में छः आगामी अंको की प्रेस सामग्री भी सौंपी। द्विवेदी जी ने अपनी 'आत्मकथा' में सम्पादक कर्म की जटिलताओं की ओर संकेत करते हुए भय और प्रलोभन से दूर रहने के अनेक प्रकरण प्रस्तुत किये हैं।

वस्तुतः सम्पादन का प्रकर्ष है 'सरस्वती' और युग प्रवर्तन के आदर्श है - आचार्य द्विवेदी। उन्होंने ८ काव्य रचे, जिनमें श्रेष्ठ है - 'द्विवेदी काव्यमाला'। 'बलीवर्द' जैसी आरम्भिक खड़ी बोली कविताएँ उन्होंने हिन्दी को दी। उनके द्वारा नौ टकसाली अनुवाद प्रस्तुत किये गये हैं। विभिन्न विषयों पर उन्होंने सैकड़ों (लगभग ३००) ज्ञानवर्धक लेख लिखे हैं। साहित्यिक विषयों पर लिखे गए उनके लेख 'रसज्ञरंजन (१९३३) साहित्य सन्दर्भ, साहित्यसीकर (१९४९) प्राचीन कवि और पंडित (१९१८) आलोचना समुच्चय, 'सुकवि संकीर्तन, लेखांजलि, 'संचयन', विचार-विमर्श आदि में संगृहीत हैं। उन्होंने ''हिन्दी भाषा की 'उत्पत्ति' नामक ग्रंथ द्वारा इतिहास-लेखन की नींव डाली और 'कालिदास की निरंकुशता' द्वारा अपने समीक्षाकर्म की विशदता एवं सूक्ष्मता का प्रमाण प्रस्तुत किया।

इसके अतिरिक्त विज्ञान, तकनीक, धर्म, पुरातत्व और सामाजिक चिन्तन से ओतप्रोत उनके लेख 'विज्ञानवार्ता (१९२८), अद्‌भुत आलाप, वैचित्र्य चित्रण (१९२८) वनिता विलास, तरुणोपदेश आदि संग्रहों में समाहित है। उनके काव्यानुवादों में उल्लेखनीय हैं - गीत गोविन्दम्‌ गंगालहरी, श्रृंगारशतक, वैराग्य शतक, कुमार संभवम्‌, रघुवंशम्‌ आदि। किरातार्जुनीयम, महाभारत और बेकन के लेखों के अनुवाद भी बड़े उपयोगी सिद्ध हुए। ये एक दर्जन अनूदित ग्रन्थ उनके संस्कृत-अंग्रेजी ज्ञान तथा कवि-आचार्यत्व के साक्ष्य हैं।

युग प्रवर्तक होकर भी द्विवेदीजी ने मनोयोगपूर्व गाँव की सरपंची संभाली अर्थात्‌ साहित्य और जनजीवन को एकाकार किया और तीन दशकों तक हिन्दी

लेखकों एवं पाठकों का दिशा-दर्शन किया। आचार्य नंद दुलारे बाजपेयी ने बहुत सही लिखा है कि - द्विवेदी जी के लेख बहुत महत्त्वपूर्ण हैं- उनके द्वारा लगाये गये वे संशोधन, जिनके सहारे सैकड़ों कवि-लेखक निर्मित हुए और जिनके द्वारा हिन्दी का मानक स्वरूप विकसित हुआ।'

उनके द्वारा किए गए संशोधन का एक उदाहरण द्रष्टव्य है। मैथिलीशरण जी ने 'हेमंत' नामक एक कविता उन्हें भेजी, जिसकी आरम्भिक पंक्तियाँ थीं- ''ओढ़े दुसाले अति उष्ण अंग।

धारे गरूवस्त्र हिये उमंग। तो भी करे हैं सब लोग सी-सी।

हेमंत में हाय कँपे बतीसी''।।

द्विवेदी जी ने 'सरस्वती' १९०५ में इसे संशोधित करके इस प्रकार प्रकाशित किया-

''अच्छे दुशाले सितपीत काले।

हैं ओढ़ते जो बहुवित्त वाले।

तो भी नहीं बंद अमंद सी-सी।

हेमंत में हाय कँपती बतीसी।

जाहिर है।- ''धारे, गरू, हिये, करे हैं, कँपे'' जैसे शब्द उन्हें व्याकरण सम्मत नहीं लगे। उनकी इस प्रतिभा पर मुग्ध होकर गुप्त जी ने उन्हें गुरू माना और 'साकेत' की भूमिका में घोषित किया- ''करते तुलसीदास भी कैसे मानसनाद, 'महावीर' का यदि उन्हें मिलता नहीं 'प्रसाद'। वस्तुतः बीसवींशती की हिन्दी में उनका ही प्रसाद सर्वाधिक प्रतिफलित हुआ है।

सद्‌गुरु वचन

गुरू भी मनुष्य है। इस नाते वह चाहता है कि उसके जाने या अनजाने में कुछ ऐसे भी आचरण सम्भव है जो अनुकरणीय न हों। अतः वह शिष्य को सावधान करता है :–

यानि मया सुचरितानि त्वया उपास्यानि नो इतराणि।

गुरू शिष्य से कहता है कि तुम केवल मेरे शुभ चरितों का ही अनुसरण करो अन्यथा का नहीं।

फ्रैक्चर नेक फीमर
(कूल्हे की हड्डी का फ्रैक्चर)

आज से चालीस पचास साल पहले कूल्हे की हड्डी का टूटना एक अभिशाप ही था। बहुधा यह फ्रेक्चर वृद्धावस्था में ही होता है और प्रायः फिसल कर गिरने से या किसी चीज से टकराने से होता है। इसको फीमोरल फ्रैक्चर भी कहते हैं जो जांघ की हड्डी के ऊपरी हिस्से में होता है। प्रायः हड्डियों के सिरे (Ends) आस्टियोपोरेसिस के कारण खोखले हो जाते हैं तथा कमजोर हो जाते हैं और हल्की चोट लगने पर या गिरने पर हड्डी टूटने की सम्भावना बढ़ जाती हैं।

फ्रैक्चर नेक फीमर में विकसित देशों में भी ८२ वर्ष से ऊपर की आयु में मृत्यु दर लगभग २०% है।

चोट लगने या गिरने से फ्रैक्चर या तो फीमर के हेड (Head) में होता है या नेक या सब ट्रोकेन्ट्रिक। हेड तथा नेक के फ्रैक्चर इन्ट्रा कैप्सुलर फ्रैक्चर कहलाते हैं तथा इनके जुड़ने की सम्भावना काफी कम होती हैं बेसल तथा इन्टर ट्रोकेन्ट्रिक और सब ट्रोकेन्ट्रिक फ्रैक्चर जुड़ जाते हैं। सब कैप्टिल/मिड सरवाइकल (नेक के फ्रैक्चर) एवं हेड के फ्रैक्चर बहुत ही मुश्किल से जुड़ते हैं क्योंकि इनका रक्त संचार जिन रक्त नलिकाओं से आता है फ्रैक्चर होने पर वह नलिकायें ही फट जाती है और रक्त संचार समाप्त हो जाता है।

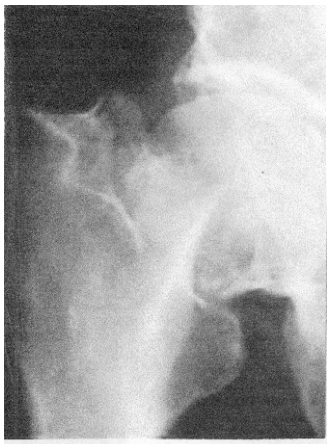

मिड सरवाइकल फ्रेक्चर नेक फीमर

फ्रैक्चर नेक फीमर युवा अवस्था तथा बचपन में (मेजर एक्सीडेन्ट्स में) भी हो सकता है।

लक्षणः- फ्रैक्चर नेक फीमर मे कूल्हे में दर्द होता है तथा रोगी अपना पैर ऊपर नहीं उठा पाता है, पैर सामान्य पैर से छोटा लगता है तथा कूल्हे के पास सूजन तथा थोड़ा सा ही दाबने पर दर्द होता है।

यदि उपरोक्त लक्षण गिरने से या चोट लगने से हो तो X-ray अवश्य करा लेना

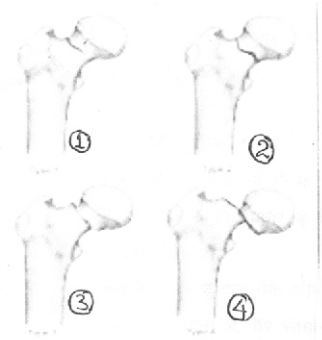

34

बेसल फ्रैक्चर नेक फीमर

1) इनकम्प्लीट / इंम्पैकेटेड फ्रैक्चर
2) मिड सरवाइकल अनडिसप्लेसड
1/2 बिना सर्जरी के भी ठीक हो सकते हे
3/4 में सर्जरी ही विकल्प है →

① Prosthetic Hip Replacement
② Total Hip Replacement

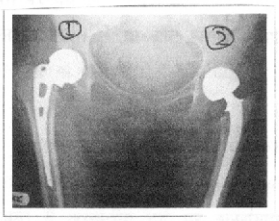

फ्रैक्चर इन्टरट्रोकान्ट्रेक फीमर ① x Ray
② सर्जरी द्वारा किया डी.एच.एस.

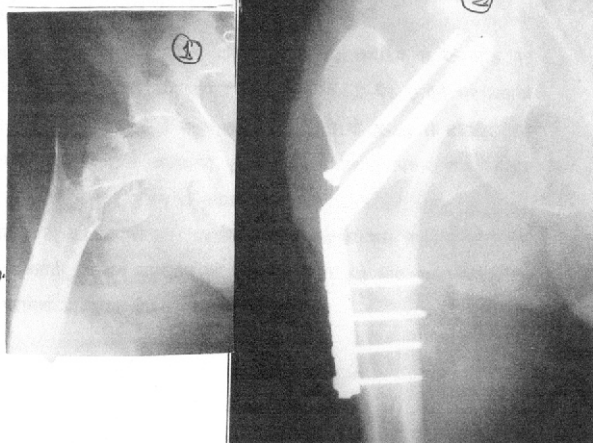

चाहिये तथा चिकित्सक से परामर्श लेलें और कोई भी मालिश या हड्डी बैठाने की कोशिश न करें।

(संस्मरण) - मुझे याद है इसी प्रदेश के एक पूर्व मंत्री (जो अब नहीं है) क्रिकेट खेलने के दौरान गिर गये थे। उनके साथियों ने क्रिकेट स्थल पर ही उनके पैर की खूब खींच तान की अन्त में असहनीय दर्द पर बलरामपुर चिकित्सालय में भर्ती कराया गया। उनके कई ऑपरेशन हुये लगभग दो साल में उनकी हड्डी जुड़ पायी तथा पैर छोटा हो गया।

इम्पैक्टेड फ्रैक्चर नेक फीमर में केवल हल्का दर्द तथा कूल्हें के जोड़ पर दाबने से दर्द होता है। न ही पैर छोटा दिखता है न ही पैर उठाने पर ज्यादा परेशानी होती है। ऐसी स्थिति में बहुत अच्छी क्वालिटी के X-ray से हड्डी टूटने का पता चल पाता है तथा सावधानी न बरतने पर तथा उपचार न होने पर (Impacter) इम्पैक्टेड फ्रैक्चर अलग हो जाता है।

किसी हड्डी की बीमारी होने पर जैसे ट्यूमर/इन्फेक्शन में बिना चोट लगे ही हड्डी टूट जाती है। इन को ध्यान में रखते हुये चोट लगने पर अस्थि शल्यक से परामर्श आवश्यक है।

फ्रैक्चर नेक फीमर एक ऐसा फ्रैक्चर है जिसे जितनी जल्दी हो सके उपचारित किया जाना चाहिये। ज्यादा देर करने पर और परेशानियां बढ़ जाती है। उपचार से पहले कुछ आवश्यक जांचे अवश्य करा लेनी चाहिये जैसे हीमोग्लोबिन, टोटल/डिफरेन्शियल काउन्ट/ब्लड यूरिया, क्रियेटिनिन/ग्लूकोज/सीरम सोडियम पोटेशियम/इलेक्ट्रोकार्डियोग्राम।

आजकल सर्जन ऑपरेशन से पहले आस्ट्रेलिया एन्टीजेन तथा एच०आई०वी० की भी जांच करा लेते हैं।

उपचार-

(क) यदि हड्डी हटी नहीं है तो छोटे बच्चों में फ्रैक्चर प्लास्टर हिप स्पाइका से ठीक हो जाता है।

(ख) बड़े बच्चों में पिन से तथा युवा अवस्था में कैनुलेटेड स्क्रू/डी०एच०एस० से फ्रैक्चर को ठीक किया जाता है।

(Arm में देख कर जोड़ा जाता है)

(ग) वृद्धावस्था में फ्रैक्चर नेक फीमर (सब कैपिटल/ मिड सरवाइकल) में हिप

रिप्लेसमेन्ट से उपचार किया जाने लगा है। इससे रोगी दूसरे तीसरे दिन से सहारे से चलने लगता है।

बहुत ही गरीब गांव के लोगों में इक्सीजनल आर्थोप्लस्टी तथा Displacement Osteotomy से भी इलाज किया जा सकता है।

खतरे -

१. यदि फ्रैक्चर नेक फीमर नहीं उपचारित किया गया तो (बच्चों/युवा अवस्था यह अवधि एक दिन से कम की होनी चाहिये) Head फिर से ठीक हो जाता है।

२. वृद्धावस्था में Blood Urea बढ़ जाती है। रीनल फेलयोर का खतरा रहता है।

३. ज्यादा दिन लेटने से (Bed Sores) घाव हो जाते हैं।

४. इलेक्ट्रोलाइट इम्बैलेन्स हो जाता है।

आजकल शल्य चिकित्सा में बहुत प्रगति हो गयी है और हर प्रकार के फ्रैक्चर की सर्जरी करके ठीक कर दिया जाता है। स्टेम सेल्स पर शोध चल रहा है, वह दिन दूर नहीं जब मानव के जोड़ स्टेम सेल्स से विकसित कर टूटने पर उसी स्थान पर लगा दिये जायेंगे।

पर एक प्रश्न अभी भी अनुत्तरित है कि गरीब एवं साधनहीन दुर्गम आदिवासी बनवासी लोगों को यह सारी सुविधायें कहां से मिलेगी जिन्हें यह अभी भी नसीब नहीं है। उसके लिये हड्डी जोड़ने वाले बोन सेटर, हड्डी बैठाने वाले हर समय उपलब्ध है तथा यह लोग लाभ कम, नुकसान ज्यादा ही करते हैं और इन पर प्रशासन का कोई अंकुश नहीं है।

हड्डी न टूटे, अपनी हड्डियों को मजबूत रखने के लिये नियमित व्यायाम, संतुलित आहार तथा समय-समय पर अपनी जांच करवाते रहें, घर में कहीं भी फिसलन न होने दें तथा सम्हल कर चलें।

डा० आर०के० मिश्र

रूपसि रूप निहारा होगा

बसन्त राम दीक्षित 'बसन्त', पी.ई.एस.
अवकाश प्राप्त अधीक्षण अभियन्ता, सिंचाई, उ.प्र.

दर्पण के समझ
जब तुमने
अपना रूप
सँवारा होगा
तब नभ से
शशि ने छिप छिप कर
रूपसि रूप निहारा होगा

(१)

घर आँगन में
देख तुम्हें जब
चन्द्र रश्मि
शरमाई होगी
गंध और स्पर्श
को पाकर
इठलाई पुरवाई होगी

तब शशांक ने
कहा गगन से
ऐसा कोई न
तारा होगा
दर्पण .....

(२)

मदनातुर
लोचन को छूकर
रात्रि और गहराई होगी
अधरों को छू
चैत चाँदनी
रह रह कर
हर्षाई होगी

हर धड़कन ने
हौले हौले
प्रिय को कहीं
पुकारा होगा
दर्पण के.....

(३)

दूर दूर रह कर
प्रियतम से
संग संग
चलता है कोई
हृदय रुलाता
किन्तु नयन में
हास लास
भरता है कोई

भुजपाशो में
भरे हुये फिर
स्वप्न ने कहीं
दुलारा होगा
दर्पण के....

क्या-क्या आशाएँ हैं अंतरिक्ष से

काली शंकर
अवकाश प्राप्त वैज्ञानिक
इसरो एवं नासा

अंतरिक्ष हमारे ज्ञान का सबसे महत्त्वपूर्ण भंडार है। यही वह क्षेत्र है, जिसमें मनुष्य चारों ओर अपनी सीमाओं को बढ़ा सकता है। अंतरिक्ष से अधिकाधिक लाभान्वित होने के लिए यह आवश्यक है कि हमें अंतरिक्ष के विषय में समुचित जानकारी हो इसके लिए यह आवश्यक है कि अंतरिक्ष की अधिक से अधिक खोज की जाए तथा रॉकेटों, प्रोबों और अंतरिक्ष यानों की मदद से ग्रहों और सौर तंत्र से परे अन्य क्षेत्रों की खोज की जाए। वास्तव में अंतरिक्ष की खोज के साथ ही अंतरिक्ष उपयोग का दूसरा पहलू जुड़ा हुआ है। अंतरिक्ष की खोज में मनुष्य काफी वर्षो से लगा हुआ है तथा समय के साथ अंतरिक्ष अन्वेषण के तरीकों में काफी परिवर्तन हुए हैं। मनुष्य ने अब तक कई बार अंतरिक्ष की यात्राएँ की हैं तथा हर बार नई-नई बातों की जानकारी प्राप्त करने की कोशिश की है।

कैसा है यह अंतरिक्ष

अंतरिक्ष अनेक कुतूहलपूर्ण बातों से भरा हुआ है तथा इन्हीं कुतूहलपूर्ण चीजों ने वैज्ञानिकों को काफी वर्षो से अंतरिक्ष की ओर खींच रखा है। अंतरिक्ष अनेक किरणों, चुंबकीय क्षेत्रों से भरा पड़ा है तथा ये चीजें अंतरिक्ष में बड़े विचित्र तरीके से घूमती हैं। अंतरिक्ष में सूर्य की अपनी एक अहम भूमिका रहती है। इसकी ग्यारह साल की सौर सक्रियता का काल अंतरिक्ष में अनेक परिघटनाओं को जन्म देता है।

अंतरिक्ष में पूरी तरह से निर्वात अथवा शून्य है। यह निर्वात पृथ्वी पर आवश्यकता पड़ने पर लाखों रुपए खर्च करके प्रयोगशालाओं में बनाया जाता है। औद्योगिक दृष्टि से निर्वात बड़ा उपयोगी है। यहाँ पृथ्वी का गुरुत्व नगण्य हो जाता है, इसलिए अंतरिक्ष में मनुष्य अपने को बड़ा असामान्य पाता है। अंतरिक्ष के वातावरण में कई पदार्थों की क्षमता में परिवर्तन हो जाता है। यहाँ पदार्थों का

ऊर्ध्वपातन (सब्लीमेशन) होता है। जैसे कपूर को खुला छोड़ देने से उड़ जाता है, उसी प्रकार अंतरिक्ष में कुछ धातुओं का ऊर्ध्वपातन होता है। इसलिए अंतरिक्ष यानों के ढाँचे कुछ खास धातुओं के मिश्रण से बनाए जाते हैं। सामान्य रूप से पृथ्वी में दो उच्च वोल्टेज वाले तारों को काफी दूर-दूर रखा जाता है, लेकिन अंतरिक्ष में इन तारों को काफी नजदीक रखा जा सकता है।

अंतरिक्ष में सूर्य से निकलने वाले अनेक विकिरण मौजूद होते हैं, जो मनुष्य के लिए बड़े खतरनाक होते हैं। इसके लिए मनुष्य को अंतरिक्ष में अनेक सुरक्षात्मक कदम उठाने पड़ते हैं। अंतरिक्ष में लगातार उल्काएँ टूटती रहती हैं तथा ये उल्का पिंड अंतरिक्ष यात्रियों के लिए खतरनाक हो सकते हैं। ये किसी अंतरिक्ष यान से टकराकर उसे नष्ट कर सकते हैं।

मनुष्य के लिए अंतरिक्ष का उपयोग

मनुष्य के लिए अंतरिक्ष कई प्रकार से उपयोगी हो सकता है। मनुष्य के लिए अंतरिक्ष की उपयोगिता को निम्न चार भागों में बाँटा जा सकता है-

(क) पृथ्वी से नजदीक अंतरिक्ष क्षेत्र का उपयोग - पृथ्वी से नजदीक क्षेत्र अंतरिक्ष ने मनुष्य को काफी लाभान्वित किया है। इनमें पहला स्थान संचार का आता है। अंतरिक्ष में स्थापित संचार उपग्रहों ने सारी दुनिया में संचार व्यवस्था स्थापित करने में एक बड़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज हम दुनिया के किसी भी कोने से बड़ी आसानी से बातचीत कर सकते हैं। और तो और, आज विश्व की अधिकांश संचार व्यवस्था उपग्रहों पर ही निर्भर करती है। संचार उपग्रहों के द्वारा अनेक टेलीफोन, टेलीविजन, मौसम की सूचना, व्यवसायिक सूचना विश्व के किसी भी कोने में भेजी जा सकती है।

पृथ्वी के समीप अंतरिक्ष के दूसरे उपयोग में मौसम विज्ञानी सेवाएँ प्रदान करना है। मौसम विज्ञानी उपग्रह पूरे विश्व के मौसम का अवलोकन बड़ी आसानी से कर सकते हैं। ये बादलों के फोटो लेकर उनसे संबंधित तमाम आँकड़ों की जानकारी हमें बड़ी शीघ्रता से दे सकते हैं। ये मौसम विज्ञानी उपग्रह बड़े-बड़े चक्रवातों और तूफानों की पूर्व जानकारी देकर व्यापक संपत्ति-विनाश और जन-हानि को रोकने में बड़ी उपयोगी भूमिका निभाते हैं। कुछ अन्य प्रकार के

उपग्रह भी अंतरिक्ष में छोड़े गए हैं, जिनके द्वारा पृथ्वी के गर्भ में छिपे खनिज पदार्थों का पता लगाया जाता है। इन उपग्रहों को सुदूर संवेदन उपग्रह कहते हैं। इन उपग्रहों से यह भी पता लगाया जा सकता है कि किस क्षेत्र की फसलों में रोग लग गया है तथा किस क्षेत्र में फसल निरोग है। उसी के अनुसार सुरक्षात्मक कदम उठाए जा सकते हैं।

पृथ्वी के समीप के अंतरिक्ष के कई क्षेत्रों में कई कक्षीय प्रयोगशालाएँ भी स्थापित की जा सकती हैं, जिनके द्वारा अनेक प्रकार के प्रयोग किए जा सकते हैं।

(ख) अंतरिक्ष के चिकित्सा संबंधी उपयोग- अंतरिक्ष का पर्यावरण जैविक और औषधि विज्ञान के लिए बड़ा उपयोगी हो सकता है। अंतरिक्ष के चिकित्सा संबंधी उपयोग का आधार यह है कि अंतरिक्ष के शून्य गुरुत्व पर्यावरण में किसी मनुष्य का भार पृथ्वी की अपेक्षा बहुत कम हो जाता है। लंबे अरसे के लिए शून्य या सूक्ष्म गुरुत्व परिस्थितियों के मानव शरीर पर पड़ने वाले प्रभावों के विषय में अब भी बहुत थोड़ा ही पता लग पाया है। सूक्ष्म गुरुत्व परिस्थिति में शरीर काफी तनावों से भौतिक रूप से मुक्त हो जाता है। चिकित्सा संबंधी उपयोगों के लिए अंतरिक्ष में एक ऐसे अस्पताल का निर्माण किया जा सकता है, जिसमें गुरुत्व के भिन्न-भिन्न स्तर उपलब्ध होंगे तथा ये परिवर्तनीय गुरुत्व स्तर एक स्वस्थ व्यक्ति को भरपूर भौतिक आराम प्रदान करेंगे। मानव शरीर का प्रत्येक अंग आराम कर सकता है, लेकिन हृदय आराम नहीं कर सकता। हृदय केवल अंतरिक्ष के पर्यावरण में ही आराम कर सकता है, जिसका मुख्य कारण है सूक्ष्म गुरुत्व। इस प्रकार हृदय को आराम देने के लिए अंतरिक्ष बहुत उपयोगी है।

(ग) अंतरिक्ष के औद्योगिक उपयोग - अंतरिक्ष का पर्यावरण औद्योगिक उपयोगों के लिए बड़ा महत्त्वपूर्ण है। अंतरिक्ष में चीजों में किसी प्रकार का जंग नहीं लगता तथा निर्वात होने के कारण धूल या मिट्टी जैसी गंदगी नहीं होती। उच्च कोटि के धातु और मिश्र धातुओं का निर्माण केवल अंतरिक्ष में ही संभव है। इसी प्रकार शत-प्रतिशत शुद्धतावाली औषधियों का निर्माण भी अंतरिक्ष में ही संभव है। इसका कारण यह है कि अंतरिक्ष में दो पदार्थों या दो धातुओं को एक साथ गरम करने के लिए किसी प्रकार के पात्र की आवश्यकता नहीं पड़ती। इस प्रकार पात्र की अशुद्धता मिश्र धातु अथवा औषधि में नहीं जा पाती। इसके अलावा निर्वात

वायुमंडल के कारण कोई भी हवा का बुलबुला धातु के अंदर प्रवेश नहीं कर पाएगा। अंतरिक्ष में ऐसे-ऐसे इलेक्ट्रॉनिक अवयवों का निर्माण संभव है, जो कंम्प्यूटर की गतिशीलता को कई गुना बढ़ा सकते हैं। इस प्रकार के अवयवों का निर्माण पृथ्वी पर मुश्किल है। सूक्ष्म गुरुत्व होने के कारण अंतरिक्ष के पर्यावरण में बड़ी-बड़ी मशीनें स्थापित की जा सकती हैं। यहाँ पर मशीनों के विभिन्न अवयवों के बीच घर्षण नगण्य होता है। अंतरिक्ष का पर्यावरण बहुत ही स्वच्छ होता है। अंतरिक्ष के उपर्युक्त सारे गुण औद्योगिक क्रियाओं के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। पिछले कुछ अंतरिक्ष स्टेशनों - 'मीर' और 'सोल्यूट' में इस प्रकार की कुछ औद्योगिक क्रियाएँ संपन्न की जा चुकी हैं।

(घ) चंद्रमा के उपयोग - चंद्रमा पृथ्वी के समीप है, इसलिए अंतरिक्ष अन्वेषण की दृष्टि से इसका उपयोग एक वैज्ञानिक प्रयोगशाला अथवा एक मध्यस्थ स्टेशन की भाँति किया जा सकता है। इसमें पर्यावरण का सूक्ष्म गुरुत्व बड़ा उपयोगी हो सकता है। अनेक अंतरग्राही उड़ानों वाले मिशनों को चंद्रमा से छोड़ा जा सकता है। इस प्रकार ये अंतरग्रही उड़ानें काफी सस्ती होंगी। सौर-तंत्र की अन्य जटिलताओं का पता लगाने के लिए चंद्रमा को प्रशिक्षण और जाँच केन्द्र के रूप में प्रयोग में लाया जा सकता है। चंद्रमा के खनिजों का प्रयोग भी अनेक औद्योगिक कार्यो के लिए किया जा सकता है। अपोलो मिशनों के द्वारा इस दिशा में काफी कार्य हो चुका है।

इस प्रकार, अंतरिक्ष मानव के लिए बड़ा उपयोगी है तथा अपनी महान् उपयोगिता के कारण मनुष्य के लिए हर समय अन्वेषण का केन्द्रबिन्दु बना रहेगा।

बहस से बचें

बहस से बचने का सबसे अच्छा उपाय हे कि बहस में पड़ा ही न जाय। बहस में जीत किसी की भी नहीं होती। जो बहस जीतता है वह अपने में खुश अवश्य होता है परन्तु वह एक अच्छा मित्र या हितैषी अथवा ग्राहक खो सकता है। बहस मात्र झूठे अहंकार और इस मान्यता से कि केवल मैं ही जानता हूँ की वजह से प्रारम्भ होती है। परन्तु अन्त में कुढ़न और अन्तर्मन की जलन ही छोड़ जाती है। कभी स्वतः हार स्वीकार कर चुप होने वाला ही विजयी होता है। अतः बहस से बचें।

सिय सोभा नहिं जाइ बखानी

प्रो० सरला शुक्ल
पूर्व विभागाध्यक्ष हिन्दी
लखनऊ विश्वविद्यालय

गोस्वामी तुलसीदास ने श्री राम की शक्ति जग जननी सीता का रूप-सौन्दर्य कई स्थानों पर वर्णित किया है किन्तु सर्वत्र उनकी रूपराशि के वर्णन में एक मर्यादा का ध्यान रखा है। वास्तव में वे बारबार यही स्मरण दिलाते है कि

''सिय सोभा नहिं जाइ बखानी''।

सर्वप्रथम पुष्पवाटिका प्रसंग में जब सीता का अवतरण होता है तब भी कवि यही कहकर संतुष्ट हो जाता है कि -

''जनु बिरंचि सब निज निपुनाई, बिरचि बिस्व कहँ प्रगट देखाई
सुन्दरता कहुँ सुन्दर करई, छबिगृह दीपशिखा जनु बरई''

सीता का सौन्दर्य अनुपमेय है। विश्व में कोई प्राणी ऐसा नहीं जो उस रूपराशि पर विमोहित न हो वे जगत जननी हैं जब उनका पदार्पण स्वयंबर की रंगभूमि पर होता है तो कवि-हृदय मातृशक्ति के सम्मुख नतमस्तक हो जाता है।

'' सोह नवल तनु सुन्दर सारी। जगत जननि अतुलित छबिभारी।
रंगभूमि जब सिय पगुधारी। देखि रूप मोहे नर नारी।। ''

तुलसी की सीता अनिन्द्य एवं अपूर्व सुन्दरी हैं। मातृभाव होने के कारण उनका सौन्दर्यांकन मर्यादित तथा आदर्श है। वे जगदम्बा सीता में अप्राकृत, दिव्य चिन्मय रूप के दर्शन करते हैं। वस्तुतः काव्य में प्रयुक्त कोई भी उपमा उनके रूप सौन्दर्य को पूर्णतः वर्णित नहीं कर सकती। इस जगत की त्रिगुणात्मक एवं मायिक उपमायें उस अलौकिक रूपराशि के चित्रण में तुच्छ, हीन एवं सर्वथा असमर्थ हैं। कारण संसार में कोई ऐसी रूपवती रमणी है ही नहीं जिसके साथ सीता के सौन्दर्य की उपमा दी जाय। रामचरितमानस में कवि का कथन है -

''सिय सोभा नहिं जाइ बखानी। जगदंबिका रूप गुनखानी।।
उपमा सकल मोहि लघु लागी। प्राकृत नारि अंग अनुरागी।।
सिय बरनिअ तेहि उपमा देई। कुकवि कहाइ अजसु को लेई।।
जौं पटतरिअ ताय सम सीया। जगअस जुबति कहां कथनीया।।''

कवि के इस कथन में रूप-सौन्दर्य का बिम्ब ग्रहण कराने के साथ मर्यादा की

सफल अभिव्यक्ति है। संसार की स्त्रियों की तो बात ही क्या, श्रेष्ठ देवांगनायें भी उनकी रूप-सुषमा के समझ नगण्य हैं। कवि सीता-सौन्दर्य के उपयुक्त उपमान 'गिरा (सरस्वती, रमा, पार्वती अैर रति में) भी नहीं पाता। रामचरितमानस में ही एक स्थल पर कवि लिखता है।

''गिरा मुखर तन अरघ भवानी, रति अति दुखित अतनु पीत जानी।।
बिष बारुनी बंधु प्रिय जेही, कहिअ रमा सम किमि बैदेही।।

कठिन समस्या है कि सीता के रूप की उपमा किससे की जाय बाल्मीकि ने सीता की उपमा कमलरहित लक्ष्मी से दी है :-

''तामुत्तमां त्रिलोकानां पद्महीनमिव श्रियम्।।

किन्तु तुलसी की दृष्टि में सामान्य साधनों से उत्पन्न वह लक्ष्मी तो नगण्य है ही, यदि उनकी कल्पनानुसार एक विशिष्ट प्रक्रिया से दिव्य लक्ष्मी का उद्भव हो सके तो वह सीता के सौन्दर्य की तुलना कर सकेगी। इसमें भी उन्हें सन्देह है :-

'' जौ छवि सुधा पयोनिधि होई। परम रूपमय कच्छपु सोई।।
सोभा रजु मंदरु सिंगारू। मथैपानि पंकज निज मारू।।
एहि बिधि उपजै लच्छि जब सुन्दरता सुख मूल।
तदपि सँकोच समेत कवि कहहिं सीय सम तूल।।

बाल्मीकि ने सीता को ''पूर्णेन्दु सहशानना'' कहा है परन्तु तुलसी के राम सीता के मुख-सौन्दर्य के समझ चन्द्रमा को मलिन एवं निस्तेज पाते हैं; क्योंकि वह कलंक युक्त एवं अवगुणों का आकार है। देखिये कथनचातुर्य में रूपमाधुर्य को विजयपताका कैसी फहरा रही है:-

जनम सिंधु पुनि बंधु बिषु, दिन मलीन कलंक।
सिय मुख समता पावकिमि, चदु बापुरो रंक।।
घटई बढइ बिरहिनि दुखदाई। ग्रसइ राहु निज संधिहि पाई।।
कोक सोकप्रद पंकज द्रोही। अवगुन बहुत चन्द्रका तो ही।।
बैदेही मुख पटतर दीन्हें। होइ दोषु बड़ अनुचित कीन्हें।।

आदि कवि बाल्मीकि ने सीता की अप्रतिम रूपराशि का वर्णन अनेक स्थलों पर किया है। उनके अनुसार वे रूप में देवांगनाओं के समान थी और मूर्तिमयी लक्ष्मी सी प्रतीत होती थी :-

'' देवताभि समा रूप सीता श्रीरिव रूपिणी ''

शूपर्णखा रावण से सीता का सौन्दर्य वर्णित करते हुये यहाँ तक कहती है कि सीता जिसकी भार्या हो और वह हर्ष में भरकर जिसका आलिंगन करें, समस्त लोक में उसी का जीवन इन्द्र से भी अधिक भाग्यशाली हैः-

'' यस्य सीताभवेदभार्या यंच दृष्टा परिष्वजेत्।
अभिजीवेत् स सर्वेषु लोकेष्वपि पुरन्दरात्।''

इसी प्रकार रीतिकालीन कवि केशव रामचन्द्रिका में रामके साथ वन पथ पर जाती हुई सीता के सौन्दर्य का सटीक वर्णन एक ग्रामबाला के मुख से अनन्वयालंकार के माध्यम से करते हैं। वे कहते हैं कि सीता का मुख न तो चन्द्रमा है, न कमल ही, क्योंकि चन्द्रमा केवल रात्रि में प्रकाशित होता है और कमल केवल दिन में प्रफुल्लित रहता है किन्तु सीता का मुख तो अहर्निशि आनन्ददायक है अतः सीता के मुख की उपमा स्वयं सीता का मुख ही है :-

''वासर ही कमल, राजनि ही चन्द्रमुख
वासर हू रजनि विराजै जग वंदरी।
देखे भावै मुख अनदेखेई कमल चंद
ताते मुख मुखै सखी कमलै न चंदरी।।

राजा जनक की वाटिका में श्रीराम जनकसुता के अलौकिक रूप माधुर्य को देखकर मुग्ध हो जाते हैं। मानस में गोस्वामी तुलसीदास जी लिखते हैं :-

''देखि सीय सोभा सुखु पावा। हृदय सराहन वचनुन आवा।।
जासु बिलोकि अलौकिक सोभा। सहज पुनीत मोर मनु छोभा।।

इसी भाव को ''प्रसन्नराघव'' का रचनाकार इस प्रकार वर्णन करता है कि सीता का अर्निवचनीय दर्शन, नव-यौवन का सर्वस्व, भोग का आश्रय स्थान, नेत्रों का सौभाग्य यौवनमद के बिलास का सुख, जगत का सार, जन्म लेने का सुफल, कामदेव का विशिष्ट स्थान स्वतः मेरा हृदय, रागवृत्ति की चरम परिणति और श्रृंगार के रहस्य के उद्घाटन का आधार हो रहा हैः-

'' सर्वस्वं नवयौवनस्य भवनं भोगस्य भाग्यं दृशां।
सौभाग्य मदविभ्रमस्य जगतः सारं फलं जन्मनः।।
साकूतं कुसुमायुधस्य, हृदयं रामस्य तत्वं रतैः।
श्रृंगारस्य रहस्यमुत्पलदृशस्तत् किंचिदालोकितम्।।

हनुमन्नाटक में सीता की सुकुमारता का वर्णन करते हुये रचनाकार का कथन हे कि वह घोर कंटकाकीर्ण वन में नंगे पांव कैसे विचरण कर सकेंगी। सीता की सुकुमारता से द्रवित हो हनुमन्नाटककार अत्यंत मार्मिक चित्र प्रस्तुत करता है :-

'' सघः पुरीपरिसरेऽपि शिरीषमृदी,
सीता जवात् त्रिचतुराणि पदानि गत्वा।
गन्तव्यमस्तिकियदित्य सकृद्धवाणा,
रामाश्रुणः कृतवती प्रथमावतारम्।।

रामचरितमानस के रचनाकार अपनी कृति कवितावली में इसी भाव को निम्न पंक्तियों में वर्णन करते हैंः-

''पुरतें निकसीं रघुवीर वधू, धरि धीर दये मग में डग द्दै।
फलकों भरि भालकनीं जल की, पुट सूख गये मधुराधर वै।।
फिर झूमति हैं, चलनो अब केतिक, पर्णकुटी करिहौ कित ह्वै।
तिय की लखि आतुरता पिय की अंखियाँ अति चारु चलीं जलच्वै।

वास्तव में सीता का सौकुमार्य एवं रूप सौन्दर्य, अलौकिक अद्वितीय, अप्रतिम तथा अवर्णनीय है और गोस्वामी तुलसीदास का कथन कि 'सिय सोभा नहिं जाइ बखानी'' अक्षरशः सत्य है।

पत्रिका तथा वेबसाइट में विज्ञापन हेतु दरें

ब्लैक एंड व्हाइट फुल पेज	रु0 2000 मात्र
ब्लैक एंड व्हाइट हाफ पेज	रु0 1000 मात्र
कलर्ड फुल पेज	रु0 4000 मात्र
कल्र्ड हाफ पेज	रु0 2000 मात्र

सम्पर्क सूत्र : **''सम्पादक कान्यकुब्ज वाणी''**
18/378, इन्दिरा नगर, लखनऊ–226016
मो0 : 9415469561
ई0मेल : : dsumeshdp@rediffmail.com

ड्राइंगरूम वार्ता

डा० डी०एस० शुक्ल

बात उन दिनों की है जब मैं रायबरेली जिला अस्पताल में सर्जन के पद पर तैनात था। उस समय तक दूरदर्शन का प्रवेश सभी घरो में नही हो पाया था। समाज के सो काल्ड प्रबुद्ध लोग शाम होते ही एक दूसरे से मिलने निकल पडते थे। उनका सबसे चहेता स्थान लक्ष्मी होटल हुआ करता था जिसके मालिक पं साधू जी पांडे कांग्रेस पार्टी से बीसियो वर्ष से जुड़े थे और इनके होटल में प्रथम श्रेणी के नेताओं का जमावड़ा लगता था। गैर राजनैतिक लोग अपने इष्ट मित्र और नातेदारों के यहाँ पहुँच लेते थे। शहर का तीसरा उन्मुक्त वर्ग शहर के अस्पताल चौराहे पर एकत्र होते थे। शहर के प्रौढ़ वर्ग इसको ठेलुहा कार्नर भी कहते थे। द्वितीय वर्ग के लोगों की मीटिंग कभी मेरे ड्राइंगरूम में हो जाती थी।

एक दिन शामको कुछ वकील साहबान और मेरे सहकर्मी डाक्टर साहबान बैठे हंसी विनोद कर रहे थे कि स्थानीय डिग्री कॉलेज के साइकालोजी के प्रोफेसर भी आ गए। अख्खाह दुआ सलाम के बाद जब सभी सोफानशीन हुए तो एक विनोदी वकील साहब ने प्रोफेसर साहब को छेडने के अंदाज में कहा ''अरे प्रो० साहब आप की साइकोलाजी में फ्राएड महराज का बड़ा योगदान है। वह हर गुत्थी को सेक्स के एन्गल से समझाते है। अभी उसी रोज कोई कह रहा था कि आप लोग बेटे के मातृ प्रेम को भी इसी दृष्टि से परिभाषित करते है। पता नही इसको कोई काम्पलेक्स का नाम देते है।''

हम सभी लोग वकील साहब के इस धृष्टता की हद तक तीखे और सीधे प्रश्न से कुछ असहज हो गए। फिर भी हम सभी परिहास के आनन्द की आशा से प्रोफेसर साहब की ओर देखने लगे। हम लोगो की एक्सपेक्टेशन के विरूद्ध उनके चेहरे पर मुस्कान आई और वह बहुत आत्म विश्वास के साथ इन्होंने सिगरेट सुलगाई पर मेरे चेहरे के भाव देख कर तत्काल बुझाते हुए प्रश्नकर्ता की ओर देखते हुए बोले आप सही कह रहे हैं। मुझे आश्चर्य हो रहा है कि वकालत ऐसे पेशे में रहते हुए भी आपकी मनोविज्ञान तक पहुंच है। हमारे यहाँ इसे ग्रन्थि को इडीपस काम्प्लेक्स कहा जाता है। इसके पीछे एक ग्रीक पौराणिक कथा है। यदि आप सुने तभी आपको समझ आएगा कि यह केवल फ्राएड की कुत्सित विचार धारा ही नही है।

वकील साहब ने हामी भरी मैने वार्ता लम्बी होती देख घर में चाय की फर्माइश कर दी। प्रोफेसर साहब ने कहना शुरू किया।

बहुत दिन पहले किसी राज्य में एक प्रतापी राजा राज करता था। इसकी पत्नी के प्रसव हुआ। राजा अपने उत्तराधिकारी को पा कर बहुत प्रसन्न था। राज ज्योतिषी ने गणना करके बताया कि राजा का यह पुत्र बहुत ही प्रतापी है और चक्रवर्ती सम्राट बनेगा। इतना कह कर वह आँखे चुरा कर जाने का उपक्रम करने लगा। राजा ने ज्यातिषी को रोकते हुए कहा कि विप्रवर आप कुछ छुपा रहे है। आप जानते है कि कभी-कभी अर्धसत्य असत्य से भी ज्यादा अनर्थकारी हो जाता है। कृपया निडर होकर जातक का पूरा भविष्य बताये। ज्योतिषी प्राण रक्षा का आश्वासन पा कर बोला। महाराज मेरे द्वारा अभी तक बताया गया भविष्य सत्य है। परन्तु यह भी राज्य का दुर्भाग्य है कि यह जातक अपने पिता को मार कर सिंहासन पर बैठेगा और अपनी ही जननी से विवाह का इच्छुक होगा।

यह सुन कर राजा क्रोधित तो हुआ परन्तु राज ज्योतिषी को क्षमादान दे दिया। फिर एकान्त में वधिको को बुला कर आदेश दिया कि ऐसे दुर्भाग्यशाली बालक को तत्काल मौत के घाट उतार दो। पता नही इस क्रोध के पीछे अपनी सुरक्षा ज्यादा थी या अपनी ही माँ से विवाह जैसा पैशाचिक कृत्य पर आक्रोश।

भविष्य वाणी से अनजान वधिको को मार्ग में दया आ गई। उन्होने स्वयं अपने हाथों से वध न करके बालक को जंगल में अकेला छोड़ दिया जिससे कि कोई मांसाहारी जानवर उसका अन्त कर दे। यह कार्य वह स्वयं न कर सके। परन्तु विधि का ऐसा विधान कि जब तक कोई जन्तु बालक तक पहुँचता आदिवासियों का एक झुण्ड उधर से निकला और उस सुन्दर बालक को उठा लिया और अपने साथ ले गये। कालान्तर में बालक बड़ा हुआ और उसका नाम इडीपस हुआ। नवयुवक होकर इडीपस बहुत ही बलशाली था। अस्त्र-शस्त्र संचालन और घुड़सवारी में वह अपने कबीलाई दोस्तो से काफी आगे था। धीरे-धीरे उसने आदिवासियों की शक्तिशाली सेना बना ली। उस जमाने में भी सभ्य नगरों और आदिवासियों में विद्वेष रहा करता था। उनके मध्य छोटे-छोटे युद्ध होते रहते थे जिसमें अधिकतर नागर ही जीतते थे।

इडीपस के बल बुद्धि और युद्ध कौशल से इसका कबीला अन्य कबीलों में अग्रणीय हो गया था। सभी कबीले इडीपस के नेतृत्व में एकजुट हो चुके थे।

कहानी लय पकड़ रही थी। सभी की उत्सुकता बढ़ रही थी कि चाय आ

गई और कथा रूक गई। चाय नाश्ता समाप्त होने पर प्रोफेसर ने घड़ी देखी शायद जाना चाहते थे परन्तु जिज्ञासा वश हमने उनसे कथा को पूरा करने का आग्रह किया।

इडीपस ने एक दिन देश के राजा (अपने पिता) पर आक्रमण कर दिया। आक्रमण इतना अचानक और वेगवान था कि राजसेना व्यूहबद्ध होने के पहले ही हार गई। राजा बन्दी बना लिया गया तथा आदिवासियों के ऊपर अत्याचार के जुर्म में इसका सिर काट लिया गया।

विजेता इडीपस राजा के रूप में सिंहासन पर बैठा। थोड़ा सोचते हुए प्रोफेसर ने कहा उस जमाने में विजय तब ही पूर्ण मानी जाती थी जब विजेता राज महिषी से शादी कर लेता था। सभी पर निगाह डालते हुए उन्होंने उदाहरण दिया कि जिस प्रकार सुग्रीव और विभीषण क्रमशः तारा और मन्दोदरी से शादी करके सिंहासन आरूढ हुए।

इडीपस भी हरम में राज महिषी के वरण हेतु पहुँचा। राज महिषी ने उसका सत्कार किया। इडीपस ने आलिंगन हेतु हाथ फैलाये। राज महिषी दो पग आगे आई कि इडीपस की दाहिनी भुजा पर बने निशान को आश्चर्य से देखा और फिर अत्यन्त प्रसन्न मुद्रा में बेटा कह कर स्वयं इडीपस को आलिंगन बद्ध कर लिया। पहले तो इडीपस रानी के व्यवहार से चकित हुआ परन्तु जैसे ही रानी का सम्बोधन उसके कानों में पड़ा उसके मस्तिष्क में भूचाल आ गया। वह अर्ध विक्षिप्त सा पीछे हटा परन्तु रानी ने उसकी दाहिनी भुजा पकड़ रखी थी और कह रही थी मेरा पुत्र मेरा पुत्र। मुझे बताया गया कि तू मर गया था पर दया है परमेश्वर कि मेरी माँग ही सूनी हुई कोख नही। फिर इडीपस की दाहिनी भुजा के चिन्ह को इंगित करते हुए बोली पुत्र इस राज मुद्रा को देखो जिससे तुम्हारी दाहिनी भुजा को चिन्हित कर दिया गया था कि ज्येष्ठ पुत्र होने के कारण तुम ही राज्य के भावी महाराज हो।

इडीपस को कुछ समझ नही आया। वह दरबार में लौट आया। वहाँ मंत्रियो ने राज चिह्न पहचान कर स्वर्गीय राजा का पुत्र बताया और ज्योतिषियों की भविष्य वाणी से अवगत कराया। बधिक भी कर्तव्य न पालन करने की कथा सुना कर उत्साहित हो रहे थे। सभी प्रसन्न थे इडीपस को छोड़ कर।

उसके मन में अपराध बोध था कि उसने अपनी ही जननी की भोग्या के रूप में कामना की। उसे अपने ही नेत्रों पर आक्रोश था जिन्होंने अपनी माता पर कुत्सित दुष्टिपात किया। इसी अपराध बोध में उसने अपनी कटार से अपनी दोनों

आंख फोड़ ली।

प्रश्नकर्ता वकील साहब बीच में बोल उठे 'अरे तो इसमें' इडीपस का क्या दोष। इस घटनाक्रम का उसको तो भान ही नहीं था उस बेचारे ने अपनी आंखे क्यो फोड़ी।

जी वकील साहब इसी अनावश्यक अपराध-बोध को ही इडीपस काम्प्लेक्स कहते है। व्यंग्य का पुट प्रोफेसर के स्वर में था। परन्तु तुरन्त ही सयंत हो कर उन्होंने समझाया कि :-

शिशु पुत्र अपने को अपने पिता से आइडेन्टिफाई करता है और पिता की ही भांति माँ की ओर अपनी भावनाये बनाता है। परन्तु जैसे वह समझदार होता है उसे अपना बचपना समझ आने लगता है और वह उन भावनाओं से बाहर आ जाता है। यही स्वस्थ मनोवैज्ञानिक डेवलपमेंट है। परन्तु जहाँ बच्चा इन भावनाओं को न भूल कर अपराध भावना से ग्रस्त होने लगता है उसे इडीपस काम्प्लेक्स कहते है। यदि इस विकार को मनोचिकित्सा द्वारा दूर न किया जाय तो बच्चे में पर्सनालिटी डिफेक्ट पैदा होने लगता है।

चलते समय सभी ने प्रोफेसर साहब को धन्यवाद दिया। सभी ने मन ही मन सोचा कि आज की बैठक में बहुत सीखने को मिला।

अर्जुन ! जिसका अंतस् है जयोतिर्मान नही,
वह भी जलता तो जग को कुछ दे जाता है।
यह वाह्य उपकरण से जलने वाला दीपक,
देखो बढ़ कर सूरज से होड़ लगाता है।।

जो केवल धूम सदृश ही सुलगा करते है,
वह लाख वर्ष तक जियें, महत्ता ही क्या है?
दो क्षण को ही प्रकाश देकर मिटने वाले,
तिनको के सम्मुख उनकी सत्ता ही क्या है?

–बालकृष्ण मिश्र
''धनंजय'' से

टेथिस महासागर (Tethys Ocean) और जीवाश्म (Fossil)

प्रो० (डा०) पी० पी० त्रिपाठी
Emeritus Professor, Balrampur

भूगर्भ वैज्ञानिकों के अनुसार हमारी पृथ्वी तीन तरह की चट्टानों से बनी है। ये चट्टाने हैं - १. इगनियस चट्टाने (Igneous Rocks) जो ज्वालामुखी से निकले गाढ़े तरल पदार्थ लावा (Lavas) के ठंडे होने से बनती है। २. मेटामारफिक चट्टान (Metamorphic Rocks) ये चट्टाने पहली चट्टान इगनियस चट्टान तथा तीसरी चट्टान जिसे तहदार चट्टान कहते हैं, के अत्यधिक दबाव तथा तापक्रम के कारण परिवर्तन (Metamorphism) से बनती है। यह चट्टाने अधिक महंगी होती है। इनके उदाहरण हैं - संगमरमर (Marble) तथा ग्रेनाइट आदि। ३. तीसरी तरह की चट्टाने तहदार चट्टाने (Sedimentary or Stratified Rock) होती है। इन्ही चट्टानों में पौधों तथा प्राणियों के अथवा इनके अंगों के सुरक्षित अवशेष पाये जाते हैं जिन्हें जीवाश्म कहते हैं। यह तहदार चट्टाने तोड़ने पर किताब के पन्नों की तरह खुलती जाती हैं और जीवाश्म इकट्ठे किए जाते हैं।

पृथ्वी की आन्तरिक बनावट देखें तो हमें इसके तीन भाग दिखाई देते हैं। पृथ्वी के मध्य अथवा बीच का भाग जो भारी धातुओं (Heavy Metals) का जैसे सोना, चांदी और लोहा आदि का बना होता है और इसे कोर (Core) कहते हैं। कोर के चारों तरफ का बाहरी भाग जिसे पृथ्वी का मध्य भाग भी कहते हैं बड़ी-बड़ी चट्टानों का बना होता है और ये चट्टाने एक गाढ़े तरल पदार्थ पर तैरतीं हैं जिन्हे मैग्मा (Magma) कहते हैं। जब कभी ये चट्टाने तैरते-तैरते किसी चट्टान से टकराती हैं जो भूकंप को जन्म देती हैं। तीसरा भाग पृथ्वी का सबसे बाहरी भाग होता है जो इगनियस, मेटामॉरफिक और तहदार चट्टानों का बना होता है और इस भाग को अर्थ क्रस्ट कहते हैं। यर्थ क्रस्ट (Earth Crust) के इन्हीं तहदार चट्टानों के तह में पौधों अथवा जानवरों के अथवा इनके अंगो के सुरक्षित अवशेष मिलते हैं जिन्हे जीवाश्म (Fossil) कहते हैं।

करोड़ो वर्ष पूर्व आज जहाँ योरोप में आल्प्स (Alpus) पर्वत और एशिया में हिमालय पर्वत हैं वहाँ एक बड़ा महासागर था जिसे टेथिस (Tethys Ocean) महासागर कहते थे। कालान्तर में इस महासागर की तलहटी धीरे-धीरे ऊपर उठनी शुरू हुई और खारे पानी के स्थान पर चट्टाने बनीं और एशिया में हिमालय पर्वत तथा योरोप में आल्पस पर्वत का जन्म हुआ। जिस समय महासागर की तलहटी ऊपर उठ कर पर्वतों को जन्म दे रही थी उसी समय तलहटी के दोनों तरफ बड़ी गहराई वाले गड्ढे बन रहे थे। इन्हीं गड्ढो में उस समय के वर्षो का जल तथा दूर-दराज से उस समय के नदियों द्वारा लाया गया जल तथा मिट्टी, बालू आदि इन्ही गड्ढों में इकट्ठा हो रहा था। मिट्टी और बालू आदि तह दर तह पानी की सतह पर इकट्ठे हो रहे थे। इन्ही तहों के बीच में पौधे अथवा पौधों के भाग तथा प्राणी अथवा प्राणियों के भाग भी दबते जा रहे थे। करोड़ो वर्ष बाद यदि पौधे तथा प्राणियों के भाग सुरक्षित रहे (बचे) तो इन्ही को जीवाश्म (Fossil) कहते हैं। तहदार कीचड़ (Mud) करोड़ो वर्ष बाद तहदार चट्टाने (Sedimentary Rocks Stratified Rocks) बना देती हैं।

अनुकरणीय

श्रीमती उर्मिला मिश्रा

श्रीमती उर्मिला मिश्रा 'मातृ एवं शिशु कल्याण' विभाग में रु० १७०० के अल्प वेतन पर आंगन बाड़ी के पद पर कार्यरत हैं। वर्तमान में यह एकदम एकाकी जीवन व्यतीत कर रहीं हैं। गत वर्ष वह कान्यकुब्ज सभा के होली मिलन समारोह में उपस्थित थी। सभा के जरूरतमन्द बालिकाओं को दी जाने वाली सहायता से वह बहुत प्रभावित हुई। उन्होंने इस वर्ष से एक ज़रूरतमन्द बालिका को अपने अल्प वेतन में रु० ५०० मात्र की छात्रवृत्ति प्रदान करने का निश्चय किया।

सभा उनके उस उदार कृत्य पर उनका नमन करती है और उन्हें साधुवाद देती है।

रावणो उवाच

गौरव शुक्ला, रांची, झारखण्ड

बात शायद १९८१ या ८२ की है। मैं चार साल का था। मेरे पिता उस समय राय बरेली में कार्यरत थे। दशहरे का दिन था। वह मुझे अपने साथ सुरजूपुर रामलीला दिखाने ले गये। जहाँ पर मैने पहली बार रावण दहन देखा। रावण का भयानक विशाल पुतला देखकर मुझे रावण के बारे में जानने की जिज्ञासा हुई। रात में घर आने के बाद के मेरे पिता ने मुझे राम कथा सुनाई।

यह पहली बार था जब मैंने राम कथा सुनी। लगभग तीन दशक बाद एक दशहरे के दिन मैंने अपनी पाँच साल की बेटी को राम कथा उसी तरह सुनाई जैसे मेरे पिता ने मुझे सुनाई थी। मेरी बेटी राम कथा सुनकर सो गई। मैं बिस्तर पर लेटा हुआ राम कथा के खलनायक रावण के बारे में सोचने लगा। एकाएक मेरे सिर पर एक हाथ का अनुभव हुआ। स्पर्श के साथ ही मैं पूर्ण रूप से चेतन हो गया। शरीर में स्फूर्ति ऊर्जा का संचार होने लगा। सामने एक दिव्य आकृति का पुरुष खड़ा था। ढ़लती उम्र में भी बहुत बलिष्ठ शरीर तपे तांबें का रंग केसरिया वस्त्र विशाल मस्तक पर त्रिपुंड़ कान में कुंडल और सूर्य सा दमकता चेहरा आंखों में तेज किन्तु वेदना की छाया। कुल मिलाकर किसी तपस्वी राज पुरुष का वेष। वेदना का भाव उसकी देह यष्टि से मेल नहीं खा रहे था।

मैंने चौंक कर पूंछा 'आप कौन हैं'।

मैं रावण हूँ। मैं तुम्हें अपने बारे में कुछ अनछुए पहलुओं को बताना चाहता हूँ। क्या मेरा दोष इतना बड़ा है कि मुझे कई हजारों सालों से जलाया जा रहा हूँ?

१. मैं एक महत्वाकांक्षी नवयुवक था। क्या महत्वाकांक्षी होना अपराध है? अपनी महत्वाकांक्षा और पौरुष के बल पर मैंने तीनो लोकों पर अधिकार जमाया। तुम तो स्वयं प्रबन्धक हो। जानते हो प्रबन्धन में समय का बहुत महत्व है। मैने भी काल का प्रबन्धन किया। यह सिर्फ सिम्बोलिक है कि काल मेरे सिंहासन के नीचे बंधा मेरे पैरों के नीचे रहता था। अन्य राजाओं की भाँति जिन्हें इतिहास नायकों के रूप में पूजता है मैने भी अपनी ''रक्ष'' संस्कृति और साम्राज्य का विस्तार किया। क्या यह अपराध है?

२. हमारी असुर संस्कृति में कोई भी स्त्री किसी पुरुष से पुत्र प्राप्ति हेतु प्रणय निवेदन कर सकती है। इसी भावना से मेरी बहन ने राम और लक्ष्मण से निवेदन किया। परन्तु आर्यों में यह प्रथा बन्द हो चुकी थी। इसे वह घृणित अपराध

मानने लगे थे और नाक कान काटने के दंड का विधान हो चुका था। लक्ष्मण ने वैसा ही किया। पर मैं त्रिलोक का स्वामी कोई मेरी बहन की नाक कान काटे यह मेरे पौरुष को चुनौती थी। क्या उस समय अपनी भगिनी के अपमान का प्रतिकार करना अपराध था?

३. प्रतिशोध की ज्वाला में जलता जब मैं पंचवटी पहुँचा तो राम और लक्ष्मण की देह यष्टि देख कर पहली बार मुझे आभाष हुआ कि मैं वृद्ध हो गया हूँ। इन युवकों को सम्मुख युद्ध में परास्त नहीं कर सकता। तत्काल ही मेरे पौरुष ने धिक्कारते हुए मुझे सर्वशक्तिमान और त्रैलौकय विजेता होने की याद दिलाई। परन्तु अपने बेटों से भी कम उम्र के बलशाली युवकों से सम्मुख युद्ध में जीतना आसान नहीं होगा। यह युद्ध करने का यह सही स्थान नहीं है। युद्ध का उपयुक्त स्थान मेरी लंका है। चारों ओर समुद्र से घिरी लंका के अभेद्य दुर्ग में मैं अजेय रहूँगा। परन्तु यह दोनों लंका आयेंगे ही क्यों। तभी विचार आया कि सीता का हरण कर लूँ तो उसके पीछे यह दोनों लंका अवश्य आयेंगे।

४. मैंने सीता हरण के बाद सीता को अपनी भोग विलास भरी असुर संस्कृति से दूर अशोक वाटिका में रक्खा। कभी उससे बल प्रयोग का प्रयत्न नहीं किया।

५. मैंने सीता को राम को लंका लाने के लिये चारे के भांति प्रयोग किया। यह सही है कि युद्ध में मेरी पराजय हुई। परन्तु यह भी सत्य है कि मैं राम से नहीं वरन् समय से हारा। थका वृद्ध शौर्य युवा शक्ति से पराजित हुआ। वही राम के तीनों भाई समय आने पर अपनी सेना के साथ युवा लव और कुश के हाथों परास्त हुए। कभी मैं सोचता हूँ कि कदाचित उस युद्ध के समय पुराना रावण होता तो शायद युद्ध का परिणाम कुछ और होता।

मेरी मृत्यु के बाद राम ने विभीषण को लंका का राजा बनाया जिससे इतिहास में देशद्रोह की नींव पड़ी। भाई का भाई से विश्वास उठ गया। आश्चर्य है कि भातृ और देशद्रोह के अपराधी विभीषण का पुतला नहीं जलता। शायद इसीलिये देश में द्रोहियों की संख्या बढ़ गई।

अब तुम ही बताओ कि क्या मैं अपराधी हूँ।

रावण की बात सुनकर मैं सिक्के के दूसरे पहलू के बारे में सोचने लगा था कि मेरे कानों में आरती करने की आवाज़ सुनाई देने लगी। मेरी नींद खुल गई। मैंने देखा सुबह के ६ बजे हैं। मेरी पत्नी घंटी बजा कर भगवान राम की आरती कर रही थी।

Yoga and Uniformed Services

Kanya Kubj Ratna
Ramesh Chandra Dikshit
(IPS, Rtd. DG Police)

Yoga and Police :

In our country public servants and political leaders are always subjected to ridicule and sarcasm. They are omnipresent but never and nowhere they are held in high esteem because they forget the advice of Thomas Jefferson (remark to Baron Von Humboldt-1807) that "when a man assumes public trust, he should consider himself as public property". The moment you assume public office you are exposed to public gaze and criticism. Police being the most visible arm of the Government has to bear the brunt of public anguish. The deteriorating law and order at all costs brings police, specially the armed police to deal with the tense situations and face the consequences thereof again and again. The conduct of police, their incompetence to deal with the situation and also their in competence to deal with the press always becomes subject of criticism in media and public at large. Police personnel lose self-esteem, are victimized by Government, more often than not they are stigmatized by the press, public also holds them responsible and accountable for all those ills which are not their entire creation. All these factors and inherent occupational hazards make them vulnerable to emotional disturbances which are manifested in cases of suicides, flagging, human rights violation and other psychological disorders besides creating many health problems. In performance of their duties the accidents (accidental firing, vehicular accidents) also become common. Such persons with emotional disturbance are vulnerable to problems like insomnia, restlessness, fatigue, irritability, lack of concentration and other psycho-somatic disorders, which further adversely affect their performance. Deterioration in performance at times leads to reduction in job satisfaction. All these factors result into general indiscipline and leads to suicidal tendencies which are on increases

in Civil Police as well as in armed police and para-military organizations.

Police fatalities on duty as well as suicides are showing upward trend. In the year 2007 a total number of 3505 police personnel died including 2403 who died a natural death. Police fatalities on duty was 876 which was 4.2% more when compared to previous year. These on duty fatalities included 70.3% (616) due to accidents, while 15.3% (160) were killed Anti-Terrorist operation. The fatalities on account of anti-decoity operations were 2.2% (19). A total of 55 police personal were killed by other criminals while 1.0% (9) were killed riotous mobs and 1.9% (17) were killed on border duties. If we analyze deeply, then we find that fatalities due to accidents and caused by riotous mobs could be controlled if not eliminated totally by yoga in police forces.

The suicidal deaths are also indicators of mental health of police personal. In the year 2007 a total number of 226 police personal (173%) committed suicides. Out of these 226, 39 were from Maharashtra. Madhya Pradesh 38 (16.8%), while from Andhra Pradesh Karnataka were 24 (10.6%).

It gives an indication that second and third decade age groups are more vulnerable to emotional disorders culminating in suicides. Interestingly in this period one can put up with best performance being matured (18 years service) worker. If we survey and collect data on work-hours lost on account of illness (both physical and mental) then we can realize how much are we (as a nation) losing on this count everyday because of neglect of health of police personnel. In a poor country like India, we have to find out ways and means of cope up with these problems ourselves. In my opinion, introduction of yoga particularly focused on the problems of armed police, will certainly help. Continuous monitoring, refreshers and other supervisory steps will make it more effective and in the long run more remunerative to the nation.

Problems of Indian Army :

Like police Indian army personnel also suffers from emotional disorders. The incidents manifesting indiscipline and

unbalanced conduct are has perceptible in Navy and Air Force. Indian Army is suffering from acute shortage of strength in officer's rank and such incidents of suicides and fratricide will further discourage brilliant students to join Army.

In the year 2006, there were 120 cases of suicide and 34 cases of attempted suicide while in 2002 the number was 80 and 10 only.

In army, cases of gross indiscipline include incidents of fratricide also. These cases are steadily rising which suggests that psychological disturbances are taking a heavy toll on army morale.

As an immediate measure army has started cleaning its stables by throwing out the instable minds. According to reports in media, there has been an increases 45% in number of troops discharged due to psychological problems. The rise in suicides, fratricides and discharge on psychological grounds are jointly indicative of deep malaise as such, the defense institute of psychological Research (DIPR) conducted as study on troops deployed in counters in urgency areas which came out with findings that perceived humiliation and harassment over and above occupational hazards and familial causes are most potent factors in such cases. The causative factors include increase work load, these zero error syndrom, non grant of leave, lack of sleep, lack of relaxation and relentless operations, family problems, medical problems and perceived grievances.

The institute made recommendations regarding improvement in leadership qualities and inter-personal relations and rationalization in grant of leave, change of duties, promotions and improvement in organizational climate. As long term measures they have suggested improved selection, training, provision of basic amenities and religious teachers as Counsellors but not of yoga teachers as has been done in other services such as railways and educational institutions on adhoc basis.

As has been said in the beginning that human life is multi-dimensional. Man is not the body alone. Mind though part of the

body has very important role to play in the well being of the body, by guiding the conduct of the man. Body mind yoga is essential for the progress of the man in the field of "Pragya" which paves the way for self-actualization. If, by following yoga, we have proper healthy body and by controlling 'Vritties' we train our mind or ' Mann' or "Chitta" to attain balanced and serene state of human existence which builds foundation for actualize life. We will succeed in every field despite all difficulties and emotional disturbances will never arise, If we practice yoga seriously and follow the principles in our daily life earnestly.

In view of the above discussion introduction of yoga during training period of new recruits appears to be imperative. Further courses on yoga can also be continued even in advancing age which makes it preferable to physical training, exercises. Since it combines body and mind and also encourages to acquire higher values of life, it reduces proneness to emotional outburst resulting in devastating results, Yoga specially the pranayama and Dhyana (meditation) part of it will lead to stable and balance thinking. Thus preventing frustration, self pitying and encourages conscientiousness.

Misgivings about Yoga

Yoga is the philosophy of enlightened and actualized life which not only makes one happy in this world but also leads to life beyond. It gives tips for maintaining good and healthy body along with sound and balanced mind which alone can uphold higher values of life which is the ultimate aim of yoga.

There are certain misgivings about yoga. Those who have not studied yoga, think that it is meant for swamis and saints only and hence not very useful for those who are leading an ordinary family life. Further it is felt by some that this is part religious rites of Hindus. Whish is not correct. Yoga is not religious in nature and anybody can practise without being follower of Hindu Dharma. Yoga can be practised by everyone. One does not need to leave the wordly possessions and deprive himself of niceties of life.

आषाढ़ के पहले दिन पर युगों पूर्व आकाश में उमड़ते घुमड़ते मेघों को देखकर किसी संतप्त, बिरह-विदग्ध यक्ष ने, मेघों से अपनी प्रिया-प्रेयसि, को संदेशा भिजवाया था।

आज भी यदि किसी कवि का संवेदनशील - भावुक हृदय-अतीत की स्मृतियों से साक्षात्कार कर , अनायास ही विह्वल हो उठे, तो क्या आश्चर्य!

बालकृष्ण मिश्रा
मो० रफीनगर
(अस्पताल चौराहा), रायबरेली
दिनांक १४.०६.२०११

गीत

यक्ष के सन्देश वाहक
आ गये फिर।

हो उठे फिर प्राण विह्वल
देखकर श्यामल घटायें;
फिर उभर आईं जलदपट
पर- लिखी बीती कथायें।

प्रणय के सन्देशवाहक
आ गये फिर।

भार सुधियों का नयन-मन
दग्ध प्राणों में संजाये;
अनमने से थिर न रह पाते
कि अपने आप खोये।

पीर के समवेत गायक
आ गये फिर।

नीर बन कर फिर पिघलने
लग गई संभावनायें;
तप्त मानस पृष्ठ पर ज्यों
हो रही अंकित ऋचायें।

मिलय के अभिशप्त नायक
आ गये फिर।

अब बालों को शैम्पू नहीं!
उनकों दें मेघदूत की
आयुर्वेदिक सुरक्षा!

मेघदूत

मेघदूत सत्‌रीठा व हर्बल पाउडर

बालों का गिरना, टूटना, गंजापन, रुसी, खुश्की आदि रोग जड़ से समाप्त कर बालों को लम्बे, घने एवं मुलायम बनाता हैं। सिर पीड़ा मस्तिष्क दुर्बलता, को दूर कर स्मरण शक्ति में वृद्धि करता है एवं केशों की कालिमा को स्थायित्व प्रदान करता है।

मेघदूत ग्रामोद्योग सेवा संस्थान

भोपाल : 38-39, न्यू इण्डस्ट्रियल ऐरिया, मण्डीदीप, रायसेन (मध्यप्रदेश)

प्र. कार्यालय : ग्राम नबीकोट नन्दना, बक्शी का तालाब, लखनऊ फोन : 09235623143

आवश्यकता है म.प्र. एवं छत्तीसगढ़ के हर जिले हेतु :

अनुभवी विक्रय प्रतिनिधियों एवं विक्रय अधिकारी

फोन : 07480-231041, 09424456737 ईमेलः vipul@meghdootherbal.com

गरब तरू भारी

रामचरित मानस में नारद मोह से संबंधित एक प्रसंग हैं जो संक्षेप में इस प्रकार हैं :

एक बार जब नारद जी तपस्या कर रहे थे तब उस तपस्या को भंग करने के लिए इंद्र ने बहुत उपाय किये और कामदेव तक को भेजा। परंतु नारद जी विचलित नहीं हुए। इससे नारद जी को अभिमान हुआ। जब भगवान विष्णु को नारद ने इस संबंध में बतलाया तो भगवान विष्णु ने सोचा कि नारद के मन में अहंकार आ रहा है जो इनके हित में नहीं हैं। गोस्वामी जी के शब्दों में :

करूणानिधि मन दीखि बिचारी,
उर अकुरेउ गरब तरू भारी।
बेगि जो मैं डारिहौ उखारी,
तन हमार सेवक हितकारी।।

फिर इसी कथा प्रसंग में यह आता है कि किस प्रकार नारद जी एक राजकुमारी के रूप पर मोहित हुए और उससे विवाह करने की इच्छा-वश भगवान विष्णु से उनकी सुंदरता माँगने की ठानी (हरि सन मांगो सुन्दरताई)। उन्होंने भगवान विष्णु से उनकी सुंदरता तो माँगी ही साथ ही साथ प्रभु माया से प्रेरित होकर यह भी माँग लिया :

जेहि विधि होय नाथ हित मोरा।
करहु सो बेगि दास मैं तोरा।।

भगवान ने नारद जी की प्रार्थना पर जो उत्तर दिया वह निम्न प्रकार हैं :

जेहि विधि होय परमहित, नारद सुनहु तुम्हार।
सोइ हम करब न आन कुछ, बचन न मृषा हमार।।
कुपथ मांग रूज ब्याकुल रोगी।
वैद न देई सुनहु मुनि जोगी।।

इसके बाद नारद का मुंह बंदर जैसा हो गया और स्वयंवर में उनको राजकुमारी भी नहीं मिली। नारद जी बहुत क्रोधित हुये और उन्होंने क्रोध में आकर भगवान विष्णु को श्राप भी दे डाला। यह सारा मानस के बाल काण्ड के प्रारम्भ में ही

आया हुआ हैं। ऐसा सब क्यों हुआ इसका खुलासा भी गोस्वामी जी ने अरण्य कांड में किया हैं जब सीताहरण के पश्चात नारद जी रामचन्द्र जी से मिलने गये (क्योंकि कथा के अनुसार सीताहरण नारद के श्राप के कारण ही हुआ था)

तब नारद जी ने पूछा कि जब वह उस राजकुमारी से विवाह करना चाहते थे तो भगवान ने क्यों नहीं करने दिया। तब भगवान ने नारद जी को समझाया कि कामदेव को पराजित करने के कारण उनके मन में जो अभिमान आ गया था उस अभिमान को नष्ट करना ही नारद के हित में था और इसलिए भगवान को यह सारी माया रचनी पड़ी थी। यहीं पर यह भी कहा गया (गोस्वामी जी के शब्दों में) :

'सुनु मुनि सोहि कहउ सहरोसा,
भजहि मोंहि जे सकल भरोसा।।
करउ सदा तिन के रखवारी,
जिमि बालक राखइ महतारी।।

इस प्रसंग को संक्षेप में उद्धृत करते करते भी कुछ लम्बा हो गया ऐसा अवश्य है परन्तु इसको इससे अधिक संक्षेप में भी करना सम्भव नहीं था। इस सारे प्रसंग का जो सार है वह यह है कि व्यक्ति के मन में गर्व या अभिमान की भावना आना उसके लिए और उसके स्वयं के लिए ही बहुत घातक है और दूसरों के लिए भी। जब किसी व्यक्ति को अपनी शक्ति, अपनी क्षमता, अपने ऐश्वर्य या अपनी सम्पदा तथा अपनी किसी सफलता का दम्भ, गर्व, घमण्ड या अभिमान होता है वह रावण या दुर्योधन के समान न केवल अपने से संबंधित व्यक्तियों का नाश करता है वरन् पूरे समाज में विकृतियां उत्पन्न करता है। इस प्रसंग का दूसरा पहलू यह भी है कि ईश्वर ही सबसे ज्यादा जानता है कि उसके भक्तों के लिए क्या उचित है और क्या अनुचित, क्या उसको मिलना चाहिए और क्या उसको नही मिलना चाहिए और उसमें उसका क्या लाभ है और तद्नुसार जो स्वयं को ईश्वर की शरण में डाल देता है उसका, जैसा हि गीता में कहा है 'योग क्षेंम वहाम्यहम्' अर्थात ईश्वर स्वयं ऐसे व्यक्तियों के कल्याण का उत्तरदायित्व उठा लेता है। पर ऐसी स्थिति आने के लिए भी अभिमान रहित होना पहली शर्त है। जो यह सोचता है कि मैंने यह कर लिया और मैं यह कर लूंगा उसको तो अभिमान आ गया और ऐसे में अपने कल्याण का वहन करने का उत्तरदायित्व तो व्यक्ति ने स्वयं ले लिया। फिर भी नियामक सत्ता उसको नियंत्रित करने के लिए कोई भी रास्ता निकाल सकती है चाहे

नारद जैसे देवर्षि के मुंह बन्दर का ही क्यों न बनाना पड़े फिर अन्य साधारण मानवों की औकात ही क्या है। यदि किसी को नियामक सत्ता के ही अस्तित्व पर संदेह है तो संक्षेप में उसका उत्तर यही हो सकता है कि मनुष्यों की प्रवृत्ति, बुद्धि, इंद्रियां भिन्न-भिन्न होने से उनके आचरण भी भिन्न-भिन्न होते हैं जिसका परिणाम भुगतना भी जड़ प्रकृति का कार्य नहीं हो सकता। अतः इसका फल दाता भी कोई बुद्धि का महान सागर चेतन ही होना चाहिए और वह है एक मात्र परमात्मा।

तो मूल बात है कि अहंकार नहीं होना चाहिए और इस प्रसंग को यदि राजकीय सेवा के परिप्रेक्ष्य में देखा जाये जहां पर राजकीय सेवकों को (जो राजकीय अधिकारी कहलाया जाना ज्यादा पसन्द करते हैं) अगर यह अहंकार है कि उन्होंने केवल अपने परिश्रम, अध्यवसाय तथा लक्ष्य के प्रति एकाग्रता के आधार पर ही अपने पद को प्राप्त किया है और पद में निहित अधिकार वे यदि किसी के हित मे प्रयोग करते हैं तो उस पर अहसान करते हैं तो यह सोच अंहकार होने कारण मूल रूप से ही गलत है। जो कार्य होना है वह तो होना ही है चाहे वह व्यक्ति विशेष के हित में हो या समाज कल्याण के। यह तो सरकारी सेवक अथवा किसी व्यक्ति का सौभाग्य है कि विधाता ने उसे वैसे कार्य करने का माध्यम चुना। यदि इस दृष्टि से देखा जाये तो कार्य के प्रति समग्र दृष्टिकोण में ही परिवर्तन आ जायेगा। 'त्वदीयम वस्तु गोविन्दम तुभ्यमेव समर्पयते' यह भावना केवल आदर्शवाद नहीं है। यही वास्तविकता है और इसी कारण अहंकार न होना ही व्यक्ति तथा समष्टि के हित में है।

प्रबुद्धजन यह आपत्ति उठायेंगे कि यदि जो होना है वही होना ही है और उसमें हम कोई परिवर्तन नहीं ला सकते तो हमारे अस्तित्व का औचित्य क्या है। यह विषय अपने आप में बहुत लम्बा है। परन्तु सोचने की बात यह है कि जिस व्यक्ति के पास सत्ता है यदि उसमें अहंकार आ जायेगा तो उसका परिणाम उसके लिए या समाज के लिए कितना घातक होगा। जिन्होंने भी इतिहास थोड़ा बहुत पढ़ा है वे सभी जानते हैं कि ऐतिहासिक तथ्य भी ऐसे व्यक्तियों का वही परिणाम समर्थित करते हैं जो परिणाम रावण या दुर्योधन का हुआ। यद्यपि रावण के समान विद्वान और पराक्रमी उसके समय में कोई नहीं था पर अहंकार के कारण वह अपने और कुटुम्ब के विनाश का कारण बना और कथाओं में अपयश का भागी बना। दुर्योधन की भी वीरता शूरता में कोई कमी नहीं थी पर केवल दम्भ और हठ ने उसको कुमार्गी बना दिया। सत्ता के साथ अहंकार मिल करके समाज में भूचाल तो ला

सकता है परन्तु कोई सकारात्मक स्थाई परिवर्तन नहीं ला सकता और यह सरकारी सेवकों के परिप्रेक्ष्य में इसलिए अधिक विचारणीय है क्योंकि उसके पास सत्ता का कुछ न कुछ अंश अवश्य रहता है। कहते हैं कि महान गणितज्ञ वैज्ञानिक आईस्टाईन को यह दुख हमेशा रहा कि उन्होंने क्यों ऐसे सिद्धान्त का प्रतिपादन किया जो आगे चल अणुबम बनाने में सहायक हुआ। लेकिन क्योंकि उनके पास सत्ता निहित नहीं थी इसलिए उनके सिद्धांत का सदुपयोग होगा या दुरुपयोग होगा इस पर उनका कोई नियंत्रण नही था और यह नियंत्रण जिन राजसेवकों के हाथ में है वह यदि उस सत्ता का उपयोग अहंकार रहित होकर नहीं करेंगे तो उसका दुष्परिणाम ही होगा।

कमोवेश यही बात हम सब पर लागू होती है। यदि हम स्वयं को विधाता की इच्छा का वाहक मानकर अहंकार रहित होकर अपने कार्य को सम्पादित कर सकें तो यह देश, काल और समाज की वास्तविक सेवा तथा ईश्वर की आराधना होगी और इसके लिए किसी भी मंदिर, मस्जिद या गुरुद्वारे में जाने की आवश्यकता नहीं है। प्रसंगवश यह उल्लेखनीय है कि नारद जी जब विष्णु भगवान से उनकी सुंदरता मांगने के लिए मिलना चाहते थे जब उसके लिए उन्हें किसी आराधना स्थल में नहीं जाना पड़ा। उनकी ईश्वर के प्रति अटूट लगन और विश्वास था अतः नारद जी ने जहाँ प्रार्थना की भगवान वहीं प्रकट हो गये। अर्थ यह है कि असली बात श्रद्धा और विश्वास की हे जो उस कर्म के प्रति होना चाहिए जो इस जगत में जीवधारी के नाते हमें सौंपा गया है और क्योंकि अहंकार इसमें बाधक है अतः इससे दूर रहना है और जिन व्यक्तियों का सत्ता पर अधिकार होता है उनके लिए तो इस दिशा में और अधिक विशेष सर्तकता की आवश्यकता है।

अन्त में, मैं आपका ध्यान प्रख्यात विचार-विद् हार्पर ली के निम्न कथन की ओर आकर्षित करना चाहूंगा :

Wise people is their right mind never take pride in their intelligence.

(डी० एन० दुबे)
आई.ए.एस.
पीठासीन अधिकारी
औद्योगिक न्यायाधिकरण (४) उ०प्र०,
सी-३ न्यू आगरा, आगरा।

मौलिक चिकित्सा

- अनुराधा दीक्षित

उन्होंने गांव छोड़ कर जब से शहर का रुख किया, उनके अनिश्चित भविष्य को लेकर लोगों के मन में खटका होने लगा। रोज़ी के लिए शहर का रुख करने वाले उन जैसे व्यक्ति के पास अक्षर ज्ञान का नितान्त टोटा था। यह बात दीगर है कि गंवई ज्ञान की उनके पास कोई कमी नहीं थी। शहर में अक्षर ज्ञान का ही सिक्का चलता है, यह बात किसी से छुपी भी नहीं थी। लेकिन दुनिया की नब्ज़ बिना पकड़े ही भांप लेने की उनकी जैसी काबिलियत जिस आदमी में हो, उसे भला कौन सी राह रोक सकती है।

उन्होंने शहर आते ही चौराहे पर एक मेडिकल शॉप खोल ली- -पवित्र मेडिकल'। अजूबा ! हकीमी, वैद्यकी या मेडिकल साइंस से उनका बस इतना रिश्ता रहा था कि गाहे - बगाहे गांव में कभी बीमार पड़े भी, तो उन्हें पता रहता था कि लाल गोली खाने से बुखार उतरता है या पीली गोली खाने से दस्त बन्द होते हैं। ऐसे मेडिकल के अधकचरे ज्ञान या यूं कहें कि घोर अज्ञान के भरोसे खोली गयी मेडिकल शॉप का क्या हश्र होने वाला था - ईश्वर ही जानता होगा।

मगर सारी आशंकाओं को धता बताते हुए उनकी दुकान चल निकली। साइन बोर्ड पर ही लिखा था - 'राम बाण इलाज', -ब्लड प्रेशर शर्तिया दुरुस्त रखने की अचूक दवा', 'कोई साइड इफेक्ट नहीं', वगैरह-वगैरह। भीड़ जुटने लगी और जल्दी ही इस सच्चाई से पूरा शहर परिचित हो गया कि महिलाओं के घटते-बढ़ते रक्तचाप का सटीक इलाज करने जैसा पवित्र काम अगर कहीं कोई कर रहा है, तो वह है 'पवित्र मेडिकल'।

क्या था उनका रामबाण नुस्खा, जिसका साइड इफेक्ट तो कुछ नहीं था मगर रोग निदान होता था शत-प्रतिशत ! उन्होंने जिस दिन शहर में पांव रखा, उसी दिन रिश्तेदारी में टिकने के साथ ही अपने सामान्य ज्ञान से, आस पड़ोस में पसरे असामान्य संकट को भांप लिया। तब से ही उनके दिमाग में संकट के समाधान का कीड़ा कुलबुलाने लगा था। शहर में हर घर की सुबह तीन में से किसी एक तरह से हो सकती थी। पहली या तो 'काम वाली बाई' आगई या आने वाली है, दूसरा 'काम

वाली बाई' पहले से छुट्टी ले कर गयी है और आने वाली नहीं है और तीसरा बिना किसी पूर्व सूचना के 'काम वाली बाई' छुट्टी मार गयी है। पहले केस में जहां रक्तचाप सामान्य बना रहता है वहीं दूसरे केस में गम्भीर रूप से 'लो - ब्लड प्रेशर' की शिकायत होने लगती है। 'काम वाली बाई' के छुट्टी मांगने से लेकर छुट्टी वाले दिन तक, निरन्तर डायस्टॉलिक व सिस्टॉलिक प्रेशर में गिरावट आती चली जाती है और उसकी सामान्य अवस्था 'काम वाली बाई' के सामान्य रूप से काम पर वापस आने के बाद ही आ पाती है। तीसरा केस अधिक खतरनाक है, जिसमें असामान्य रूप से उच्च रक्तचाप प्रकट होता है। ' काम वाली बाई' के गोल होते ही दिमाग गोल गोल घूमने लगता है। बेलगाम ब्लडप्रेशर मुंह के रास्ते अपना प्रभाव छोड़ते हुए, आस-पास के जीवधारियों के ब्लडप्रेशर को भी असंतुलित करने लगता है गम्भीर रोग। स्वास्थ्य पर गम्भीर संकट।

ऐसी परिस्थियों से निपटने के लिए पवित्र मेडिकल ने ' काम वाली बाइयों' की फ्लीट तैयार कर रखी थी। किसी भी घर में 'बाई' की गड़बड़ी से पैदा हुयी रक्तचाप की गड़बड़ी, शुरू भी नहीं हो पाती कि घर से तीमारदार भाग कर पवित्र मेडिकल पहुंच जाते और वैकल्पिक 'बाई' की व्यवस्था कर लेते। बीमार की बीमारी उड़नछू। 'हवा में उड़ता जाए मेरा लाल दुपट्टा मलमल का' जैसे गीत स्वास्थ्य बुलेटिन जारी कर देते।

कहते हैं सफल व्यवसाय को लुटेरे व्यवसाइयों से बचाना बड़ा कठिन है। पवित्र मेडिकल के मौलिक प्रयास पर भी डाका पड़ा। उनकी दुकान के ठीक सामने 'न्यू पवित्र मेडिकल' नाम से एक नई दुकान खुल गयी। एम.बी.ए. डिग्री धारी, अपने व्यवसाय को ऊंचाइयों तक पहुंचाने की ललक लिए जिस युवक ने 'न्यू पवित्र मेडिकल' खोली थी, उसे प्रबन्धशास्त्र का वह बीज मंत्र सिद्ध था कि किसी व्यवसाय में कैसे 'वैल्यू एडीशन' कर बाजार पर कब्जा किया जा सकता है। अब आम लोगों ने भी मान लिया कि उनका समय पूरा हुआ। 'पवित्र मेडिकल' पर अब 'न्यू पवित्र मेडिकल' का ताला लगना तय था।

लेकिन चमत्कार हुआ। जिस तेजी से शुरू में न्यू पवित्र मेडिकल के ग्राहकों की संख्या में बढ़ोत्तरी हुयी थी, वह कुछ दिनों में ही धराशयी हो गयी। 'न्यू पवित्र मेडिकल' के यहां से जिन लोगों ने इलाज कराया वहां ' लो ब्लड प्रेशर' और 'लो' या 'हाई ब्लड प्रेशर' और 'हाई' होने लगा। संकट में पड़ता जीवन देख, लोग

भाग कर वापस 'पवित्र मेडिकल' की शरण में गिरने लगे।

दरअसल वैल्यू एडीशन के फेर में 'न्यू पवित्र मेडिकल' ने अपने यहां चुस्त - फुर्तीली, स्मार्ट, काम-काज में दक्ष व देखने - सुनने में आकर्षक 'काम वाली बाइयों' की फ्लीट तैयार की थी। ऐसी 'काम वाली बाइयां' जब जरूरतमंदों के यहां पहुंची तो उन्हें देख कर गृहस्वामिनियों का असामान्य रक्तचाप और अधिक बिगड़ गया। कई एक तो उन्हें टका सा जवाब दे कर लौटा देतीं और रोते - झींकते खुद काम काज निपटाना शुरू कर देतीं। एक-आध जगह तो सुनने में यह भी आया कि न्यू पवित्र मेडिकल से आयी 'बाई' ने गृहस्वामिनी को बाहर का रास्ता दिखा दिया और खुद गृहस्वामिनी बन बैठी। जबरदस्त साइड इफेक्ट। पते की बात यह थी कि इस तरह जुगाड़ से बनी नयी गृहस्वामिनियों ने जरूरत पड़ने पर अपने पुराने 'न्यू पवित्र मेडिकल' की ओर रुख करने के स्थान पर हमेशा ' पवित्र मेडिकल' से ही सम्पर्क साधा। 'न्यू पवित्र मेडिकल' के साइड इफेक्ट से उन्हें अपना भविष्य जो बचाना था। कुल मिला कर उनके गंवई ज्ञान को किताबी ज्ञान ने जो टक्कर मारी थी, उसमें किताबी ज्ञान चकनाचूर हो चुका था।

इस तरह उनकी 'रामबाण दवा' की दुकान अपने पवित्र काम में बराबर लगी हुयी है। शहर की आधी जनसंख्या का रक्तचाप पूरी तरह संतुलित था। इसके लिए शहर की शेष आधी जनसंख्या उनकी एहसानमंद थी।

वर्ष २०१२ के साइकिल छात्रवृत्ति प्रदाता

डॉ० परेश शुक्ल सर्जन	**रु० २००० मात्र**
श्री अखिलेश पाठक	**रु० २००० मात्र**
ब्रिगेडियर शीतान्शु मिश्र	**रु० २००० मात्र**
श्रीमती उर्मिला मिश्रा	**रु० ५०० मात्र**
डॉ० सरलाा शुक्ला	**रु० ५०० मात्र**
श्री सुशील दीक्षित	**रु० २७०० मात्र**
श्री सुधीर कुमार पाण्डेय (माँ जय देवी पाण्डे के नाम से)	**रु० १००० मात्र**

बातें करें मगर किससे

– कैलाश नाथ मिश्र
बड़ोदरा, गुजरात

तारीख २६ अगस्त २००८, स्थल हिन्दमहासागर में अंतर्राष्ट्रीय जलक्षेत्र में लंगर डाले अमेरिकी विमान वाहक पोत यू एस एस अब्राहम लिंकन, मुख्य मेजबान अमेरिका के सभी सेनाओं के सर्वोच्च सेनापति एडमिरल मुलेन; दूसरे मेजबानों में अफगानिस्तान में अमेरिकी सेनाओं के कमांडर डेविड मेकरनान, विशेष अभियान शक्तिदल के मुख्य कमांडर एरिक आल्सन, अमेरिकी सेन्ट्रल कमांड के कमांडर डेविड पैटरसन और दूसरे एक दर्जन से अधिक अमेरिकी उच्च सेनाध्यक्ष, मेहमान के तौर पर इंतजार हो रहा था पाकिस्तान के सेनाध्यक्ष; जनरल परवेज कयानी का। उद्देश्य, पाकिस्तान के जिहादी संगठनो के खिलाफ पाकिस्तानी सेना को युद्ध के लिये प्रेरित करना। पाकिस्तान में यदि परिणाम चाहिये तो एक ही तरीका है, सेना को प्रभाव में लाना।

प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने कुछ दिनों पहले एक बार कहा था कि पाकिस्तान में किससे बात करें इसका ही पता नहीं चलता। उपरोक्त घटना बतलाती है कि पाकिस्तान में हम किससे और किससे बातचीत करें।

पाकिस्तान अपने अस्तित्व के ६३ वर्षो में से लगभग ५६ वर्ष, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सैनिक शासन में रहा। इसमें से ३८ वर्ष सेनाने प्रत्यक्ष शासन किया (अयूब १९५८ – ६९, याहिया १९६४ – ७१ जियाउलहक १९७७ – ८८, मुशर्रफ १९९९ – २००८) शेष वर्षो में हालांकि नागरिक प्रशासन रहा है, परंतु सभी महत्त्वपूर्ण मामलों में विशेषकर विदेशनीति, रक्षा एवं जासूसी के क्षेत्रों में सेना का ही वर्चस्व रहा। विशेषकर भारत और अफगानिस्तान के संबंधो के मामले में असली निर्णायक सेना ही है। ऐसे में भारत – पाक संबंधो में सुधार के लिये हमें पाक सेना की मानसिकता, उसके लक्ष्य और उसकी महत्त्वाकांक्षाओं को समझना पड़ेगा।

पाकिस्तानी सेना का स्वप्न भारत में दुबारा इस्लामिक शासन लाना है। वे इस बात को नही भूल पाते की संख्या में १५ प्रतिशत से कम होने पर भी, भारत में लगभग ८०० वर्ष मुस्लिम शासन रहा है। विविधताओं से भरा हुआ यह देश उन्हें अस्थिर लगता है। उनका विश्वास है कि देर–सबेर भारत का विघटन होगा। त्वरित रूप से भारत की सामरिक क्षमता को कम करना उसका मुख्य लक्ष्य है।

चूँकि पाकिस्तान में विदेशनीति, विशेषकर भारत-पाक एवं पाक-अफगान संबंधों के बारे में नीति सेना तय करती है, परिणाम स्वरूप नीति विशेषरूप से सामरिक दृष्टिकोण से बनाई जाती है। भारत के साथ व्यापारिक संबंध, जो वास्तव में पाकिस्तान के ही फायदे में है, का विरोध, आतंकवाद को बढ़ावा, जो आगे चलकर पाकिस्तान के लिये ही विनाशकारी साबित हुआ, इसी दृष्टिकोण का परिणाम है।

पाकिस्तान की सेना, अपने को इस्लामिक विचारधारा का रक्षक मानती है। इस्लामिक विचारधारा और धार्मिक विचारधाराओं से काफी अलग है। इसमें सर्वधर्म समभाव जैसे विचार की कोई गुंजाइश नही है, केवल इस्लाम का रास्ता ही सही रास्ता है। पाकिस्तानी सेना, चूँकि अपने को इस विचारधारा की प्रमुख रक्षक मानती है, अतः ऐसे में उसकी मनःस्थिति किसी प्रकार के सहयोग, सद्भाव को स्वीकार करने की नही रहती ।

पाकिस्तान में वहां के संसद, राष्ट्रपति, मंत्रिमंडल या नागरिक प्रशासन किसी का भी पाकिस्तानी सेना पर प्रभाव या नियंत्रण नही है। सेना पाकिस्तान में एक सार्वभौमिक सत्ता है। वह अपने कार्यक्रम एवं लक्ष्य स्वयं तय करती है। पाकिस्तानी सेना के लक्ष्यों में भारत के साथ अच्छे संबंध नहीं है।

पाकिस्तान-चीन के संबंध भारत के साथ निकट संबंधो के रास्ते में एक दूसरा बड़ा रोड़ा है। पाकिस्तानी शासक, पाकिस्तान के जन्म के समय से ही भारत के साथ सैनिक एवं आर्थिक असंतुलन को नकारने के लिये, किसी बड़े देश के साथ गठजोड़ का सहारा लेते है। पहले अमेरिका का सहारा लिया गया और अब जब अमेरिका विश्व में अपना प्रभुत्व खो रहा है, पाकिस्तान चीन से गठजोड़ कर भारत के साथ सैनिक एवं आर्थिक खाई को पाटने का प्रयत्न कर रहा है। चीन एशिया में अपना एकछत्र प्रभुत्व चाहता है, और इसमें उसे भारत अकेला प्रतिद्वंदी के तौर पर दिखाई देता है। चीन कभी नहीं चाहेगा कि भारत और पाकिस्तान एकदूसरे के बहुत नजदीक आयें और पाकिस्तान उसके प्रभावक्षेत्र से निकलकर भारत के प्रभावक्षेत्र में आये। पाकिस्तान को भी कभी, यदि भारत और चीन के बीच चुनाव करना हो तो वह चीन के साथ ही जायेगा।

जब तक सामरिक उद्देश्यों को केन्द्र में रखकर पाकिस्तान की विदेशनीति बनती रहेगी तब तक भारत पाकिस्तान के बीच दूरगामी शांति एवं सौहार्द का होना बहुत मुश्किल है। पाकिस्तान में सेना, पाकिस्तानी नागरिक प्रशासन, और

पाकिस्तानी जनता तीनों के बीच एक बड़ी खाई है। सामरिक विषयों पर और काफी हद तक विदेशनीति पर पाकिस्तानी सेना का वर्चस्व है, नागरिक प्रशासन, इन दोनों क्षेत्रों में अपनी पकड़ खो चुका है। पाक सेना का ऐसा मानना है कि वह नागरिक प्रशासन को समझती हैं परन्तु नागरिक प्रशासन सेना की कार्य प्रणाली के बारे में कुछ नही जानता। पाक सेना के लिये नागरिक प्रशासन ब्लडी सिविलियन इन्काम्पीटेन्ट या स्टुपिड (या दोनों) हैं।

आज पाकिस्तान अफगानिस्तान में दुबारा पैर जमाने के लिये बुरी तरह उतावला है। इसी के लिये पाक सेना को लश्करे - तैय्यबा, गुलबहादुर और सिराज्जुद्दीन हक्कानी के संगठनों के खिलाफ, अमेरिका के लाख दबावों के बावजूद, कोई कदम उठाने से इन्कार है। रणनीति, हक्कानी और गुलबहादुर के संगठनों को, उनके लड़ाकों सहित काबुल में पुनः स्थापित करने की है। पिछले दो तीन महीनों से पाकिस्तान के सेनाध्यक्ष जनरल परवेज कयानी और आइ एस आई के प्रमुख जनरल पाशा दर्जनों बार काबुल का चक्कर इस नीति को कार्यान्वित करने के सिलसिले में लगा चुके है। इस महत्त्वपूर्ण नीति को कार्यान्वित करने में विदेश मंत्री कुरैशी-विदेश सचिव बासित या यहां तक कि प्रधानमंत्री गिलानी या राष्ट्रपति जरदारी की भी जरूरत नही समझी जाती। ये लोग सिर्फ भारत को बातों में उलझाये रखने के काम आते हैं।

भारत पाकिस्तान के बीच शांति एवं सौहार्द्र लाने के लिये यह जरूरी है कि सेना नागरिक प्रशासन के आधीन हो। राजनैतिक दलों का पाकिस्तान में संप्रभुत्व कायम हो। जब तक ऐसा नही होता, हमें भी अमेरिका की तरह पाक सेना के साथ संपर्क बनाना पड़ेगा। किसी भी अमेरिकी राजनीतिज्ञ या अधिकारी का मुख्य कार्यक्षेत्र इस्लामाबाद नही, रावलपिंडी, पाकिस्तानी सेना का मुख्यालय होता है। एडमिरल मुलेन, अमेरिका की सेनाओं के सर्वोच्च सेनापति, जिनका जिक्र शुरू में ही आ चुका है, अभी अगस्त में दो साल के भीतर पाकिस्तान में उनकी उन्नीसवीं यात्रा थी। इसी तरह अमेरिकी विदेश सचिव श्रीमती हिलैरी क्लिन्टन प्रधानमंत्री गिलानी के साथ १५ मिनट बात करती है जब कि जनरल कयानी के साथ उनकी मीटिंग तीन घंटे चलती है।

अफगानिस्तान में तालिबान का बढ़ता हुआ प्रभाव, एवं तालिबान से पाकिस्तान को बढ़ता हुआ खतरा एक नई संभावना को जन्म देता है। पाकिस्तान के दैनिक डॉन में श्री सुनील शरन का एक लेख छपा है (डॉन २० जनवरी २०१०) जिसमें अफगानिस्तान को नियंत्रण में लाने के लिये भारतीय सेना और पाकिस्तानी

सेना के बीच के सहयोग का सुझाव दिया गया है। वास्तव में अफगानिस्तान में तालिबान की वापसी भारत और पाकिस्तान दोनों के हित में नही है। जिहादी संगठनों का लक्ष्य आज, अमेरिकी सेना के वापसी से नही, पाकिस्तान और अफगानिस्तान पर पूर्ण नियंत्रण से पूरा होता है। भारत के लिये यह बहुत बड़ी खतरे की घंटी है। यदि पाकिस्तान जिहादी नियंत्रण में जाता है, तो भारतीय सेना के लिये जिहादियों का तोड़ बेहद मुश्किल होगा। पाकिस्तान के बाद दक्षिण एशिया पर नियंत्रण उनका मुख्य एजेंडा बन जायेगा। पाकिस्तानी जिहादी आत्मघाती दस्तों के लिये भारत पर आत्मघाती हमला एक बेहद आकर्षक लक्ष्य होगा। जिहादियों के लिये यह जन्नत का सीधा और सबसे सस्ता टिकट बन जायेगा।

अफगानिस्तान तथा पाकिस्तान के ये जिहादी संगठन, भारत और पाकिस्तान दोनों सेनाओं के लिए सबसे बड़ा खतरा हैं। साझा खतरे का सामना करने के लिये साझा सुरक्षा व्यवस्था भी जरूरी है। भारत और पाकिस्तान के बीच शायद सबसे अधिक दूरी उनकी सेनाओं के बीच है। हमे इस दूरी को कम करने का प्रयत्न करना होगा। वास्तव में पाकिस्तानी सेना ने पहले भी इस प्रकार के संकेत दिये है कि वे सीधे संपर्क को तरजीह देंगे। परंतु भारत में विदेशनीति पर भारतीय सेना का प्रभाव न के बराबर है और भारतीय विदेश मंत्रालय और राजनीतिज्ञ सीधे पाकिस्तानी सेना से संबंध बनाने के अभ्यस्त नही हैं। पाकिस्तान से हमारी सारी बातचीत उनके विदेश विभाग के द्वारा ही होती है, भले ही वह पूरी तरह प्रभावहीन क्यो न हो।

संयुक्त राष्ट्र संघ के अधीन जिहादी संगठनों के खिलाफ भारतीय और पाकिस्तानी सेना का संयुक्त अभियान शायद अफगानिस्तान और फिर दक्षिण एशिया को स्थिर करने में सबसे प्रभावकारी कदम सिद्ध हो। इनके लिये जरूरी है कि पाकिस्तानी सेना के साथ सीधे संपर्क बनाया जाये और भारत पाक सेनाओं के बीच दूरी कम की जाये। इसके लिये हमे अमेरिकी कूटनीतिक व्यवहार की ओर देखना चाहिये। हम पायेंगे कि पाकिस्तान में विचार-विमर्श के लिये ज्यादातर अमेरिकी जनरल भेजे जाते हैं, विदेश विभाग के अधिकारी नही। पाकिस्तानी सेना को हमे उनकी शंकाओं से जो ज्यादातर बलोचिस्तान एवं नादर्न एलाऐंस के साथ कथित संबंधो को लेकर हैं, आश्वस्त करना होगा।

दक्षिण एशिया और शायद पूरे विश्व में शांति के लिये यह सबसे बड़ा कदम होगा।

कान्यकुब्ज वाणी आभा मंडल

संरक्षक : न्यायमूर्ति पं० डी.के. त्रिवेदी — अनुदान रु० १०००० मात्र

वाणीपुत्रः

१. डा० यू.डी. शुक्ल — अनुदान रु. ५००० मात्र
२. डा० वी.के. मिश्रा आई सर्जन

विशिष्ट सदस्यः श्री सूर्य प्रकाश बाजपेई — अुनदान रु० २००० मात्र
श्री उपेन्द्र मिश्र

आजीवन सदस्य

श्री जितेन्द्र कुमार त्रिपाठी — अनुदान रु० १००० मात्र
श्री भारतेन्दु त्रिवेदी, सीतापुर
श्री रमा रमण त्रिवेदी, सीतापुर
श्री के.के. त्रिवेदी
श्री आर.सी. त्रिपाठी
श्री नवीन कुमार शुक्ल
श्रीमती मीनू द्विवेदी, उन्नाव
डा० आर.के. त्रिपाठी
श्री विजय शंकर शुक्ल
इं० बसंत राम दीक्षित
श्री सुधीर कुमार पांडे
श्रीमती मनोरमा तिवारी
कु० प्रेम प्रकाशिनी मिश्रा
श्री अनिल कुमार त्रिपाठी सीतापुर
श्री यतीन्द्र कुमार दीक्षित नई दिल्ली
श्री राम चन्द्र अवस्थी ट्राम्बे मुम्बई
ब्रिगेडियर शीतान्शु मिश्र
श्री कृपा शंकर दीक्षित
डा० अनुराग तिवारी, कानपुर
श्री राजेन्द्र कुमार शुक्ल, इलाहाबाद

कान्यकुब्ज कार्यकारिणी

अध्यक्ष

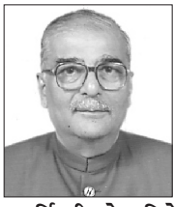

न्यायमूर्ति डी०के० त्रिवेदी

उपाध्यक्ष

पी०एन० मिश्रा
एडवोकेट

उपाध्यक्ष

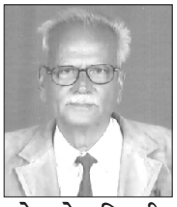

जे० के० त्रिपाठी
संस्कृत मातृ भाषी

महासचिव

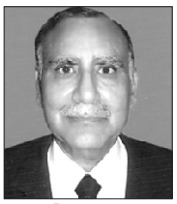

उपेन्द्र मिश्र
एडवोकेट

सचिव महिला प्रकोष्ठ

कु० प्रेम प्रकाशिनी मिश्रा
एडवोकेट

कोषाध्यक्ष

ए० के० त्रिपाठी
एडवोकेट

उप मंत्री

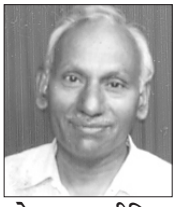

के० एस० दीक्षित
आडीटर

सदस्य

जी० एस० मिश्र
स्थायी अधिवक्ता

सदस्य
आर० पी० बाजपेयी
एडवोकेट

सदस्य
हरेन्द्र कुमार मिश्रा
उप लेखाधिकारी

सम्पादक मण्डल

सम्पादक

डा० डी० एस० शुक्ला
चिकित्सक, सर्जन

सह-सम्पादक

एस० एन० दीक्षित
इंजी० लेसा

सह-सम्पादक

डा० अनुराग दीक्षित
अपोलो अस्पताल, लखनऊ

सवाईकल कैंसर

डॉ. अनामिका शुक्ला ''कान्यकुब्ज विदुषी''
स्त्री रोग विशेषज्ञ, लखनऊ
मो. 9415020928

सवाईकल कैंसर या गर्भाशय मुख का कैंसर विश्व का स्त्रियों में तीसरा सबसे ज्यादा होने वाला और जननांगों में सबसे ज्यादा पाया जाने वाला कैंसर है।

शारीरिक कारण (Risk factor) - यौन सम्बंध (sexual intercourse) - इसका प्रमुख कारण है :- कम उम्र में शादी और सम्भोग।

निम्न आय वर्ग (low socio-economic group):- निम्न आय वर्ग में कुपोषण और साफ सफाई की कमी के कारण जननांगों में बारम्बार संक्रमण होना। यह महिलायें शिक्षा के अभाव व संसाधन कम होने के कारण पैप स्मीयर जाँच कराने में असमर्थ हैं।

शरीर की प्रतिरोधक क्षमता का कम होना :- धूम्रपान एड्स तथा अन्य यौन जनित रोगों का होना। कुछ संक्रमण जैसे हर्पीज़ आदि ७० प्रतिशत इस कैंसर के लिए जिम्मेदार समझा जाते है। यह वाइरस यौन सम्बंध द्वारा फैलता और शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को कम करता है।

शरीर में इसका प्राकृतिक विकास और प्रभाव

यह शरीर में धीरे-धीरे विकसित होता है। सबसे पहले सर्विक्स के इपीथीलियम में परिवर्तन होता जो कि कैंसर के पहले की अवस्था होती होती और इसे पैप स्मियर द्वारा बहुत आसानी से डायगनोज़ किया जा सकता है। और इस अवस्था में शत-प्रतिशत ठीक हो सकता है।

लक्षण या Symptoms :- योनि से रक्त स्राव इसका सबसे प्रमुख लक्षण है। यदि सम्भोग के पश्चात रक्त स्राव हो उस अवस्था में महिला को कैंसर की जाँच करानी चाहिये। बीमारी अधिक बढ़ जाने पर कमर दर्द बोन फ्रैक्चर थकावट योनि से अत्यधिक रक्त स्राव। और कैंसर बहुत बढ़ जाने पर कभी-कभी योनि से मल और मूत्र निकलने लगता है। इसके अलावा पेट दर्द भूख का न लगना वजन का कम होना तथा पैरों में सूजन आ जाना।

संकेत (Symptoms) ऐसे मरीज़ का यदि सर्जन परीक्षण करता है तो उसे निम्न लक्षण मिलेंगे।

उंगली से परीक्षण करने पर ट्यूमर से रक्त बहने लगता है। गर्भाशयमुख या सर्विक्स कड़ी महसूस होती है उँगली ठेलने पर वह इधर-उधर गति नहीं कर पाती। पैथालोजी की दृष्टि से यह निम्न प्रकार का पाया जाता है :-

Squamous cell carcinoma :- यह सबसे ज्यादा पाया जाने वाला

Adeno-carcinoma :- इस प्रकार का कैंसर उन महिलाओं में पाया जाता है जो गर्भ निरोधक पिल्स आठ वर्ष या उससे ज्यादा समय तक लिया हो या गर्भपात के लिये डी ई एस नामक दवा का ज्यादा सेवन किया है।

शरीर में कैंसर कैसे फैलता है :-

Direct spread to :- stroma, uterus, Vagina और uterus के पास का tissue-parametrium में सीधे रूप में फैलता है।

Lymphatic spread :-

By Blood :-

Direct spread in abdomen

जाँच एक्स रे सीने का तथा गुर्दे का, हड्डियों का स्कैन, बायोप्सी, हिस्ट्रोस्कोपी काल्पोस्कोपी कैट स्कैन एम. आर. आई.

इलाज़ इस तथ्य पर निर्भर करता है कि कैंसर की स्टेज क्या है। प्रारम्भिक अवस्था में इसका इलाज सम्भव है परन्तु देरी होने पर यह लाइलाज हो जाता है तब केवल ''औषधिं गंगोदकम् वैद्यं च जनार्दनम् '' (गंगा जल ही औषधि तथा भगवान विष्णु ही एक मात्र वैद्य रह जाते है)

Stages of cancer cervics :-

Stage 1 : कैंसर सर्विक्स तक ही सीमित रहता है।

Stage 2 : कैंसर सर्विक्स के बाहर के टिशू पैरामेट्रियम तक सीमित

Stage 3 : कैंसर योनि और पेल्विस तक पहुँच जाता है।

Stage 4 : कैंसर पेल्विस से बाहर निकल जाता है। आस पास के अंग जैसे मूत्राशय रेक्टम या सुदूर अंगो तक व्याप्त हो जाता है।

इलाज स्टेज १ और २ सर्जरी और रेडियो थेरिपी। ६२ प्रतिशत मरीज ५ वर्ष तक जीवित रहते हैं।

स्टेज ३ में पेल्विस के सभी अंग काट कर निकाल दिये जाते हैं।

स्टेज ४ लाइलाज होती है और केवल पैलियेटिव इलाज ही शेष रह जाता है।

रोग से बचाव

इस घातक रोग से कुछ सावधानियों द्वारा बचा जा सकता है। इससे बचाव के लिये ''टीका या वैक्सीन'' का निर्माण हो चुका है। यू एस एफ डी ए इस वैक्सीन को स्वीकृति दे चुका है। यह वैक्सीन ९ वर्ष से २६ वर्ष की महिलाओं को दिया जाता है और इससे ९२ से ९८ प्रतिशत तक सवाईकल कैंसर से बचाव प्रदान करती हैं।

Prevention is better than cure

सफलता एक आदत

जीवन सफलता और असफलताओं का मिश्रण होता है। दुनिया में ऐसा कोई नहीं जो हमेशा सफल या असफल ही रहा हो। सफलता और असफलता का अनुपात इस पर भी निर्भर करता है कि कार्य कितनी लगन और तैयारी से किया गया और कार्य करने में कितनी निष्ठा रही। यह भी देखा गया है कि कुछ लोगों में सफल होना एक आदत होती है। वह जो भी कार्य करते हैं। उसमें प्रायः सफल ही रहते हैं। इसके पीछे उनका आत्म विश्वास और सकारात्मक सोच का बहुत बड़ा हाथ होता है। ऐसा भी नही है कि यह लोग असफल होते ही नहीं। परन्तु यह अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति के द्वारा असफलताओं को स्मृति में दबा कर उसे आने वाली सफलताओं के लिये खाद बना लेते हैं।

–सम्पादक

मंच पर पारितोषिक पाने वाली छात्रायें

१. कु० नीतू शुक्ल पुत्री श्री उमेशचन्द्र शुक्ल, कक्षा-VIII,
बी.एस.एन.वी. गर्ल्स इंटर कालेज, चारबाग लखनऊ
स्व० श्रीमती आशा त्रिवेदी पारितोषिक I(a) रु० ५००/-
प्रदत्त स्व. न्यायमूर्ति पं० जयशंकर त्रिवेदी

२. कु. दिपाली मिश्रा, कक्षा IX
बी.एस.एन.वी. गर्ल्स इंटर कालेज
स्व० श्रीमती रानी सुभद्रा कुँवर पारितोषिक रु० ५००/-
प्रदत्त स्व० राजा विजय कुमार त्रिपाठी ऑफ सिसेन्डी

३. कु० आरती तिवारी, कक्षा X,
बी.एस.एन.वी. गर्ल्स इंटर कालेज
स्व. श्रीमती कादम्बरी देवी मिश्रा पारितोषिक रु० ५००/-
प्रदत्त सुश्री किशोरी बाजपेई

४. कु० माधवी मिश्रा, कक्षा XI,
बी.एस.एन.वी. गर्ल्स इंटर कालेज
स्व० श्रीमती डा० शकुन्तला मिश्रा पारितोषिक रु० ५००/-
प्रदत्त माननीय श्री सतीश चन्द्र मिश्र, सदस्य राज्य सभा

५. कु० शिवांगी दीक्षित, कक्षा XII,
बी.एस.एन.वी. गर्ल्स इंटर कालेज
स्व० रानी माया देवी त्रिपाठी पारितोषिक रु० ५००/-
प्रदत्त स्व० राजा विजय कुमार त्रिपाठी ऑफ सिसेन्डी

६. कु० मीनाक्षी पाण्डेय, कक्षा XI,
कस्तूरबा बालिका विद्यालय इंटर कालेज
स्व० श्रीमती विभा बाजपेई परितोषिक II रु० ५००/-
प्रदत्त श्री ज्ञान बाजपेई

७. कु० शैफाली मिश्रा, कक्षा XI,
कस्तूरबा बालिका विद्यालय इंटर कालेज
स्व० श्रीमती विभा बाजपेई पारितोषिक I — रु० ५००/-
प्रदत्त स्व० न्यायमूर्ति पं० जयशंकर त्रिवेदी (अ०प्रा०)

८. कु० अंकिता पाण्डेय, कक्षा XII,
कस्तूरबा बालिका विद्यालय इंटर कालेज
स्व० पं० जयशंकर मिश्र पारितोषिक — रु० ५००/-
प्रदत्त सुश्री प्रेम प्रकाशिनी मिश्रा

०९. कु० दिव्या बाजपेई, कक्षा बी०ए० (प्रथम वर्ष),
अर्जुनगंज वि०मं०डि०का०
स्व० श्रीमती रामा देवी पारितोषिक — रु० १०००/-
प्रदत्त श्री हरेन्द्र कुमार मिश्र

१०. कु० अर्पिता शुक्ला, कक्षा II, विष्णुनगर
शिक्षा निकेतन कन्या इंटर कालेज
स्व. श्री जगदीश प्रसाद 'शिक्षक' पारितोषिक — रु० ५००/-
प्रदत्त श्री अरूण द्विवेदी

११. कु० रोहिणी दीक्षित, कक्षा सस, विष्णुनगर शि०नि०क०इं०का०
स्व० श्री जगदीश प्रसाद 'शिक्षण' पारितोषिक — रु० ५००/-

१२. कु० दीपिका पाण्डेय, कक्षा XI,
विष्णु नगर शि०नि०क०इं०का०
स्व० श्रीमती आशा त्रिवेदी पारितोषिक II(a) — रु० ५५०/-
प्रदत्त स्व० न्यायमूर्ति पं० जयशंकर त्रिवेदी (अ०प्रा०)

साइकिल प्राप्त करने वाली छात्रायें

कु० पूजा बाजपेयी	अर्जुनगंज, लखनऊ
कु० दिव्या पांडे	पराग गोगो के पास, महानगर, लखनऊ
कु० रुचि मिश्रा	ग्राम-रेहुआ मंसूर, बहराइच
कु० विजय लक्ष्मी शुक्ला	लखनऊ

MISRA'S MATHS CLASSES

FOR CLASS IX,X,XI,XII & I.T.I, AIEEE

Business Maths } B.Com &
Financial Maths } B.B.A
Business Statistics }

By

Rajan Misra (M.Sc.,B.Ed)

&

Sachin Misra (M.C.A,M.B.A)

Computer classes also available for class-ix, x, xi, xii

AT
C-402, 421-IInd Floor, Sahara Plaza
Patrakarpuram, Gomti Nagar, Lucknow-226010
Mobile : 9415920439, 9918401000

Adbhut Misra
B-1/7, Vinai Khand, Gomti Nagar

। कुल गान ।

कान्यकुब्ज वाणी के निमित्तपर हित में निज का हित मानो।
अपने स्वरूप को पहचानो।।
काम्पल्य क्षेत्र के तपोधनी, पूर्वज समाज के उन्नायक।
हम कान्यकुब्ज ब्राह्मण कुल के, तप, शील, कर्म के संवाहक।
प्राणोपम कुल मर्यादा का, कन्याओं ने सम्मान किया,
श्रेयस्कर, शिव, संकल्प सदा, बनते हैं कर्मपूत नायक।
संयमित आचरण में सबका, हित है, यश है कुल का, जानो।
अपने स्वरूप को पहचानो।।

भौतिकता साधन, साध्य नहीं, इस ज्ञान तत्व से हम परिचित।
हम ब्रह्मदत्त, चैतन्य अंश, परमार्थ मर्म से आनन्दित।
हममें दयालु दाता की छवि, कर्तव्य सजग रखती हमको,
जग के मिथ्याा सम्मोहन से, वह होने देती नहीं भ्रमित।
क्या खो देंगे हो कर्म भ्रष्ट? उस क्षति महान को अनुमानो।
अपने स्वरूप को पहचानो।।

सत्कर्मों का पथ है पुनीत, पर उसमें अनगिन बाधायें।
सत्कर्मी संयम का प्रतीक, उसकी निर्बंधित सीमायें।
अपने कर्मों के हम साक्षी, ऋषिमन पूर्वज के यशभागी,
है कर्ममूल में यज्ञभाव, ऐसी समृद्धि हैं आशायें।
कुलशील धर्म से अनुप्राणित, कर्तव्य पंथ ही संधानो।
अपने स्वरूप को पहचानो।।

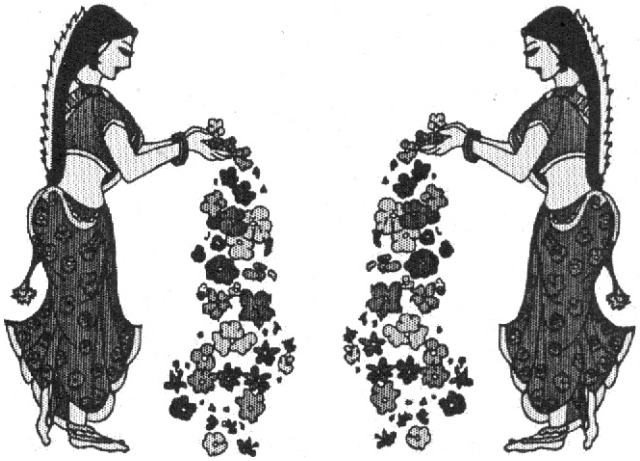

श्रद्धान्जलि

इनको न भूल पायेंगे

स्व० श्रीमती प्रेमिला मिश्र - नानी, श्री गौरव शुक्ला

स्व० आर० के० मिश्रा (मान भाई) - पिता श्री शीतांशु मिश्र

स्व० जी० पी० मिश्रा - पति श्रीमती शैल मिश्रा

श्री गंगा प्रसाद मिश्र

(संक्षिप्त जीवन परिचय)

प्राचीन भारतीय इतिहास के विद्वान एवं कुशल प्रशासक श्री गंगा प्रसाद मिश्र का जन्म उन्नाव जिले के ग्राम मगरायर के एक सुशिक्षित कुलीन परिवार में १६ मार्च, १९५२ को हुआ था। वह बचपन से ही अति विनम्र प्रतिभाशीली एवं कुशाग्र बुद्धि के थे। प्रारम्भिक शिक्षा गाँव में ही प्राप्त करने के पश्चात उन्होंने १९६८ में आर.एन.इण्टर कालेज, रुझई, उन्नाव से हाईस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण की।

राजकीय जुबली इण्टर कालेज, लखनऊ से इण्टरमीडिएट के परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् उन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया। यहाँ रहकर उन्होंने बी०ए०, एम०ए०, शास्त्री, आचार्य एवं एल०एल०बी० की परीक्षायें उत्तीर्ण की। उन्होंने प्रत्येक परीक्षा में प्रथम श्रेणी प्राप्त की तथा सदैव योग्यता छात्रवृत्ति पाते रहे। सन् १९७४ में प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व विभाग में एम०ए० द्वितीय वर्ष की परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त कर स्वर्ण-पदक के अधिकारी बने। संस्कृत भाषा में उनकी विशेष रुचि थी।

वर्ष १९७६ में उनका चयन पी०सी०एस० के लिए हुआ तथा डिप्टी कलेक्टर के रूप में उनकी नियुक्ति सर्वप्रथम बहराइच जिले में हुई। तदुपरान्त फैजाबाद में नगर मजिस्ट्रट, अपर आयुक्त प्रशासन आदि पदों को सुशोभित किया। १९८९ से अधिकांश समय वह लखनऊ में ही कार्यरत रहे। अपर आयुक्त लखनऊ मण्डल, संयुक्त निदेशक, उद्यान विभाग तथा उसके पश्चात् लखनऊ सचिवालय में विभिन्न विभागों के संयुक्त सचिव एवं विशेष सचिव के रूप में कार्य किया।

वर्ष २००४ में उनकी प्रोन्नति आई०ए०एस० कैडर में हुई। वर्ष २००७ में श्री मिश्र को अतिरिक्त आयुक्त वाणिज्य कर, उ०प्र० शासन नियुक्त किया गया।

श्री गंगा प्रसाद मिश्र एक अनुभवी विनम्र एवं कर्त्तव्यनिष्ठ अधिकारी थे। अपने सहयोगियों, अधीनस्थों एवं सम्पर्क में आने वाले सभी व्यक्तियों के साथ उनका व्यवहार सदैव मधुर रहा। जीवनभर उनका प्रशासकीय कार्य 'उत्कृष्ट' रहा तथा सभी के द्वारा सराहा गया।

काल के क्रूर हाथों ने २८ फरवरी, २००८ को उन्हें हमसे छीन लिया और वह बह्मलीन हो गये।

कहानी दिये की और तूफान की

श्रीमती प्रेमिला मिश्रा ''वकीलिन''
जन्म 1919, मृत्यु 26 मार्च 2006

वह इतनी गोरी थी कि बचपन में उन्हें बर्फो कहते थे। फिर नाम पड़ा तारा जो कि शादी के बाद पति द्वारा प्रेमिला में कर दिया गया। इनके पति बहुत प्रतिभाशाली मेधावी छात्र, कुशल अधिवक्ता एवं सहृदय ज़मीदार थे। १९५३ में पति की टायफायड से मृत्यु हो गई। प्रेमिला पर सारी ज़मीदारी के अलावा तीन छोटी बच्चियों की देखभाल का दायित्व आ पड़ा। इस आघात से वह कई वर्षो तक विक्षिप्त सी रहीं। परन्तु सबसे छोटी बेटी की लगभग प्राणान्तक बीमारी से वह चेतन हुई और जिम्मेदारी उठाना शुरू किया। उस ज़माने में ज़मीदार घराने की महिलायें केवल घर की चहारदिवारी के अन्दर पर्दे में ही रहती थी। परन्तु इनको मज़बूरी में बाहर निकलना पड़ा क्योंकि ससुराल में कोई और था ही नहीं। बच्चियों की देखभाल खेती के साथ ही प्रापर्टी के मुकदमें झेलने पड़े। परन्तु दृढ़ चट्टान की भांति इन्होंने सबका मुकाबला किया। बड़ी बेटी को उन्नाव के रिश्तेदार के यहाँ रख कर शिक्षा दिलाई। बड़े दामाद बहुत कर्मशील और सज्जन थे। उनसे बड़ा आसरा मिला। बड़े वकील की पत्नी होने से तथा तमाम मुकदमें झेलने के कारण इनकी कानून की समझ हो जाने से उन्हें वकीलिन के नाम से जाना जाने लगा।

लड़कियों को ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षा की कठिनाइयों को उन्होंने स्वयं भोगा था। अतः जीवन भर उन्होंने लड़कियों की शिक्षा और ग्रामीण क्षेत्र के विकास हेतु कार्य किया। इनके द्वारा किये गये कार्यो का संक्षिप्त विवरण दिया जा रहा है।

चालीस वर्ष तक ग्राम सभा की निर्विरोध प्रधान रहीं। प्रधान के रूप में इन्होंने अपनी ग्राम सभा का समुचित विकास किया। शिक्षा के क्षेत्र में इनका विशेष योगदान रहा ग्राम सभाा में प्राथमिक कन्या विद्यालय स्वीकृत करा कर निर्माण कराया।

प्राथमिक कन्या पाठशाला फतेहपुर चौरासी उन्नाव के निर्माण हेतु निजी धन से दान। इन्टर कालेज फतेहपुर चौरासी की एक कक्षा व एक एसेम्बली हाल के निर्माण हेतु दान।

गाँव के राजकीय उच्चतर माध्यमिक बालिका स्कूल के पास अपना भवन नहीं होने से छात्रायें कभी पेड़ के नीचे या किसी के दरवाज़े पढ़ती थीं। इसके हेतु इन्होंने अपना आवासीय भवन दान किया व इसके पुनर्निमाण के लिये एक लाख रु० भी दिया। उसी वर्ष अपने प्रयासों से उक्त स्कूल को इंटर कालेज में उच्चीकृत भी करा दिया। कक्षाओं के निर्माण के लिए इन्होंने अपने प्रयासों से विद्यायक निधि से ५ लाख रु० उपबन्ध कराया। सरकार ने इनकी भावनाओं को देख उक्त विद्यालय का नाम इनके पति के नाम पर ''श्रीराम मिश्र राजकीय बालिका इन्टर कालेज फतेहपुर चौरासी उन्नाव कर दिया। अब इस विद्यालय में ६०० से ज्यादा छात्रायें पढ़ रही हैं।''

इस प्रकार श्री राम मिश्रा राजकीय बालिकाा इन्टर कालेज फतेहपुर चौरासी उन्नाव जब तक रहेगा तब तक श्रीमती मिश्रा का वंश याद किया जायेगा।

परिवर्तिनि संसारे म्रियते को वा न जायते।
संजातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम्।।

इस परिवर्तन शील संसार में लोग पैदा होते हैं और मरते हैं। बिरले ही होते हैं जिनके जन्म से वह वंश भी उन्नति या यश प्राप्त करता है।

प्रत्येक शुभ कार्य में विघ्न आते ही हैं पर यह जीवन भर इन विघ्नों के तूफानों से उस दिये की भांति संघर्ष करती रहीं जो रात भर ज्ञान ज्योति जलाये रहा पर बाल रवि के आने पर संतुष्ट होकर बुझ जाता है क्योंकि आयु रूपी तेल भी शेष न था।

यही मेरी मम्मा नानी की ''दिये और तूफान की छोटी सी कहानी है। हम सभी उन्हे नमन करते हैं।''

वैभव शुक्ल
अहमदाबाद गुजरात

युवावस्था का चित्र

श्री राजेन्द्र कुमार मिश्र (मान भाई)
(१९२८-२०११)

सामान्यतः यदि एक पुत्र की दृष्टि से देखा जाये तो पिता व पुत्र का जीवन पर्यंत का सम्बन्ध मोटे तौर पर तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है, प्रथम पुत्र की बाल्यावस्था, जब पिता सर्व शक्तिमान, संसार का महानतम व्यक्तित्व होता है, पुत्र स्वयं को पिता सदृश्य देखना चाहता है, दूसरा चरण वह है जब पुत्र पिता की हर बात को तानाशाही एवं स्वयं पर व्यर्थ का अंकुश समझता है, तृतीय चरण वह है जब पिता काफी हद तक पुत्र पर निर्भर हो जाता है और कई अर्थों में बाल्यवत ही हो जाता है, परन्तु पिता के स्वर्ग परायण उपरांत, यह तीनों की चरण आपस में घुलमिल जाते हैं और स्मृतियों के झरोखों से अलग-अलग हिस्से एक साथ ही दिखते हैं,

मेरे पूज्य पिताश्री, जिन्हें न सिर्फ मैं अपितु मेरी पीढ़ी के कई लोग 'डैडी' कहते थे, राय बरेली जिले में' ''मान भाई'' के नाम से प्रख्यात थे, इलाहाबाद विश्वविद्यालय में उनके समकक्षी उन्हें 'महिम' कह कर बुलाते थे और उनकी साहित्यिक रचनाएँ भी इसी उपनाम से प्रकाशित हुई हैं, उनका वास्तविक नाम राजेन्द्र कुमार मिश्र था। उनके विभिन्न नामों की तरह उनका व्यक्तित्व भी बहुआयामी था, इतिहासकार, वकील, राजनीतिज्ञ, समाजसेवी एवं किसान उनके अनेक पहलुओं में से कुछ एक हैं। उनकी प्रखर मेधा, कार्यशक्ति की क्षमता, व्यवहारिक कुशलता और ईमानदारी हर क्षेत्र में समान रूप से प्रतिलक्षित होती है।

२१ अक्टूबर १९२८ को उनका जन्म रायबरेली जिले के बेहटा कलां ग्राम में हुआ था। १२ वर्ष की अल्प आयु में ही पिता का स्वर्गवास हो जाने के तदुपरांत उनका पालन सबसे बड़े भ्राता पंड़ित रमेश कुमार जी ने किया, जिन्हें अपने सभी भाइयों से सदैव वही सम्मान भी मिला जो पिता को मिलता है। मेधावी, परिश्रमी एवं तीक्ष्ण बुद्धि के धनी, उन्होंने इलाहाबाद विवि. से M.A, LL.B और राजनीति शास्त्र की उपाधियाँ ग्रहण की और स्वर्ण पदक भी अर्जित किया। १९७२ में बाराबंकी के नामी वकील पंड़ित सीताकांत शुक्ल की ज्येष्ठ पुत्री शांता से उनका विवाह हुआ। रायबरेली में उन्होंने अपनी वकालत शुरू की।

राजनीति से उनका घनिष्ठ लगाव रहा और भारतीय जनसंघ एवं जनता दल से वे जुड़े रहे। श्रीमती इंदिरा गाँधी के विरुद्ध राजनारायण के प्रसिद्ध मुकदमें में उन्होंने श्री शान्ति भूषण का सहयोग किया और फलस्वरूप आपातकाल में जेल यात्रा भी की। १९७७ के चुनाव में वे श्री राजनारायण के राजनैतिक एजेंट भी रहे। भारतीय राजनीति के कई बड़े-बड़े नामों से जुड़े रहने के साथ उन्होंने सदैव स्वच्छ राजनीति की राह पकड़ी जिसका उद्देश्य केवल सामान्यजन की सहायता करना था नाकि उसका स्वयं लाभ उठाना।

१९८० के पश्चात वे शनैः-शनैः सक्रिय राजनीति से दूर होते गए और उनका झुकाव साहित्य की ओर हुआ। यहाँ भी उनकी लगभग सभी रचनाएँ राजनीति से ही सम्बद्ध थीं चाहे वह 'महर्षि वाल्मीकीय राजदर्शन' हो, या 'गीताा का राजदर्शन', अथवा 'भारतीय राजनीति में धर्म एव सेकुलरवाद' हो या फिर उनकी काव्य रचना 'राष्ट्रबोध' हो। उनकी एक अप्रकाशित रचना अंग्रेजी भाषा में भी है जो समकालीन राजनीति पर ही है।

२००९ में उन्हें चार दिनों के अंतराल में मस्तिष्क के तीन ऑपरेशन से लड़ना पड़ा परन्तु उनकी तीव्र इच्छा शक्ति ने उन्हें पूर्ण स्वस्थ कर दिया, दुर्भाग्यवश, १३ दिसंबर २०११ को उन्हें 'ब्रोंकिअल न्युमेनिया' के लिए कमांड अस्पताल लखनऊ में भर्ती किया गया पर इस बार वे जीवन की लड़ाई न जीत सके और १४ तारीख की प्रातः स्वर्गारोहण कर गए। सब कुछ इतना अचानक हो गया की अभी तक यह स्वीकार करना मुश्किल हो रहा है की वे अब हमारे बीच में नहीं हैं। डैडी के आर्शीवादों की झड़ी जो हम पर बरसती थी, अब हम उससे वंचित रहेंगे। मैं समझता हूँ मेरी माताजी जो लगभग दस वर्ष पूर्व ही प्रस्थान कर गई थीं, अब उनसे पुनर्मिलन करके प्रसन्न हो रही होंगी।

हम सभी जिन्हें उनका स्नेह प्राप्त हुआ आज उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं

शीतांशू मिश्र
रश्मि मिश्राा (पुत्रवधू)

Akhil Bhartiya Sri Kanyakubja Pratinidhi Sabha, Lucknow

Form for life membership of Kanyakubja Sabha/ Kanyakunj Vaani magazine

1. **Name of Member : .....**
2. **Age : .....**
3. **Gotra : .....**
4. **Father's/Husband's Name : .....**
5. **Address : .....**

   .....
6. **Landline/Mobile No.: .....**
7. **Email : .....**
8. **Name of spouse / Father's Name : .....**
9. **Education : .....**
10. **Occupation (Post / Designation):**

	Unmarried Children	Name	Age	Education	Job
a)	.....				
b)	.....				
c)	.....				

11. **Any other information :**

I want to become life member of **Akhil Bhartiya Sri Kanyakubja Pratinidhi Sabha, Lucknow/Kanyakubja Vaani** and willing to pay Rs. .....in Cash/Cheque No. ..... Name of Bank ..... favouring *"Akhil Bhartiya Sri Kanyakubja Pratinidhi Sabha, Lucknow" payable at Lucknow.*

12. **Name of person introducing : .....**

Date : (Signature)

.....✂.....✂.....✂.....

Reciept

Received with thanks Rs. ..... in Cash / Cheque No. ..... Name of Bank ..... from ..... who wants to become life member of **Akhil Bhartiya Sri Kanyakubja Pratinidhi Sabha, Lucknow / Kanyakubja Vaani.**

(Signature)

Note :
1. Contribution for life member of **Kanyakubja Sabha** is **Rs. 300/-**
2. Contribution for life membership of **Kanaykubja Vaan**i is **Rs. 1000/-**
3. Contribution for one issue of **Kanyakubja Vaani** is **Rs. 25/- + postage charges.**